वर्ष 23, अंक 230, पृष्ठ 08, मूल्यः 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 14 सितम्बर 2024 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

गिरफ्तारी की वैधता और रिहाई के आवेदन पर विचार किया है

मुकदमे के दौरान लंबे समय तक आरोपी को जेल में रखने को जायज नहीं ठहरा सकते

नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जमानत मिलने बाद पूरा परिवार और आम आदमी पार्टी (AAP) उनके जेल से बाहर आने का इंतेजार कर रहे हैं. जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जल भुईयां ने केजरीवाल को जमानत देते हुए अपने-अपने फैसले सुनाए. जस्टिस उज्जल भुईयां ने सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टिगेशन (CBI) की गिरफ्तारी की टाइमिंग और आवश्यकता पर सवाल उठाए हैं. वहीं, जस्टिस सूर्यकांत को सीबीआई की गिरफ्तारी में अवैधता नहीं लगी.

अरविंद केजरीवाल के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआई जांच कर रही है. ईडी के मामले में उन्हें 12 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत मिल गई थी, लेकिन सीबीआई मामले में हिरासत के चलते वह जेल से बाहर नहीं आ सके. उन्होंने सीबीआई अरेस्ट के खिलाफ ही सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दी थी, जिस पर उनको रिहाई मिल गई है. 5 सितंबर को दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था.

जस्टिस सूर्यकांत ने अरविंद केजरीवाल को जमानत देते हुए अपने फैसले में कहा कि न्यायिक हिरासत में रहते हुए मजिस्ट्रेट की अनुमति से दूसरे केस में पुलिस हिरासत में लिए जाने में कोई गलती नहीं. उन्होंने कहा कि हमने गिरफ्तारी की वैधता और रिहाई के आवेदन पर विचार किया है. यह भी देखा है कि चार्जशीट दाखिल हो जाने से क्या अंतर पड़ा है.

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि केजरीवाल को सीबीआई हिरासत में लिया जाना कानूनी तौर पर गलत नहीं था. नियमित जमानत के सवाल पर हमने चर्चा की. जस्टिस सूर्यकांत ने कहा,

भाजपा के हजारों कुचक्र के बावजूद सच्चाई की जीत हुई : मनीष सिसोदिया

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से आबकारी नीति मामले से जुड़े सीबीआई मामले में जमानत मिल गई। उनके शुक्रवार को जेल से बाहर आने की खबर है। जिसके बाद वह आम लोगों से संवाद करेंगे। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर आम आदमी पार्टी नेता मनीष सिसोदिया ने खुशी जताई। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, ह्लएक बार फिर से साबित हो गया है कि अरविंद केजरीवाल जैसा सच्चा, ईमानदार, देशभक्त कर्मठ नेता इस देश में नहीं है। केजरीवाल जी को गिरफ्तार करने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने हजारों कुचक्र और साजिशें रचीं। एक कट्टर ईमानदार, जनता के लिए काम करने वाले और जनता के दर्द को समझने वाले आदमी को जेल में डाल दिया गया। लोकतंत्र के इतिहास में इससे बड़ा पाप नहीं हुआ है।

केजरीवाल को जमानत मिलने पर आप नेता खुश, आतिशी ने कहा- सत्यमेव जयते

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने आबकारी नीति मामले से जुड़े कथित घोटाले के मामले में जमानत दे दी है। उनके शुक्रवार को जेल से बाहर आने की खबर है। जिसके बाद वह आम लोगों से संवाद करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर खुशी जताते हुए आम आदमी पार्टी सांसद राघव चड्ढा ने अरविंद केजरीवाल के जेल से बाहर आने पर खुशी जताई है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म के अपने हैंडल पर लिखा, बाहर आने पर आपका स्वागत। हमने आपको मिस किया।

सत्य परेशान हो सकता है मगर पराजित नहीं! अंततः माननीय सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली के बेटे अरविंद केजरीवाल को जेल की बेड़ियों से आजाद करने का फैसला सुना दिया है। माननीय सुप्रीम कोर्ट का शुक्रिया! दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, सत्यमेव जयते.. सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं।

हथौड़ा लेकर मुस्लिम समुदाय के लोग खुद ही तोड़ने लगे मस्जिद

शिमला

शिमला और मंडी में हिंदुओं का प्रदर्शन देख पहली बार मुस्लिम समुदाय के लोगों ने एक बड़ा ऐलान किया है। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अमन शांति की बातें करनी शुरू कर दी है।

मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा हथौड़ा लेकर खुद ही मस्जिद तोड़ने की घटना की खूब चर्चा हो रही है।

शिमला की संजौली मस्जिद को लेकर चल रहे विवाद के बीच अब मंडी में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने खुद ही मस्जिद तोड़नी शुरू कर दी है। शिमला की सड़कों पर बवाल देख मंडी में रहने वाले मुस्लिम मस्जिदों के अवैध हिस्से को खुद ही तोड़ रहे हैं। आपको बता दें कि मस्जिद का ये हिस्सा लोक निर्माण विभाग की जमीन पर बनाया गया था जिसे तोड़ा जा रहा है।

भागवत के बायन ने कैसे बढ़ाया महाराष्ट्र की सियासत का पारा

नई दिल्ली

भाषण के दौरान संघ प्रमुख मोहन भागवत के इस दावे ने कि स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने शिवाजी महाराज की समाधि की खोज की थी। भागवत की इस टिप्पणी पर अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के नेताओं ने समाज सुधारक ज्योतिराव से श्रेय छीनने की साजिश का आरोप लगाया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत के एक बयान ने नया विवाद खड़ा कर दिया है। अब इस मुद्दे पर विपक्ष से लेकर एनडीए के सहयोगी तक ने प्रतिक्रिया दी है और मोहन भागवत को दुविधा में डाल दिया है। वहीं बीजेपी नेता इस मुद्दे पर टिप्पणी करने से बच रहे हैं। मिलिंद पराडकर की किताब 'तंजावुर के मराठा' का कल पुणे में मोहन भागवत ने लोकार्पण किया। लेकिन इस दौरान भागवत द्वारा शिवाजी महाराज की समाधि का श्रेय लोकमान्य तिलक को दिए जाने से नया विवाद खड़ा हो गया है। पुणे में एक भाषण के दौरान संघ प्रमुख मोहन भागवत के इस दावे ने कि स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने शिवाजी महाराज की समाधि की खोज की थी।

नाबालिग बेटी ने खोली कुंडी, प्रेमी ने दिया इंजेक्शन...

नई दिल्लीः 17 साल की शादीशुदा जिंदगी, जान से भी ज्यादा प्यार करने वाला पति और दो बच्चों के साथ भरा-पूरा परिवार। हरियाणा के रोहतक की रहने वाली मनीषा की जिंदगी में सबकुछ था। पति टीचर की नौकरी करते थे और समाज में परिवार का एक अच्छा-खासा रुतबा था। रुपयों-पैसों की भी कोई कमी नहीं थी। फिर आखिर ऐसा क्या हुआ कि मनीषा अपने ही पति के खून की प्यासी हो गई। अपने पति को मौत देने का उसने जो तरीका चुना, उसे जानकर शायद आपके पैरों तले से भी जमीन खिसक जाए। अपने प्लान में मनीषा ने अपनी बेटी को भी शामिल कर लिया।

रांची में दो लोगों को बनाया अपना शिकार

यूपी के बाद अब झारखंड पहुंचा भेड़िए का आतंक!

रांचीः झारखंड में हाथी और भालू के हमले के मामले कई बार सामने आए है, लेकिन इस बार राज्य की राजधानी रांची के ग्रामीण इलाकों में जिस जानवर के हमले की बात सामने आई है, वह डरने वाली है। दरअसल राजधानी रांची के ग्रामीण इलाके में भेड़िए ने दो लोगों को अपना शिकार बनाते हुए हमला कर दिया। इस हमले में दोनों लोग बुरी तरह इससे दोनों घायल हो गए है। घायलों में 55 वर्षीय बिंजा निवासी बैजा भुइंया और 50 वर्षीय बहुरा गंझू शामिल है।

ग्रामीणों को जंगल में जाने से रोका गया

जानकारी के अनुसार, जंगल की ओर बकरी चराने गए दोनों ग्रामीण पर भेड़िए ने हमला किया था। दोनों सूखी लकड़ियां चुन रहे थे। इसी दौरान पहले भेड़िए ने बकरी पर हमला किया। दोनों ग्रामीण देखने गए, तभी भेड़िए ने दोनों ग्रामीण पर भी हमला कर दिया। भेड़िए के हमले पर ग्रामीण शोर मचाने लगे। शोर सुनकर ग्रामीण की भीड़ जंगल की ओर भागी।

ग्रामीणों की भीड़ देख भेड़िया जंगल की ओर भाग निकला। इस घटना के बाद ग्रामीणों ने जंगल की ओर जाने से लोगों को रोक लगा दिया है। भेड़िए की एंट्री से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

वन विभाग को दी गई है सूचना

बुडमु थाना प्रभारी रितेश कुमार ने बताया कि भेड़िए के हमले की सूचना वन विभाग को दी गई है। इसके बाद वन विभाग के पदाधिकारी जंगल पर निगरानी रख रहे हैं। साथ ही ग्रामीणों से सतर्क रहने को कहा गया है।

हरियाणा चुनाव: गोपाल कांडा के भाई गोबिंद कांडा का नामांकन रद्द

हरियाणाः हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए फतेहाबाद सीट से निर्दलीय नामांकन भरने वाले गोबिंद कांडा का पर्चा रद्द हो है. गोपाल कांडा के भाई और बीजेपी नेता रहे गोबिंद कांडा ने फतेहाबाद सीट से नामांकन दाखिल किया था. अंतिम दिन पर महज 15 मिनट पहले नाटकीय अंदाज से पर्चा भरवाने वाले गोबिंद कांडा का पर्चा जांच के बाद कैंसिल कर दिया गया.

दरअसल, गोबिंद कांडा का नामांकन रद्द होने की वजह ये है कि वह खुद नॉमिनेशन फाइल करने नहीं पहुंचे, बल्कि अपनी लीगल टीम को भेजा. ऐसे में शपथ लेने के लिए खुद फिजिकल तौर पर उपस्थित नहीं होने की वजह से उनका नॉमिनेशन कैंसिल किया गया है.

बीजेपी से नहीं मिला टिकट तो निर्दलीय भरा पर्चा

बीजेपी की कैंडिडेट लिस्ट में फतेहाबाद सीट पर पहले ही उम्मीदवार के नाम का ऐलान कर दिया गया था. गोबिंद कांडा बीजेपी से टिकट की उम्मीद कर रहे थे लेकिन पार्टी ने सिटिंग विधायक दुड़ाराम पर दोबारा भरोसा जताते हुए उन्हें फिरसे टिकट दे दिया।

G7 में आप जाने नहीं देंगे, इसलिए बनाया खुद का क्लब

भारत की विदेश नीति पर जिनेवा में जयशंकर के लिए जमकर बजी तालियां

जिनेवा

जयशंकर ने कहा कि हमने ब्रिक्स का विस्तार किया है। पिछले साल दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स का विस्तार करने का निर्णय लिया गया था।

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने एक बार फिर देश के लोगों को गौरवान्वित करने का काम किया है। उन्होंने पश्चिमी देशों को एक ऐसा जवाब दिया है, जिसकी हर भारतीय आज तारीफ कर रहा है। एस जयशंकर ने स्विजरलैंड के जिनेवा में ग्लोबल सेंटर फॉर सिक्योरिटी पॉलिसी को संबोधित करते हुए एक

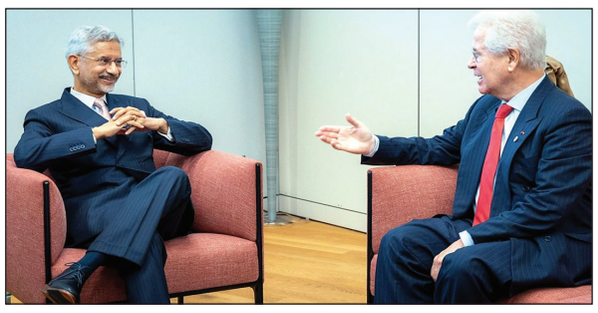

बड़ा बयान दिया है। दरअसल, जब विदेश मंत्री से पूछा गया कि ब्रिक्स क्यों है और क्या इसका विस्तार होगा? इस सवाल पर एस जयशंकर ने तीखा जवाब देते हुए कहा कि एक क्लब था, जिसे जी 7 कहा जाता था। जी7 में आप लोग किसी और देश को प्रवेश करने से रोकते थे। इसलिए हमने अपना खुद का क्लब बनाया। इसके साथ ही एस जयशंकर ने कहा कि जी 20 के रहते अगर जी 7 का अस्तित्व रह सकता है तो कोई कारण नहीं है कि ब्रिक्स का अस्तित्व न हो।

इसके साथ ही एस जयशंकर ने कहा कि हमने ब्रिक्स का विस्तार किया है। पिछले साल दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स का विस्तार करने का निर्णय लिया गया था। दक्षिण अफ्रीका इसमें शामिल हो गया, और जनवरी 2024 में पांच नए देश - ईरान, सऊदी अरब, मिस्र, यूएई और इथियोपिया - इस समूह में शामिल हुए।

सीएए-एनआरसी का विरोध करने पर .....

नीतीश कुमार ने पार्टी से निकाला : प्रशांत

पूर्णिया। बिहार विधानसभा चुनाव में अपनी जमीन तलाश रहे चुनावी राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने गुरुवार को एक सनसनीखेज खुलासा किया। पूर्णिया में एक दिवसीय दौरे के दौरान उन्होंने बताया कि नीतीश कुमार ने उन्हें पार्टी से क्यों निकाला था।

लोगों को संबोधित करते हुए प्रशांत किशोर ने कहा कि मैंने सीएए और एनआरसी का विरोध किया, इसलिए नीतीश कुमार ने मुझे जदयू से निकाल दिया। जदयू मुसलमानों के हक की बात जरूर करती है, लेकिन संसद में वक्फ कानून का

समर्थन भी करती है। आज जदयू मुसलमानों के साथ खड़ी नहीं है। वह अपनी सत्ता बचाने के लिए मुस्लिम समाज के राजनीतिक और वैचारिक विरोधी भाजपा के साथ खड़े हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता चाहती है कि बिहार में कुछ नया हो। वहीं, अपने दल के नाम को लेकर उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि जन सुराज के नाम से हमारी पार्टी बने। हालांकि, यह हमारे हाथ में नहीं है, अगर चुनाव आयोग की सहमति हो जाए, तो जन सुराज के नाम से दल बन सकता है। प्रशांत किशोर ने कहा, कई दशक से ज्यादा समय तक बिहार में राजद और जदयू का शासन रहा, लेकिन बिहार की स्थिति नहीं बदली। प्रदेश की बदहाली के लिए लालू यादव और नीतीश कुमार जिम्मेदार हैं। बिहार में अगर जनसुराज की सरकार बनती है, तो सबसे पहले मजदूरों का पलायन रोकने का काम किया जाएगा।

ज्ञानवापी केस में हिंदू पक्ष को लगा झटका,

तहखाने की छत पर होती रहेगी नमाज, कोर्ट ने मरम्मत पर लगाई रोक

वाराणसीः काशी विश्वनाथ मंदिर से सटे ज्ञानवापी (Gyanvapi)) मस्जिद को लेकर चल रहे कानूनी केस में हिंदू पक्ष को तगड़ा झटका लगा है। वाराणसी कोर्ट ने शुक्रवार को मामले की सुनवाई करते हुए व्यास तहखाने की छत पर नमाज पढ़ने वालों की रोक लगाने संबंधी याचिका को खारिज कर दिया है। मतलब कि नमाज के लिए मुस्लिम इकट्ठा होते रहेंगे। इसके साथ ही कोर्ट ने तहखाने में मरम्मत कराने की इजाजत देने से भी इनकार कर दिया है।

सिविल जज सीनियर डिवीजन हितेश अग्रवाल की कोर्ट ने ज्ञानवापी मामले में तहखाने में चल रही पूजा को यथावत रखते हुए तहखाने के कस्टोडियन डीएम वाराणसी को किसी भी प्रकार की मरम्मत का आदेश देने से इनकार कर दिया। इसके साथ ही हिंदू पक्ष की याचिका को अस्वीकार कर दिया।

ज्ञानवापी पर मदनी और ओवैसी एक सुर में बोले, 'PM मोदी पर मुसलमान यकीन नहीं करते'

इस मामले की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष की आपत्ति और मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित होने की वजह से याचिका अस्वीकार कर दी। और यथास्थिति को बरकरार रखा है।

गौरतलब है कि जब जनवरी में कोर्ट व्यास जी तहखाने में पूजा-पाठ का अधिकार मिलने के बाद एक संस्था की तरफ से एक याचिका डाली थी। इस याचिका में व्यासजी के तलगृह की छत पर मुस्लिमों के इकट्ठा होने से रोकने की मांग की गई थी।

इतने सालों बाद सफाई देना कितना उचित- मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की प्रमुख मायावती ने समाजवादी पार्टी (सपा) के मुखिया अखिलेश यादव को गठबंधन टूटने के मुद्दे पर फिर घेरा है। उन्होंने कहा अब इतने साल बाद सफाई देना कितना उचित है।

उत्तर प्रदेश की पूर्व सीएम मायावती ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कई पोस्ट किया। मायावती ने कहा, "लोकसभा चुनाव-2019 में यूपी में बीएसपी (बसपा) के 10 व एसपी के 5 सीटों पर जीत के बाद गठबंधन टूटने के बारे में मैंने सार्वजनिक तौर पर भी यही कहा कि सपा प्रमुख ने मेरे फोन का भी जवाब देना बंद कर दिया था, जिसको लेकर उनके द्वारा अब इतने साल बाद सफाई देना कितना उचित व विश्वसनीय? सोचने वाली बात।"

मायावती ने आगे कहा, "बीएसपी

सैद्धान्तिक कारणों से गठबंधन नहीं करती है और अगर बड़े उद्देश्यों को लेकर कभी गठबंधन करती है तो फिर उसके प्रति ईमानदार भी जरूर रहती है। सपा के साथ सन 1993 व 2019 में हुए गठबंधन को निभाने का भरपूर प्रयास किया गया, किंतु 'बहुजन समाज' का हित व आत्म-सम्मान सर्वोपरि है।"

उन्होंने आगे कहा, "बीएसपी जातिवादी संकीर्ण राजनीति के विरुद्ध है। अतः चुनावी स्वार्थ के लिए आपाधापी में गठबंधन करने से अलग हटकर 'बहुजन समाज' में आपसी भाईचारा बनाकर राजनीतिक शक्ति बनाने का मूवमेंट है ताकि बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर का मिशन सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त कर आत्मनिर्भर हो सके।"

बता दें कि बहुजन समाज पार्टी की ओर से अपने पदाधिकारियों और कार्यकताओं को एक बुकलेट बांटी जा रही हैं, जिसमें मायावती ने बताया है कि लोकसभा चुनाव के परिणाम के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव ने फोन उठाना बंद कर दिया था, जिसकी वजह से गठबंधन तोड़ना पड़ा।

इस पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पत्रकारों से मायावती के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि वो अपनी कमियां छिपाने के लिए आरोप लगा रही हैं। उन्होंने कहा कि जिस दिन बसपा से गठबंधन टूटा दोनों दल के लोग आजमगढ़ में सार्वजनिक मंच पर थे। मैं भी था, किसी को नहीं पता था कि गठबंधन टूट गया। मैं खुद फोन कर पूछना चाहा था कि ऐसा क्यों किया? कभी-कभी अपनी बात छुपाने के लिए कुछ बातें की जाती हैं।

गौरतलब है कि मायावती ने अखिलेश यादव से गठबंधन टूटने कारण बताया। बुकलेट में मायावती ने कहा है कि 2019 लोकसभा चुनाव में सपा को पांच सीटें मिलीं। वहीं बसपा को 10 सीटें मिलीं। उन्होंने कहा कि यही बड़ी वजह बन थी कि सपा के वरिष्ठ नेताओं ने फोन उठाना बंद कर दिया था।

मेजारोड बाजार में महिला से दिन दहाड़े हुई 50 हजार की लूट

● बाइक सवार उचक्कों ने भीड़भाड़ वाले बाजार में बेखौफ दिया घटना को अंजाम, गोल चौराहा और बैंक ड्यूटी में लगी पुलिस पर बाजार वासियों ने उठाया सवाल, दहशत में हैं व्यापारी

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजारोड चौकी पुलिस द्वारा क्षेत्र में आए दिन हो रही चोरी-छिनैती की घटनाओं पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। रोजाना बाइक सवार उच्चके किसी न किसी घटना को अंजाम दे रहे हैं और पुलिस हाथ पैर हाथ रखे बैठी हुई है।

मिली जानकारी के अनुसार मेजारोड चौकी में तैनात पुलिस कर्मी अपनी नाक के नीचे दिन दहाड़े हो रही लूट और छिनौती की घटनाओं को रोक पाने में पूरी तरह से नाकाम रही है। मेजारोड बाजार के पटेल नगर चौराहा निवासी सुनीता देवी पत्नी प्रेमचंद केसवानी के साथ शुक्रवार को तकरीबन साढ़े 11 बजे दिन हुई लूट की घटना इसका जवलंत उदाहरण है। बताया जाता है कि महिला 50 हजार रुपया नकद लेकर बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा मेजारोड में जमा करने के लिए जा रही थी। जैसे ही वह मेजारोड गोल चौराहा बाजार से सिरसा मार्ग पर बैंक से कुछ ही दूरी पर पहुंची हुई थी कि एक बाइक सवार नकाबपोश दो उच्चके पहुंचे और कुछ नशीला पदार्थ सुंघाकर रूपए से भरी पालीथिन को लेकर फरार हो गये। जब तक महिला को होश आता और वह किसी को बता पाती तब तक दोनों उचक्के भाग निकले थे। पीड़ित महिला सुनीता देवी ने बताया कि वह किसी तरह पेट काटकर इकट्ठा की गई रकम को जमा करने जा रही थी।इतना ही नहीं महिला ने यह भी बताया कि पॉलीथीन में उसका आधार कार्ड, पैन कार्ड, डाकघर की पासबुक और बैंक ऑफ बड़ौदा की पासबुक भी रही है। उल्लेखनीय है कि सरेआम बीच बाजार जहां लोगों की भारी भीड़भाड़ वाले बाजार में हुई इस घटना से बाजार में हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची चौकी पुलिस उचक्कों की तलाश में जांच पड़ताल के नाम पर खाना पूर्ति करना जरूर शुरू कर दिया है। लेकिन देखा जाए तो सवाल इस बात का है कि जिस वक्त महिला के साथ उचक्कों ने लूट की घटना को अंजाम दिया उस समय गोल चौराहे और बैंक ड्यूटी में लगे पुलिस कर्मी कहां थे ? एसीपी मेजा साहब यह बेहद जांच का विषय है। हालांकि इस संबंध में बाजार वासियों का कहना है कि मेजारोड चौकी क्षेत्र में बाइक सवार उचक्कों का एक बड़ा गिरोह है जो चौकी पुलिस के साठ गांठ से रोजाना कहीं न कहीं चोरी छिनौटी एवं लूट की घटनाओं को प्रायः अंजाम दिया देते रहते हैं और चौकी पुलिस वारदात के बाद मौके पर महज मरहम लगाने पहुंच जाती है और जांच पड़ताल के नाम पर केवल खानापूर्ति कर पुनः अपने अवैध वसूली के पुराने धंधे में लिप्त हो जाती है।

तांत्रिक ने बालिका के साथ किया दुष्कर्म मुकदमा दर्ज, आरोपी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। बीमार चल रही बालिका को फूक झाड़ कराने के लिए परिवार ने एक वृद्ध तांत्रिक को बुला कर उपचार कराने लगे। एकांत में उपचार के बहाने कथित तांत्रिक ने बालिका के साथ अश्लीलता करते हुए दुराचार किया। परिजनों को बालिका ने बताया तो परिजन धुन कर पुलिस को सौंप दिए।तथा तांत्रिक के खिलाफ दुराचार पास्को एक्ट में मुकदमा दर्ज कर हवालात में डाल दिया है।तथा बालिका को मेडिकल चेकअप के लिए भेज दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक व्यक्ति की नौ वर्ष की बेटी काफी दिनों से बीमार चल रही है। बताया गया है कि बीमारी ठीक न होने पर किसी ने तांत्रिक को बुलाकर फूंक झाड़ कराने की सलाह दी। जिसपर परिजनों ने शुक्रवार को एक तांत्रिक को बुलाया।बताया गया है कि कथित वृद्ध तांत्रिक ने कहा कि वह एकांत में झाड फूंक करके ठीक करेगा।तथा बालिका के परिजनों को कहीं सामान लेने भेज दिया। बताया गया है कि बालिका को लेकर तांत्रिक एक कमरे में इलाज करने चला गया आरोप है कि तांत्रिक ने बालिका के साथ अश्लीलता करते हुए दुराचार किया बालिका के शोर मचाने पर तांत्रिक चुप रहने को धमकी दी।।थोडी देर में जब परिजन आए तो बालिका रो रो कर कथित तांत्रिक की काले करतूतों को बताने लगी । जिसपर क्षुब्ध परिजनों ने कथित तांत्रिक को धुन कर पुलिस को सौंप दी । तथा तांत्रिक मोईनुद्दीन पुत्र मोहम्मद शाबान उर्फ कल्लू ग्राम छतरगढ़ थाना मान्धाता प्रतापगढ़ के खिलाफ बालिका के पिता ने थाने में तहरीर देकर दुराचार, पास्को एक्ट में मुकदमा दर्ज करा दिया है। पुलिस आरोपी तांत्रिक को हवालात में डाल दिया है।तथा पीड़िता को पुलिस मेडिकल चेकअप के लिए भेज दी है।

न्यूज झरोखा

गणेश भगवान की पूजा अर्चना से भक्तिमय हुआ धनूपुर बाजार

धनूपुर। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सोलहवें श्री गणपति पूजन समारोह का आयोजन गणपति कमेटी हनुमान मंदिर बनपुरवां, धनूपुर में धूमधाम से किया गया है। मिशन चंद्रयान-3 के भव्य पंडाल में विराजमान गणेश भगवान की भव्य प्रतिमा का पूजन, अर्चन, आरती भक्तों द्वारा अनवरत किया जा रहा है जिससे धनूपुर बाजार भक्तिमय हो गया है। आरती के दौरान पंडाल सुगंधित हो उठा भजन-कीर्तन से पूरा वातावरण भक्तिमय हो जाता है गणपति बप्पा मोरया के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा है। घर में पधारो गजानंद जी, मेरे घर में पधारो गीत गूंज रहा है। पंडाल को भव्य गेट और रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया गया है, जो हर किसी के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है भक्ति गीतों से वातावरण गूंज रहा है। गायक अतुल पांडेय बरना द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें गणेश भगवान, देवी गीत एवं अन्य भक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। ग्राम प्रधान बृजेश कुमार यादव द्वारा हनुमान मंदिर पर सोलर लाइट एवं इक्यावन सौ रुपए गणेश भगवान की पूजा अर्चना में सहयोग किया गया है। इस अवसर पर अध्यक्ष राहुल मोदनवाल, शिवा मोदनवाल, नीरज गुप्ता, राजन गुप्ता, विक्की केशरी, बेचूराम केशरवानी, मथुरा गुप्ता, बबलू जायसवाल रामू स्वर्णकार, प्रमोद कुमार जायसवाल, धर्मेंद्र पांडेय, जोगी जायसवाल, अनिल मौर्य सहित सैकड़ों भक्तगण मौजूद रहे।

जेनिथ मॉडल स्कूल की हर्षिता का सैनिक स्कूल में चयन

बारा। जेनिथ मॉडल स्कूल, रानीगंज (पगुवार) शंकरगढ़ की छात्रा हर्षिता सिंह का चयन सैनिक स्कूल इटावा में हुआ है। छात्रा की इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार ने खुशी जाहिर की है। प्रिंसिपल प्रियंकला सिंह ने बताया कि यह छात्रा और विद्यालय के शिक्षकों की ईमानदारी से की जा रही मेहनत का परिणाम है। इतने कम समय में हमारे शिक्षकों ने प्रयास कर शिक्षा को नया आयाम देने का प्रयास किया है। पूरा विद्यालय परिवार शिक्षा के प्रति समर्पित है। हर्षिता पैथालाजी के संचालक प्रभात सिंह की पुत्री हर्षिता के चयन पर स्थानीय लोगों ने खुशी जाहिर की है। हर्षिता की ही तरह सभी बच्चों के उन्नयन के लिए सतत प्रयास जारी है। विद्यालय के शिक्षक बीएल सिंह, वीरेंद्र सिंह, अभिषेक सिंह, सुधा सिंह, जाह्नवी, स्वाती सिंह, सीमा, दिव्या कुशवाहा, गुलाब सिंह, रितिक केसरवानी, वंदना सिंह, विजय, शिवेंद्र सिंह, रूपेश सिंह, सुब्रतो सरकार, नीतू सिंह, दिव्या आनंद, ऋचा, आशीष, माही सिद्दीकी, आस्था, अजमल आदि ने छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

पंडित विशंभर नाथ पांडेय गुरुजी के निधन पर शोक संवेदना

जंघई। वृंदावन, भेलखा गांव निवासी आचार्य एवं शिक्षक पंडित विशंभर नाथ पांडेय गुरुजी के निधन पर परिजनों एवं क्षेत्रवासियों में शोक का माहौल है। गुरुजी बहुत सीधे, सरल, मिलनसार एवं उदार व्यक्तित्व के इंसान थे? और दर्जनों गांव में बहुत सम्मानित एवं पूज्य थे। उपस्थित लोगों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए गुरुजी को श्रद्धांजलि अर्पित किया एवं दिवंगत पुण्य आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना किया। गरुण पांडेय, संदीप शुक्ला, रायसाहब पांडेय, नागेश्वर पांडेय, बबलू पांडेय, राम नयन पांडेय, रतन पांडेय, मुकेश तिवारी, बाबुल दुबे, डॉ परवेज अहमद, कोमल तिवारी, आशीष तिवारी भोगीपुर, गोला पांडेय, नीरज शुक्ला, नीरज तिवारी, रोहित सोनी, सूरज सोनी, अंशु सोनी, पंचू गुप्ता, रिंकू सिंह, घनश्याम मिश्रा, प्रमोद प्रधान अनुवां, प्रेम प्रधान, जसलोक, हरेंद्र दुबे, गणेश, नीरज गोंड, पवन गोंड, विक्रांत यादव, श्रीराम पाल, अमृत लाल गौतम, अशोक यादव, संतोष यादव, विजयी मिस्त्री आदि लोगों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए गुरुजी को श्रद्धांजलि अर्पित किया।

शैलेन्द्र ने राज्य स्तरीय विद्यालयीय खेलकूद प्रतियोगिता में जीता स्वर्ण पदक

मऊआइमा। भोलानाथ रामसुख इंटर कॉलेज के छात्र ने 68वीं राज्य स्तरीय विद्यालयीय खेलकूद प्रतियोगिता 2024-25 अयोध्या में स्वर्ण पदक जीता। जिस ने सामाजिक जीवन मऊआइमा थाना क्षेत्र के चकश्याम स्थित भोलानाथ रामसुख इंटर कॉलेज में कक्षा 10 के छात्र शैलेश कुमार पुत्र कृष्ण कुमार गहरपुर का निवासी है। छात्र शैलेन्द्र कुमार पुत्र कृष्ण कुमार निवासी गहरपुर, किरांव अब राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। अपने कॉलेज पहुंचे भोलानाथ रामसुख इंटरमीडिएट कॉलेज चकश्याम के छात्र शैलेंद्र का प्रधानाचार्य वीरेंद्र बहादुर सिंह, प्रबंधक रामसुख पटेल ने फूल माला पहनकर स्वागत किया एवं कक्ष तथा विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं ने शैलेन्द्र की उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जा, मुद्दतों से नहीं बन पा रही सड़क, आवागमन बाधित

कोरांव। प्रदेश सरकार के मुखिया भले ही ग्राम समाज की जमीनों से अवैध कब्जे खाली किए जाने के आदेश राजस्व विभाग को दिए हैं किंतु अतिचारी के आगे राजस्व,ग्राम सभाएं,सभी अधिकारी लाचार हैं। वजह भी यही साफ है कि सभी ऐसे लोग भी बढ़ चढ़ कर सरकार की जयकारी करते देखे जातें हैं जिससे अधिकारी और भूमि प्रबंधक समितियों मूक दर्शक नजर आती हैं। तहसील कोरांव का नाम शायद इस सिल सिले में ज्यादा लिया जा रहा है। ग्रामीणों की पीड़ा करीब तीस साल से मूसल सल चली आ रही है। ग्रामीणों ने बताया कि तत्कालीन ग्राम प्रधान ने चकमार्ग संख्या 563 पर उस वक्त जे आर वाई योजना से मिट्टी का कार्य कराया था। किंतु तब से आज तक आरोपी अतिचारियों ने सड़क न तो बनने दिया और न ही कब्जा छोड़ा। जिस कारण ग्राम पंचायत भी प्रयास के बावजूद असहाय दिख रही है। कई बार गांव के प्रभावित लोगों ने उक्त सड़क को निर्मित करवाने और अवैध कब्जे हटवाने का प्रार्थना पत्र दिया किंतु किसी को छूने की हिमाकत नहीं हो पा रही है। इस संबंध में ग्राम डुंडिया गजाधर पुर के विद्या सागर शुक्ला ने एसडीएम कोरांव प्रयाग राज को उक्त चकमार्ग पर हुए अतिक्रमण तथा सड़क निर्माण में आर रही किसी बाधा को किसी अधिकारी को भेज कर जांच करने और राजस्व पुलिस बल तथा भूमि प्रबंधक समिति गजाधर पर तहसील कोरांव और पुलिस थाना फोर्स थाना मांड़ा को एक टीम गठित कर के तत्काल प्रभाव से जनहितार्थ मुद्दतों से अतिक्रमित अथवा उपेक्षित चकमार्ग को खाली कराने की मांग की है। साथ ही बीडीओ मांडा से ग्राम पंचायत गजाधरपुर को मनरेगा योजना की आईडी बनवा हर गिट्टी,मिट्टी वाली रोड अथवा इंटर लाकिंग तोड़ निर्मित किए जाने की मांग की है। अन्यथा तीन सौ आबादी के लोग सड़कों पर आकर प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होंगे। जिनकी जिम्मेदारी राजस्व प्रशासन और विकास विभाग की होगी। इतना ही नहीं ग्रामवासियों ने लिखित शिकायतें की है कि कई बीघा बंजर,नवीन परती रास्तों की जमीनें सरहंग भू माफिया कब्जा किए हुए हैं।

बूंद- बूंद पानी के लिए तरस रहे ग्रामीणों ने बोरिंग टेक्निशियन पर लगाया आरोप

निष्पक्ष जांच न होने पर ग्रामीणों ने धरना प्रदर्शन की दी चेतावनी

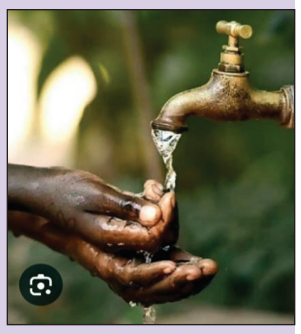

मांडा। यमुनापार क्षेत्र के विकास खण्ड मांडा ब्लॉक मुख्यालय के 69 ग्राम पंचायतो मे दर्जनों से अधिक ग्राम पंचायत के ग्रामीणों ने जिम्मेदार अधिकारी के गलत रिपोर्ट एवं सौतेला व्यवहार से पीने के लिए पानी को तरस रहे हैं ' वही बूंद बूंद पानी के लिए तरस रहे ग्रामीणों ने बोरिंग टेक्निशियन राम रतन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए उनके जांच रिपोर्ट द्वारा सरकारी धन से कराए गए रिबोर की उच्चाधिकारियो द्वारा निष्पक्ष जांच कर कार्रवाई की मांग की हैं ' गौरतलब हो कि विकास खण्ड मांडा मुख्यालय के दर्जनों से अधिक ग्राम पंचायतो में पीने के लिए पानी की मांग करने पर जिम्मेदार अधिकारी अपने जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए सरकारी योजनाओं को खरीदने वालों का इंतजार किया करते हैं ' फिर उसी के आधार पर जांच रिपोर्ट उच्चाधिकारी को सौपते हैं यदि सरकारी योजना को खरीदने वाला ग्राहक नहीं मिला तो जांच लंबित छोड़ दिया जाता हैंविकास खण्ड मांडा में तैनात बोरिंग टेक्निशियन राम रतन द्वारा सरकारी हैण्ड पम्प की मरम्मत एवं रिबोर की जांच रिपोर्ट से दर्जनों ग्राम पंचायतो के ग्रामीण पीने के लिए पानी को तरस रहे हैं ' वही उनके जांच रिपोर्ट से लगे सरकारी हैण्ड पम्प द्वारा खेतो की सिचाई की जा रही हैं कही पीने के लिए पानी को दूर दूर भटकना पड़ रहा है ' ग्रामीणों ने मांडा ब्लॉक मुख्यालय के 69 ग्राम पंचायतो मे पीने के लिए सरकारी रिबोर हैंड की उच्चाधिकारी द्वारा निष्पक्ष जांचकर सरकारी धन को गबन करने वाले दोषी कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए ग्रामीणों ने प्यासे को पानी उपलब्ध कराने की मांग की है ' तथा निष्पक्ष जांच न होने पर ग्रामीणों ने ब्लॉक मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन के लिए होंगे बाध्य '

तिवारीपुर गांव में धार्मिक अनुष्ठान कर किया गया प्रसाद का वितरण

सहसों। धार्मिक अनुष्ठान से हर सनातनी व्यक्ति में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं आत्म बल के साथ सुख समृद्धि की प्राप्ति प्रभु की कृपा बरसती है। उक्त बातें तिवारीपुर गांव में ग्राम प्रधान बाल गोविंद तिवारी के दरवाजे पर स्थित मंदिर के प्रांगण में आयोजित धार्मिक अनुष्ठान के पश्चात आचार्य पंडित शिवकुमार शुक्ला ने कहीं। उन्होंने कहा हर सनातनी को नित्य आराध्य देवों की पूजा, अर्चना अवश्य करनी चाहिए। जिससे मन की शांति के साथ संस्कृति व सभ्यता का उन्नयन हो। इसके साथ-साथ आने वाली भावी पीढ़ी में भी सनातन धर्म का भक्ति एवं वैभव बरकरार रहे। अनुष्ठान के पश्चात सुंदरकांड का पाठ एवं भगवान की आरती की गई तत्पश्चात प्रसाद का आयोजन किया गया। इस मौके पर विधायक पूजा पाल, भाजपा नेता राकेश बहादुर सिंह, ब्लाक प्रमुख बहरिया शशांक मिश्रा, वैभव करवरिया, हरिनारायण सिंह, लल्ले सिंह, वीरेंद्र बहादुर सिंह, रविंद्र मिश्रा, जय प्रकाश द्विवेदी, अशोक मिश्रा, वीर मनोज तिवारी एवं चिंतामणि शुक्ला सहित भारी संख्या में क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि व आदि ग्रामीण भक्त उपस्थित होकर प्रसाद ग्रहण कर पुण्य के भागी बने।

करछना ब्लाक में क्षेत्र पंचायत सदस्यों की बैठक में हंगामा

करछना। शुक्रवार को विकासखंड करछना के सभागार में आयोजित क्षेत्र पंचायत सदस्यों की बैठक आलोचनाओं के बीच बड़े गर्मजोशी के साथ संपन्न हुई क्षेत्र पंचायत सदस्यों द्वारा विकासखंड के गांव में कराए जाने वाले कार्यों के एजेंडे को तैयार करने के आहूत बैठक के तहत शुक्रवार को ब्लॉक परिसर के सभागार में खंड विकास अधिकारी चंदन देव पांडे एवं ब्लॉक प्रमुख एवं क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं प्रधानों की उपस्थिति में बैठक आहूत की गई जिसमें बड़ी संख्या में क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रधान गण ब्लॉक कर्मी उपस्थित रहे एजेंडा में कार्य के प्रति आलोचनाओं के बीच भी गर्म जोशी का माहौल देखने को मिला जिसके तहत नारेबाजी की जिस पर इलाकाई पुलिस पहुंच कर मामले को शांतिपूर्ण संपन्न कराने में अपनी भूमिका अदा की बताया जाता है कि कार्यक्रम में क्षेत्र पंचायत सदस्यों के तथा उनके क्षेत्र में कराए गए कार्य का अवलोकन तथा आने वाले समय में कार्यों से वंचित ग्राम पंचायत के लिए

क्षेत्र पंचायत की बैठक में पूर्व प्रमुख एवं खंड विकास अधिकारी से नोंक-झोंक - नारेबाजी

प्रस्तावित योजना का एजेंडा तैयार किए जाने के लिए बैठक आहूत की गई थी जिसमें खंड विकास अधिकारी चंदन देव पांडे एडीओ पंचायत राम शिरोमणि त्रिपाठी ब्लॉक प्रमुख श्रीमती सरोज द्विवेदी प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार द्विवेदी जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पांडे प्रधान संघ उपाध्यक्ष सुरेश पांडेय, एडीओ आईएसबी उदयभान सहित बड़ी संख्या में ब्लॉक कमी मौजूद रहे इसी बीच सदन में मौजूद विकास कार्यों को लेकर पूर्व ब्लाक प्रमुख विजय राज सिंह द्वारा उठाए गए प्रश्नों को खंड विकास अधिकारी चंदन देव पांडे के बीच कार्य के प्रति नोक झोंक नारेबाजी हो गई माहौल न बिगड़े इसके लिए ऐतिहातन पुलिस प्रशासन की व्यवस्था मौके पर बुला ली गई तथा एजेंडा को कोरम के साथ नई कार्य योजना पर प्रस्ताव पारित कर बैठक संपन्न हुई।

स्नातक कक्षा की छात्रा ने छत के चुल्ले में लगाई फांसी हुई मौत

सहसों। क्षेत्र के चिरौड़ा गांव में गुरुवार की शाम एक युवती ने कमरे में छत के चुल्ले के सहारे फांसी लगाकर मौत को गले लगा ली। काम पर गए युवती के माता-पिता घर वापस लौटे तो फांसी के फंदे पर पुत्री को देखकर पैरों तले जमीन खिसक गई। पिता द्वारा तत्काल इसकी सूचना ग्राम प्रधान कृष्ण कुमार चौरसिया को दी गई। जानकारी होने पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना फूलपुर के इफ्को पुलिस चौकी अंतर्गत चिरौड़ा गांव निवासी चंद्रशेखर बिन्द की 21 वर्षीया पुत्री सपना बिन्द स्नातक कक्षा की छात्रा है घर पर अकेली थी। माता एवं पिता काम करने के लिए घर से बाहर गए हुए थे। युवती ने अज्ञात कारणो से घर के कमरे में छत में लगे चूल्ले के सहारे फांसी के फंदे से लटक कर मौत को गले लगा ली। शाम को घर वापस लौटे माता-पिता ने पुत्री को फांसी पर लटकता देख दंग रहते उनके होश उड़ गए। परिजन ने तत्काल घटना की सूचना ग्राम प्रधान सहित पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल की जांच पड़ताल कर लिखा पढ़ी एवं उचित कार्यवाही करते हुए शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया। मृतक सपना दो बहन एक भाई में सबसे बड़ी थी। घटना के संबंध में फूलपुर कोतवाली प्रभारी का कहना है कि पिता के अनुसार काफी दिनों से युवती की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। युवती ने फांसी किन कारणों से लगाई यह तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकेगा। वहीं घटना से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल हो रहा है।

कठौली गांव समीप रेलवे ट्रैक पर मिला अज्ञात युवक का शव

मेजा। मेजारोड चौकी क्षेत्र के कठौली गाँव के समीप रेलवे ट्रैक पर एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिला ग्रामीणों की सूचना पर मेजारोड चौकी पुलिस मौके पर पहुँची और शव को कब्जे में लिया। मिली जानकारी के अनुसार रेलवे ट्रैक पर लगभग एक बजे के आस पास ग्रामीणों ने कठौली गांव के पास रेलवे ट्रैक पर शव देखा,और मेजारोड चौकी पुलिस को सूचना दी। चौकी पुलिस मौके पर पहुंची शव का शिनाख्त नही हो पाया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। मेजारोड चौकी के उप निरीक्षक सचिन गुप्ता ने बताया कि जांच पड़ताल के बाद ही युवक की शिनाख्त हो पाएगी।

कोरांव ब्लॉक में प्रधान संघटन का नव निर्मित सामुदायिक हाल का लोकार्पण

पीएम आवास योजना सर्वे सूची को लेकर किया गया आयोजन

ग्राम के जनप्रतिनिधि और ब्लॉक के अधिकारी कर्मचारी निष्पक्ष रूप से पात्रों को लाभ दिलाएं : राजमणि कोल

कोरांव। भाजपा विधायक कोरांव राजमणि कोल ने ब्लॉक परिसर में अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संघटन की मांग पर विधायक निधि से स्वीकृति प्रधान गणों की समस्या को देखते हुए एक सामुदायिक भवन का निर्माण के पश्चात शुक्रवार को फीता काट कर उद्घाटन किया। जिसकी लागत 9.99 लाख रूपया है। जिसका निर्माण कार्य दाई संस्था विकास खंड कोरांव है। इसके साथ ही प्रधान मंत्री आवास योजना के पात्रता सर्वे सूची पर प्रधानों सचिवों,रोजगार सेवकों बीडीसी सदस्यों आदि की उपस्थिति में आयोजित संयुक्त समारोह को संबोधित करते हुए विधायक ने कहा कि सभी निर्वाचित ग्राम प्रधान जनप्रतिनिधि और अधिकारी कर्मचारी पात्रों को इस योजना के लाभ अवश्य दिलाएं।

विधायक ने कहा कि भाजपा की पीएम मोदी और योगी की सरकार समाज के अंतिम पायदान तक के लोगों तक उक्त योजना का लाभ दिलाना चाहती है। उन्होंने कहा कि यह ध्यान दिया जाय कि किसी भी पात्र व्यक्ति को द्वेष पूर्ण भावना पूर्वक लाभ से वंचित न किया जाय। प्रधानों को संबोधित कर राजमणि जी ने कहा कि कई ग्राम प्रधान ऐसे हैं जिन्हें ग्राम के विकास को बुलंदियों तक ले जाने के लिए मेरे पास भी प्रस्ताव मांग पत्र देते है कि अपने गांव की कैसे और कितना बजट मिले की गांव चमका दूं। में ऐसे प्रधानों की इच्छाओं को धीरे धीरे ही सही अवश्य सहयोग करूंगा। उन्होंने सभी की होंशला आफजाई करते हुए बोला कि आप लोगों की मांगों को पूरा करते हुए इस हाल का लोकार्पण किया हूं जिससे ब्लॉक में कोई भी बैठक अथवा प्रधानों को बैठने के लिए कोई दिक्कत न हो सके। खंड विकास अधिकारी मनोज कुमार सिंह ने विधायक का पुष्प का गुलदस्ता भेंट कर माल्यार्पण कर स्वागत किया। और पीएम आवास योजना के बारे में विस्तार से जानकारियां दी। ग्राम प्रधानों ने भी विधायक का खैर मकदम किया। एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्र,एडीओ आईएसवी रामेश्वर सिंह,मोहम्मद आरिफ एडीओ समाज कल्याण आदि ने भी अतिथियों का स्वागत किया। इनके अलावा भाजपा के राजेश्वरी तिवारी, मणिराम शुक्ल, बनुआन दुवेदी, रेवती, संतरा देवी निषाद, संजय सिंह, पांडे बाबा जी, प्रधान संघ अध्यक्ष रामानुज यादव आदि ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान संघटन के दिलीप सोनी, शहजादे पत्रकार, शंकर दयाल तिवारी व कई नेता पदाधिकारी ग्राम प्रधान गण,विधायक पीआरओ रामाश्रय शुक्ला आदि मौजूद रहे। संचालन एडीओ कोरांव रामेश्वर सिंह ने किया। कार्यक्रम के पश्चात सोशल आडिट टीम ने भी अपने कार्यक्रम को प्रधानों रोजगार सेवकों के समक्ष आयोजित किया।

जमीनी विवाद में दो समुदायों के बीच झड़प पुलिस ने लिया चार को हिरासत में

कौंधियारा। कौंधियारा थाना क्षेत्र के सोढिया गाँव मे जमीनी विवाद को लेकर एक समुदाय से भारी संख्या में लोगों ने महज दस मीटर दूरी पर रह रहे उसी गाँव के शिवशंकर पाण्डेय पुत्र स्व अशोक पाण्डेय और उनके परिवार वालों को गाली गलौज देते हुए घेर लिया। देखते ही देखते भारी संख्या में भीड़ जुट गई। शिवशंकर और उसके परिजन जान बचाकर घर से परिवार सहित बाहर निकल आए। और मामले की सूचना कौंधियारा थाना में दी। मामला आगे न बढ़ने पाए तुरंत इंस्पेक्टर कौंधियारा गणेश तिवारी और सब इंस्पेक्टर अभय यादव पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुँचे। मामला जब नियंत्रण से बाहर दिखा तो करछना थाना से भी फोर्स बुला लिया गया। पुलिस को देखते ही भीड़ तीतर बितर हो गई और सभी वहां से भागने लगे। भागने के दौरान पुलिस द्वारा मुख्य आरोपी चांद बाबू पुत्र मो इदरीस,गुलाब सरवर पुत्र अब्दुल जब्बार,अब्दुल जिलानी पुत्र स्व अब्दुल जब्बार और आदिल सिद्दीकी पुत्र बबुली को गिरफ्तार कर थाने ले आया गया और मामले की जांचोपरांत सभी के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत किया गया। गाँव के शिवशंकर पाण्डेय ने बताया कि हमारी ढाई बीघा पुस्तैनी जमीन पर समुदाय विशेष के लोग काफी दिनों से अवैध रूप से कब्जा किए बैठे हैं।मंगलवार की रात समुदाय विशेष के लोगों के यहां से बारात गयी थी।बारात वापसी के बाद सैकड़ो की संख्या में लोग इकट्ठा हुए थे। इंस्पेक्टर कौंधियारा गणेश तिवारी के अनुसार मामला जमीनी विवाद से जुड़ा हुआ है। चार लोगों को हिरासत में लिया गया है। सभी के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कर आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

औद्योगिक क्षेत्र की पुलिस ने छात्रा पर अभद्र टिप्पणी करने वाले टोलकर्मी को किया गिरफ्तार

नैनी। नैनी औद्योगिक क्षेत्र में मुंगारी टोल प्लाजा पर स्कूल से घर लौट रही छात्रा पर भद्दे कमेंट करने वाले टोलकर्मी को पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया। छात्रा के पिता ने बुधवार को टोलकर्मी के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मिली जानकारी के अनुसार मुंगारी टोलप्लाजा पर मंगलवार शाम स्कूल से घर लौटते समय छात्रा पर टोलकर्मी ने भद्दे कमेंट किए थे। जिससे नाराज छात्रा ने टोलकर्मी को जूती लेकर दौड़ा लिया था। मामले में छात्रा के पिता ने बुधवार को टोलकर्मी राजन यादव निवासी चिरई थाना औद्योगिक क्षेत्र के खिलाफ नामजद एफआईआर दर्ज कराई थी। मामले में औद्योगिक पुलिस ने गुरुवार को आरोपित टोलकर्मी को गिरफ्तार कर लिया। गुरुवार को डीसीपी यमुनानगर ने वीडियो जारी करके टोलकर्मी की गिरफ्तारी की पुष्टी की है।

मानक के विपरीत चलाए जा रहें है अस्पताल

मरीजों के साथ हो रहा है खिलवाड़, जारी बजार के निजी अस्पताल में कुछ दिन पहले हुई थी महिला की मौत

कौंधियारा। जसरा ब्लॉक के अंतरगत जारी बाजार घूरपुर गौहनिया, इरादतगंज बाजार तक में तकरीबन सैकड़ों अस्पतालों न व क्लीनिकों का संचालन हो रहा है । इनके पास सीएमओ रजिस्ट्रेशन है लेकिन क्लीनिक का है या फिर नर्सिंग होमों का इसकी गारंटी नहीं है। इतना ही नहीं। इनमें भी तमाम ऐसी अस्पतालें हैन जो विभागीय अफसरों के रहमो करम पर चल रही है। जिनका रिनुअल भी नहीं होता हैं। ऐसे में यदि यह कह लिया जाए कि वर्तमान में ऐसी स्थिति बनती जा रही है कि अस्पतालों के संचालन की होड़ सी हो गई है। शायद अस्पताल व कीनिक के संचालन में - बड़ा फायदा होता होगा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा के समीप व गौहनिया जारी घूरपुर बाजार में इन दिनों तकरीबन दर्जनों - अस्पतालों का संचालन हो रहा है इतना ही नही जारी उपस्वास्थ्य केंद्र के बगल में भी क्लिनिक का संचालन हो रहा है । इस तरह से जारी भीटा, बीकर, मनकवार, बोगी, सेमरा इरादतगंज, घूरपुर, को मिलाकर तकरीबन सैकड़ों अस्पताल व क्लिनिक संचालित है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि अस्पताल व क्लिनिक का बोर्ड जरूर लगा रहता है लेकिन उसने अंकित डॉक्टर का नाम की जगह बगैर डिग्री प्राप्त अंदर इलाज करते मिलते हैं। यह खेल पूरे जारी बाजार क्षेत्र के खुली अस्पतालों व क्लिनिक में हो रहा है। यहां। तक की जिस डिग्री प्राप्त डॉक्टर का कागज व बोर्ड में नाम लिखा रहता है उस डॉक्टर को शायद यह नहीं पता रहता कि अस्पताल का संचालन कहां हो रहा है। खाली सेटिंग गेटिंग कर ऐसे चिकित्सक भी अपना कागज रजिस्ट्रेशन के लिए लगा देते हैं। शायद यही वजह है कि ऐसे अस्पतालों में मरीजों से सिर्फ धनादोहन होता है जबकि इलाज के नाम कुछ भी नहीं रहता है। इतना ही नहीं अस्पतालों में चिकित्सक बड़े बड़े ऑपरेशन भी करवा देते हैं सफल हुआ तो ठीक हैं नहीं तो अपने से बड़े अस्पताल का पता बता वहां के लिए भेज देते हैं। इनका दोनों तरफ से फायदा होता है। पहले तो मरीज के तीमारदारों से यहां धन लिए, इसके बाद भेजे गए पते वाली अस्पताल से अपना कमीशन लिए मरीज की जिंदगी बचेगी इनसे मतलब नहीं है है। कुल मिलाकर इन दिनों यह खेल इन जगहों में बखूबी हो रहा है। शायद यही वजह है कि सेटिंग गेटिंग कर ऐसे अस्पताल व कीनिक संचालक गरीबों की जेब में डाका डालने में सफल हो रहे हैं।

केन्द्रीय मंत्री ने शिल्प ग्राम के विकास कार्यों का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

मूंज शिल्प को पर्यटन से जोड़ने की दिशा में यह एक अच्छा कदम - केन्द्रीय मंत्री

मंत्रीगणों ने कारीगरों के द्वारा मूंज उत्पादों से सम्बंधित लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए उनकी कारीगरी को सराहा

प्रयागराज। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार गिरिराज सिंह ने राकेश सचान सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा तथा वस्त्रोद्योग, उ0प्र0 एवं मा0 राज्यमंत्री ग्राम्य विकास विभाग एवं समग्र ग्राम विभाग, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग, उ0प्र0 श्रीमती विजय लक्ष्मी गौतम के साथ शुक्रवार को विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय, भारत सरकार के तत्वाधान में उद्यमिता विकास संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा बनाये गये शिल्प ग्राम (क्राफ्ट टूरिज्म विलेज-मूंज शिल्प) महेवा नैनी के विकास कार्यों का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने वहां पर लगायी गयी प्रदर्शनी में विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन करते हुए कारीगरों से उसके विषय में जानकारी प्राप्त की और उनके द्वारा बनाये गये उत्पादों की सराहना करते हुए कारीगरों का मनोबल बढ़ाया। मंत्री जी ने कहा कि मूंज शिल्प को पर्यटन से जोड़ने की दिशा में यह एक अच्छा कदम है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कोई न कोई कला तथा कारीगरी छुपी होती है, अच्छा माहौल एवं अवसर प्राप्त होने पर वह अपनी कला का बेहतर प्रदर्शन करता है। उन्होंने कहा कि कला/कारीगरी को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री जी एवं वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार लगातार प्रयासरत है। मंत्री जी ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनी के आयोजन से मंजू कारीगरों की कला को आगे बढ़ाने तथा उनको आत्मनिर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे। विभिन्न जिलों के, विभिन्न तरह के मूंज उत्पाद लगाकर निश्चित ही सरकार इस योजना के माध्यम से हस्तशिल्पियों को प्रोत्साहित करने और उनको विकास के पथ पर अग्रसित करने के लिए यह प्रदर्शनी कारगर साबित होगी। प्रदर्शनी में विभिन्न जनपदों से आये हुए बुनकरों द्वारा प्रदर्शनी में लगभग 40 स्टॉल लगाये गये थे। मंत्रीगणों के द्वारा प्रदर्शनी में आये हुए स्कूली बच्चों के साथ ग्रुप फोटो भी करायी गयी। टूरिज्म विलेज महेवा, प्रयागराज में यमुनानदी के तट पर स्थित, टोकरी बनाने की जादुई कला, शिल्प का निवास स्थान है। मूंज सरपत (जंगली घास) का नरम बाहरी छिल्का है, जिसे वर्ष में एक बार अक्टूबर-नवम्बर के महीने में काटा जाता है और बल्ला के रूप में संग्रहीत कर उत्पाद तैयार किए जाते है। इस अवसर पर मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत व सम्बंधित विभागों के अधिकारी गण उपस्थित रहे।

पिता ने 16 वर्षीय बेटी से किया दुष्कर्म, मां की तहरीर पर मुकदमा दर्ज

प्रयागराज। जार्जटाउन में एक महिला ने अपने ही पति पर नाबालिग बेटी से दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। आरोप है कि छह साल से बेटी के साथ दरिंदगी हो रही है। इसका पता उसे दो दिन पहले चला। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। फिलहाल, आरोपी गिरफ्तार नहीं किया जा सका है। पुलिस का कहना है कि गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।महिला मूलरूप से मध्य प्रदेश की रहने वाली है। पिछले कई साल से अल्लापुर में किराये के कमरे में रहती है। पुलिस को बताया कि उसकी दो बेटियों में से बड़ी की उम्र 16 साल है। एक सितंबर को वह घर पर नहीं थी। आरोप है कि इसी दौरान छोटी बेटी ने देखा कि उसकी बड़ी बहन के साथ पिता गलत काम कर रहा है।घर पहुंचने पर बेटी ने यह बात बताई तो उसके होश उड़ गए। उसने बड़ी बेटी से पूछा तो वह बिलखने लगी। बताया कि छह साल से पापा जबरदस्ती कर रहे हैं। इस बारे में जब उसने पति से पूछा तो उसने न सिर्फ उसे, बल्कि बच्चों को भी पीटना शुरू कर दिया। कहा कि कहीं भी शिकायत की या मुंह खोला तो सबको जान से मार दूंगा। इसके बाद वह बेटी के साथ दरिंदगी की शिकायत लेकर थाने पहुंची और पति के खिलाफ तहरीर दी। जार्जटाउन प्रभारी राजीव श्रीवास्तव ने बताया कि तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

यूपी बोर्ड परीक्षा के फॉर्म भरने की तिथि फिर बढ़ी अब 20 सितंबर तक भरे जा सकेंगे फॉर्म

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) ने परीक्षा फॉर्म भरने की तिथि एक बार फिर बढ़ा दी है। अब 100 रुपये विलंब शुल्क के साथ 20 सितंबर तक चालान जमा करना होगा। उसके बाद 25 सितंबर तक वेबसाइट पर विद्यार्थियों के विवरण अपलोड करने होंगे। प्रधानाचार्यों की मांग पर यूपी बोर्ड के सचिव भगवती सिंह ने तिथि बढ़ाई है। इससे यूपी बोर्ड में फॉर्म भरने से वंचित रह गए विद्यार्थियों को राहत मिली है।यूपी बोर्ड परीक्षा के फॉर्म भरने की प्रक्रिया पहली जुलाई से शुरू हो गई थी। पांच अगस्त तक निर्धारित शुल्क के साथ फॉर्म भरे गए थे। उसके बाद 100 रुपये विलंब शुल्क के साथ 16 अगस्त तक परीक्षा शुल्क जमा कराया गया। उसके 20 अगस्त तक वेबसाइट पर विवरण अपलोड किए गए। इस बीच कुछ विद्यार्थी आवेदन नहीं कर पाए थे। इसलिए शिक्षक नेताओं की मांग यूपी बोर्ड के सचिव भगवती सिंह ने 31 अगस्त तक परीक्षा शुल्क का चालान जमा करने और पांच सितंबर तक विद्यार्थियों का विवरण वेबसाइट पर अपलोड करने का मौका दिया था।इसके बाद फिर से तिथि बढ़ाने की मांग की गई। इसलिए अब 20 सितंबर तक फीस का चालान जमा होगा। 25 सितंबर तक वेबसाइट पर डाटा अपलोड करना होगा। 26 से 30 सितंबर तक वेबसाइट पर अपलोड विद्यार्थियों के विवरण को चेक करना होगा। उसमें गलतियां होने पर एक से पांच अक्टूबर तक संशोधन करना होगा। फिर 10 अक्टूबर तक अभ्यर्थियों की फोटो युक्त नामावली डीआईओएस कार्यालय में जमा करवानी होगी। ऐसे ही नौवीं और 11वीं के विद्यार्थियों का पंजीकरण 20 सितंबर तक होगा। 21 से 23 अपलोड डाटा चेक किया जाएगा। 24 से 26 सितंबर तक डाटा संशोधित किया जाएगा। इस प्रक्रिया के पूरी होने के बाद पांच अक्टूबर तक फोटोयुक्त नामावली डीआईओएस कार्यालय में जमा करनी होगी।

नैनी में संदिग्ध परिस्थितियों में युवक का शव सड़क पर मिलने से हड़कंप

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के गंगापुरम एडीए संपर्क मार्ग पर शुक्रवार को एक युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिलने से हड़कंप मच गया। जिससे लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल करते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। वहीं मृतक के परिजनों में कोहराम मचा रहा। जानकारी के मुताबिक करछना थाना क्षेत्र के बसरिया गांव निवासी शिवेंद्र कुमार सिंह (32) पुत्र स्वर्गीय कृष्ण प्रताप सिंह तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। बताते हैं कि वह प्रतियोगी पढ़ाई की तैयारी कर रहे थे और कहीं पर भी सिलेक्शन न होने पर बीते कई दिनों से परेशान चल रहे थे। बताया जाता है कि गुरुवार शाम को शिवेंद्र कुमार सिंह का अपने ही परिजनों से किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। जिस पर वह घर से कुछ दूरी पर स्थित रेलवे लाइन पर जा पहुंचा। हालांकि परिजन भी उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए पहुंचे और उसे समझा बूझकर घर पर ले आए, लेकिन उसके कुछ घंटे के बाद वह एक बार फिर अपने शरीर पर पहने सारे कपड़े को फाड़ दिया और अंडरवियर में ही घर से भाग निकले। बसरिया से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नैनी कोतवाली क्षेत्र के गंगापुरम के समीप कुशवाहा स्वीट्स के निकट एडीए कॉलोनी (पीडीए) संपर्क मार्ग के किनारे उसका शव शुक्रवार तड़के सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने जब देखा तो हड़कंप मच गया। जिससे वहां पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। बताया जाता है कि जिस स्थान पर युवक का शव बरामद हुआ है। उस स्थान से होते हुए भोर लगभग 4:00 बजे आसपास की महिलाएं मॉर्निंगवॉक के लिए निकली हुई थी, लेकिन उस समय वहां पर कोई भी शव नहीं था। जब लोग तड़के सुबह 5:00 बजे वापस अपने गंतव्य घर की ओर लौट रहे थे तो उक्त स्थान पर शव देखा गया था। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल के बाद शव को कब्जे में ले लिए। मृतक युवक के शरीर पर अंडरवियर मात्र होने से वहां पर मौजूद लोगों में कई तरह की चचाएँ व्यक्त हो गई। जबकि मृतक युवक के होंठ से खून का रिसाव हो रहा था और शव की पहचान कराने के लिए पुलिस प्रयास करने में जुटी हुई थी। इधर रात भर लौटकर शिवेंद्र कुमार सिंह अपने घर पर नहीं पहुंचा तो परिजन उसकी खोजबीन करने में जुटे हुए थे। तभी उन्हें सूचना मिली कि एक युवक का शव अंडरवियर पहने हुए हालात में नैनी के एडीए संपर्क मार्ग पर बरामद हुआ है। वह सभी परिजन मौके पर पहुंचे और शव की पहचान शिवेंद्र कुमार सिंह के रूप में करते हुए दहाड़ मार कर रोने बिलखने लगे। वहीं पुलिस ने कागजी कोरम को पूर्ण करते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। पुलिस ने जब जांच पड़ताल का दायरा आगे बढ़ाया तो कई स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरे को खंगालने पर युवक अंडरवियर में ही जाते हुए दिखाई पड़ा।

चार तमंचा कारतूस के साथ 04 अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। पूरामुफ्ती पुलिस व एसओजी टीम को बृहस्पतिवार के दिन बड़ी सफलता हांथ लगी है। पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह और एसओजी प्रभारी अनूप कुमार ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए मुखबिर की सूचना पर 04 अभियुक्तों को पोंगहट पुल के पास से गिरफ्तार किया है गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों के कब्जे से 01 अवैध देशी पिस्टल 32 बोर, 02 अवैध जिन्दा कारतूस 32 बोर, 03 अवैध देशी तमन्चा 315 बोर व 04 अवैध जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ। शुभम सिंह पुत्र शिवम सिंह निवासी ग्राम चिरला मुंजप्ता पोस्ट गांजा थाना एयरपोर्ट, ऋषिकेश सिंह पुत्र रमेश सिंह निवासी ग्राम चिरला मुंजप्ता पोस्ट गांजा थाना एयरपोर्ट, बंटी पाल पुत्र मनोज पाल निवासी मुण्डेरा गांव थाना धूमनगंज व आशीष यादव पुत्र रामजी यादव निवासी महेवा पश्चिम पट्टी थाना नैनी को जी0टी0 रोड पोंगहट गाँव जाने वाली सड़क थाना क्षेत्र पूरामुफ्ती से गिरफ्तार किया गया। जामा तलाशी पर उनके कब्जे से तमंचा, पिस्टल व अवैध जिंदा कारतूस बरामद हुआ। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर पूरामुफ्ती थाना में मुकदमा पंजीकृत कर गिरफ्तार अभियुक्तों को जेल भेजा गया। पूरामुफ्ती थाना का चार्ज मिलते ही मनोज कुमार सिंह द्वारा लगातार ताबड़तोड़ अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही जारी है।

विधिक साक्षरता एवं सामाजिक सहायता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रयागराज। शुक्रवार को महिला क्लब माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद, उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग व माननीय जनपद न्यायाधीश / अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज श्री संतोष राय के निर्देशानुसार ग्राम बांका जलालपुर, मऊआइमा, तहसील सोरांव, प्रयागराज में विधिक साक्षरता एवं सामाजिक सहायता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधिक साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम संजय सिंह, सदस्य सचिव, उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशन में शुभारम्भ किया गया, जिसमे महिला क्लब, माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद की सदस्यगण, अधिकारीगण निश्चल शुक्ला, उपसचिव एवं शेषानंद तिवारी, निजी सचिव उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, उपजिलाधिकारी, सोरांव, जिला प्रोबेशन अधिकारी व अन्य प्रशासनिक अधिकारी, पैनल अधिवक्ता, पराविधिक स्वयं सेवक, कर्मचारीगण व आम जनता उपस्थित रही।कार्यक्रम में विशेष कार्याधिकारी, सालसा, सुरजन सिंह, विशेष कार्याधिकारी, प्राधिकरण उपस्थित आम जनमानस को कार्यक्रम के उद्देश्य व विभिन्न विभागों से आम जनमानस को मिलने वाले लाभ के बारे में बताया गया। दिनेश कुमार गौतम, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित योजनाओं, महिला के अधिकारों व सुलह-समझौते के आधार पर निस्तारित होने वाले वादों के बारे में बताया गया। जिला प्रोबेशन अधिकारी द्वारा अपने विभाग द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में आम जनमानस को अवगत कराया गया। विधिक साक्षरता एवं सामाजिक सहायता कार्यकम मे महिला क्लब, माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद से श्रीमती वन्दना गुप्ता, श्रीमती निधि बिरला, श्रीमती आभा तिवारी, श्रीमती अश्मिता राय व श्रीमती सारिका द्वारा उपस्थित पुरुष, महिला, बच्चो को कपडे व अन्य सामग्री वितरित की गयी। जिला जिला आपूर्ति विभाग को राशन कार्ड के कुल 8 आवेदन प्राप्त हुए जिनमें जिला आपूर्ति विभाग अधिकारी नवीन तिवारी द्वारा सभी 8 का निस्तारण किया गया।श्रीमती ज्योत्सना त्रिपाठी उपपरिविक्षा अधिकारी द्वारा कार्यक्रम में 09 पेन्शन सम्बन्धित प्रार्थना पत्रां का निराकरण करते हुए समस्त 09 लोगो की पेन्शन तत्काल लागू करायी गयी।चिकित्सा विभाग द्वारा उपस्थित समस्त जनमानस का नि-शुल्क परीक्षण किया गया। जनरल फिजिशियन, बाल रोग विशेषज्ञ, नेत्र विशेषज्ञ, महिला रोग विशेषज्ञ दन्त रोग विशेषज्ञ द्वारा सभी लोगों को निःशुल्क परीक्षण कर उन्हे दवा वितरित की गयी। लगभग 300 से ज्यादा आम जनमानस द्वारा चिकित्सीय शिविर का लाभ लिया गया। जिला खाघ एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा उपस्थित जनमानस को 15 दिवसीय फल एवं सब्जी प्रसस्करण के प्रशिक्षण कार्यक्रम व एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स एवं एकमासीय बेकरी एवं कन्फेशनरी, कुकरी कोर्स के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया एवं प्रशिक्षण हेतु फार्म विवरित किये गये। संचालन श्रीमती ऋतन्धरा मिश्रा द्वारा किया गया। यह जानकारी दिनेश कुमार गौतम, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज द्वारा प्रदान की गयी।

शराबी ने शराब के नशे में सड़क के बीच किया हंगामा, ईट पत्थर से ट्रकों के शीशे तोड़े

जमीन बेचकर पैसे को शराब पीने में खर्च करने से तंग आकर पत्नी द्वारा पैसे मांगने को लेकर किया हंगामा

नैनी। नैनी थाना क्षेत्र के मलहरा रेलवे ओवर ब्रिज के नीचे चक दोन्दी मोहल्ले में शराब के नशे में चुड़ एक अधेड़ शराबी ने शुक्रवार की दोपहर बीच सड़क पर जमकर हंगामा करते हुए ईट पत्थर चलाकर सड़क पर खड़ी ट्रक के शीशे तोड़ डाले। पत्थरबाजी में कई लोग जख्मी हो गए। उसके इस उत्पात को देखते हुए वहाँ मौजूद लोगों ने शराबी को काफी समझाया लेकिन उसके नही मानने पर मौजूद लोगो ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। मौके पर सूचना पाकर नैनी पुलिस पहुँची तब जाकर मौजूद भीड़ शांत हुई। उसके बाद नशे में धुत अधेड़ शराबी को अस्पताल भेजा। यह पूरा प्रकरण जमीन बेचने के बाद मील आठ लाख रुपये का है। मिली जानकारी के अनुसार मूलरूप से प्रतापपुर का रहने वाले अनिल तिवारी नैनी के मलहरा ओवर ब्रिज के नीचे चक दोन्दी मुहल्ले में अपनी पत्नी निशा तिवारी और दो बेटे मानस और पीयूष तिवारी के साथ रहते है। पत्नी निशा ने बताया कि सुबह से शाम तक शराब पीकर गाली गलौच करना और परिवार और पड़ोस के लोगो से मारपीट करना इनकी दिनचर्या है। इस बात को लेकर कई बार हंगामा भी हो चुका है।अनिल तिवारी की पुस्तैनी जमीन प्रतापपुर में है जिसको अपने भाई के साथ मिलकर आठ लाख रुपये में बेच दिया है। पूरे पैसे को अपने खाते में मंगवाकर उस पैसे को शराब पीने में खर्च कर रहा है। परिवार में पत्नी और बच्चो द्वारा पैसा मांगने पर उनके साथ मार पीट करता है। अनिल के बेटे मानस तिवारी परिवार की जीविका चलाने के लिये चाय की दुकान खोल रखा है शुक्रवार को भी वो अपनी चाय की दुकान पर बैठा था ।उसने बताया कि उसी बीच पापा शराब की नशे में आये और मम्मी के साथ गाली गलौच करते हुए मार पीट करने लगे। पड़ोस के लोगो ने बीच बचाव भी किया लेकिन उसके बाद वो कैची से वार कर दिए जिसके बाद कैची मम्मी के हाथ मे घोप दिये उसके बाद बाहर निकलकर ईट पत्थर से वार करने लगे। इसके बाद ईट पत्थर चलाकर वहाँ खड़ी कई ट्रक के शीशे तोड़ दिए इसके बाद उधर से गुजरने लोगो के ऊपर भी पत्थर चलाने लगे जिससे दो युवक घायल हो गए। सूचना पर पहुँची पुलिस ने पहले भीड़ को शांत कराया उसके बाद दोनों घायल युवक व उत्पाती शराबी को अस्पताल भेज दिया।

मोबाइल पर बात करते वक्त छत से गिरा एमपी का मजदूर की मौत

झूंसी। थाना क्षेत्र के लीलापुर रोड के देवनगर कालोनी में बृहस्पतिवार की देर रात मकान की दूसरी मंजिल की छत से गिरने के कारण मध्य प्रदेश के मजदूर की मौत हो गई। उसके साथियों के मुताबिक छत पर खड़े होकर वह मोबाइल से बात कर रहा था। इसी दौरान वह दूसरी मंजिल की छत से नीचे जमीन पर जा गिरा।घटना की सूचना मिलने पर इलाकाई पुलिस मौके पर पहुंची और उसके शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए चौरघर भेज दिया। युवक के मौत की खबर उसके घर पहुंची तो शुक्रवार को परिजन पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे। युवक की मौत से परिजनों में कोहराम मचा रहा। मध्य प्रदेश के रीवां जिले के हनुमाना निवासी 22 वर्षीय अशोक कुमार कौल पुत्र हेमसेन कौल प्रयागराज के झूंसी इलाके में रहकर मजदूरी करता था। अभी उसका विवाह नहीं हुआ था। अशोक रीवां जनपद के ही अन्य मजदूर साथियों के साथ झूंसी के लीलापुर रोड स्थित देवनगर कालोनी के दो मंजिल मकान में किरा पर रहता था। उसके साथियों के मुताबिक बृहस्पतिवार की देर रात को वह मोबाइल फोन पर परिजनों ने बात कर रहा था। बात करने में वह इतरा मशगूल था कि उसने ध्यान ही नहीं दिया और बात करते हुए दूसरी मंजिल से नीचे जमीन पर आ गिरा। उसकी मौके पर पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी तत्काल झूंसी पुलिस को दी गई तो फोर्स मौके पर पहुंची। मजदूर अशोक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए चौरघर भेज दिया। युवक के मौत की खबर उसके परिजनों को हुई तो कोहराम मच गया।

बार एसोसिएशन सोरांव के कार्यकारिणी की बैठक संपन्न, लिए गए अहम निर्णय

एसडीएम सोराव कीकार्य शैली जन विरोधी : अध्यक्ष केके मिश्रा

सोरांव। शुक्रवार को सोरांव तहसील के सभागार में कार्यकारिणी की एक बैठक अध्यक्ष कमलाकर मिश्रा की उपस्थिति में किया गया। जिसमें उपस्थित सभी कार्यकारिणी के सदस्यों संग पदाधिकारी से एसडीएम के कार्य शैली और तहसील में व्याप्त भ्रष्टाचार पर विस्तार से चर्चा परिचर्चा की गई। जिसकी लेकर कार्यकारणी के सभी सदस्यों का विचार भी लिया गया। जिसमें ज्यादातर अधिवक्ताओं ने एसडीएम के कार्य प्रणाली से असंतुष्ट रहे वहीं बार एसोसिएशन सोराव के अध्यक्ष के के मिश्रा ने कहा कि उप जिलाधिकारी सोराव डॉक्टर गणेश कनौजिया की कार्य प्रणाली जन विरोधी तथा अधिवक्ता अहित में है। पूर्व सूचना के अनुसार शुक्रवार को तहसील सोरांव के कार्यकारिणी की एक हम बैठक सभागार में आहूत की गई। अध्यक्षता एडवोकेट के के मिश्रा ने किया। बैठक में न्यायालय में अवरोध पैदा करने वाले अधिवक्ताओं के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई और उनके असंतुष्ट होने का कारण भी जाना गया। जिसको लेकर ज्यादातर अधिवक्ताओं ने एसडीएम के कार्य शैली से नाराज रहे। जिससे अध्यक्ष ने निर्णय लिया और सभी अधिवक्ता साथियों से अपील किया कि आगामी बृहस्पतिवार को कार्यकारिणी के समस्त सदस्य व पदाधिकारी सहित वरिष्ठ अधिवक्तागण अधिवक्ता ड्रेस में सुबह 10 बजे सोरांव तहसील में आने की गुजारिश किया है। और एसडीएम के स्थानांतरण को लेकर प्रयागराज जाकर जिलाधिकारी प्रयागराज से एक अधिवक्तागण वार्ता करेगा। इतना ही नहीं अध्यक्ष कमलाकांत मिश्र ने कहा कि यदि जनहित में एसडीएम सोरांव का स्थानांतरण शीघ्र नहीं हुआ तो उसके लिए अनुशासित और मर्यादित ढंग से न्यायिक कार्य से सभी अधिवक्ता साथी से विरत रहने की बात कही। इस मौके पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह, महामंत्री रमेश नारायण मिश्रा, संयुक्त मंत्री प्रशासन प्रदीप केसरवानी, कोषाध्यक्ष अभिषेक शुक्ला,मीडिया प्रभारी राजेश कुमार ,वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज यादव, ललित मिश्रा एडवोकेट, राजेश यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता बाल गोविन्द यादव संग कार्यकारणी के समस्त अधिवक्तागण मौजूद रहे।

माफिया अतीक की जमीन पर ढोल पीटकर कुर्की का ऐलान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सरगना रहे अतीक अहमद की संपत्तियों को कुर्क करने का सिलसिला जारी है। प्रयागराज पुलिस ने शुक्रवार को अतीक की 7 करोड़ की जमीन कुर्क कर ली। यह जमीन नैनी में हाईवे से सटी हुई है। अतीक इस जमीन को अपने करीबी के घर में सफाई करने वाले नौकर के नाम खरीदा था।नौकर की तनख्वाह सिर्फ 8 हजार रुपए थी, जबकि जमीन की कीमत करीब 7 करोड़ आंकी गई। 15 अप्रैल, 2023 को माफिया अतीक और उसके भाई अशरफ की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पुलिस को अतीक की इस जमीन का सुराग नहीं मिला था, इसलिए जमीन के दस्तावेजों तक पहुंचने में काफी समय लग गया। शुक्रवार को 3 थानों की फोर्स के साथ अफसर पहुंचे। ढोल पीटा गया। माइक पर जमीन कुर्क करने का ऐलान किया गया। जमीन पर बाड़ लगाकर सरकारी बोर्ड लगा दिया गया।जमीन की कुर्की के लिए सुबह से तैयारी माफिया की जमीन कुर्क करने के लिए प्रयागराज पुलिस ने सुबह से तैयारी कर रखी थी। एसीपी वरुण कुमार, एसीपी श्वतेताभ पांडेय के नेतृत्व में नैनी, घूरपुर, औद्योगिक क्षेत्र थानों की फोर्स मौके पर मौजूद रही। ढोल वालों को बुलाया गया। बाइक और लाउड स्पीकर तैयार किए गए। पुलिस ने सरकारी बोर्ड पहले से तैयार करवा लिया था। पुलिस टीमें नैनी के मड़ौका गांव स्थित जमीन की घेराबंदी शुरू कराई। हाईवे के करीब जमीन पर बोर्ड लगाया गया। इसके बाद ढोल पीटा गया। ऐलान किया गया कि अतीक अहमद पुत्र स्व. हाजी फिरोज निवासी कसारी मसारी चकिया थाना खुल्दाबाद की इस जमीन को कुर्क किया जाता है।

अतीक ने 2021 में जमीन की रजिस्ट्री नौकर के नाम की : दरअसल, अप्रैल, 2024 में नवाबगंज के करोली के रहने वाले श्यामजी सरोज से पूछताछ हुई थी। तब उसने पुलिस को इस जमीन के बारे में बताया। कहा- अतीक ने मेरे नाम पर बेनामी संपत्तियां बनाईं है। यह भी बताया कि अतरसुइया के रहने वाले 2 सगे भाई जावेद और कामरान के घर में वह साफ सफाई का काम करता है। दोनों भाई अतीक के करीबी रहे हैं। माफिया की बेनामी संपत्ति बनाने में दोनों ने उसका इस्तेमाल किया। अतीक ने श्यामजी के नाम पर जमीन का बैनामा 2021 में करा दिया था।

जिसके नाम 7 करोड़ की जमीन, उसकी तनख्वाह 8 हजार : अतीक के खेल अजीब थे। घर के नौकर, माली, दूसरों के घरों में काम करने वालों के नाम अतीक करोड़ों की जमीन का बैनामा कराकर रख लेता था। पुलिस जिस जमीन को कुर्क करने पहुंची है, उसकी कीमत 7 करोड़ है। जबकि जिसके नाम जमीन है, उसकी महीने की तनख्वाह महज 8 हजार रुपए।

माफिया गैंग की अब तक 2 हजार करोड़ की संपत्ति कुर्क : प्रयागराज में उमेश पाल हत्याकांड 24 फरवरी, 2023 को हुआ था। इसके बाद पुलिस ने ऑपरेशन माफिया शुरू किया। उमेश पाल के बाद अतीक-अशरफ की भी हत्या हो गई। तब से अब तक पुलिस ने अभियान चलाकर माफिया, उसके परिवार और गैंग मेंबरों की 2000 करोड़ से अधिक की संपत्ति कुर्क की है। प्रयागराज के अलावा लखनऊ, नोएडा, दिल्ली, रायपुर, कौशांबी, बरेली, मेरठ आदि शहरों में संपत्तियों को कुर्क किया गया।

साहित्य का आधार होती है भाषा- प्रोफेसर शुक्ल

मुक्त विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर संगोष्ठी का आयोजन

फाफामऊ। उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के मानविकी विद्याशाखा के तत्वावधान में हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषाः दशा और दिशा विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य शिव प्रसाद शुक्ल, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने कहा कि भाषा साहित्य का आधार होती है। व्यक्ति अपने परिवेश से भाषा ग्रहण करता है। अतः प्रवासियों की हिन्दी और भारत की विभिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली हिन्दी का स्वरूप भिन्न है। यद्यपि प्रवासी अपना देश छोड़कर दूसरे देश में बसा होता है। अतः उस पर दो देश का प्रभाव होता है। इसलिए प्रवासी की भाषा परिवर्तन स्वाभाविक है। विश्व में आज हमें तरह-तरह की हिन्दी देखने, पढ़ने और सुनने को मिलती है। भारत में ही हिन्दी की तकरीबन 17 उपबोलियाँ प्राप्त होती है। इन उपभाषाओं को अपनी स्थानीयता, अपनी भिन्न शैली है। भाषा पर्यावरण का हिस्सा है। उत्तरोत्तर उसकी भाषा में परिवर्तन होता है। आचार्य शुक्ल ने कहा कि शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह युवाओं को चरित्र व राष्ट्र निर्माण की शिक्षा प्रदान करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति आचार्य सत्यकाम ने कहा कि हिन्दी का प्रचार और प्रसार निरन्तर वैश्विक स्तर पर बढ़ता जा रहा है जो इसके महत्व को स्पष्ट करता है। आज विश्व के अनेक देशों में मारीशस, त्रिनाड, टोबैगो, फिजी, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में व्यापक रूप से साहित्यिक और भाषायी रूप में प्रयुक्त हो रही है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिक क्षेत्र में हिन्दी की व्यापक ग्राह्यता उसकी सर्व स्वीकारिता को दशार्ती है। कम्प्यूटर, इन्टरनेट और ए.आई. जैसे तकनीकों में हिन्दी वैश्विक स्तर पर पहचान स्थापित कर रही है। कार्यक्रम के संयोजक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के बहुसंख्यक लोगों के द्वारा पढ़ी जाती हैं। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। भारत में हिन्दी की व्यापकता हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक अटक से लेकर कटक तक प्रयुक्त हो रही है। केशव चन्द्र सेन, महात्मा गांधी, बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय तथा विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने हिन्दी के राष्ट्रीय स्वरूप को बनाने तथा स्थापित करने का प्रयास किया। राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए हिन्दी को अनिवार्य बताया। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी के आयोजन सचिव श्री अनुपम ने किया तथा आभार व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव कर्नल विनय कुमार ने कहा कि हिन्दी आम आदमी के भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। यह हमारे जीवन मूल्यों संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक सम्प्रेषक और परिचायक भी है। यह विश्व में तीसरी सबसे बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु का काम करती है। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यापर्ण करके किया गया।

करंट की चपेट में आने से अधेड़ की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। करंट की चपेट में आने से अधेड़ की शुक्रवार को दोपहर मौत हो गयी। लालगंज कोतवाली के बीजूमऊ निवासी बदलू सरोज का पुत्र बुधराम सरोज 55 छत पर ईंट उतार रहा था। अचानक उसका सिर एचटी लाइन में छू गया। परिजन आननफानन मे उसे लालगंज सीएचसी ले आये। यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक अपने पीछे दो पुत्र रोहित व महेन्द्र तथा पत्नी सीमा व शित्रा को छोड़ गया है। मौत की सूचना मृतक के घर पहुंची तो कोहराम मच गया।

दुर्घटना में पिता एवं पुत्र की दर्दनाक मौत पर गांव में मातमी सन्नाटा, बिलख रहे परिजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सड़क दुर्घटना में पिता एवं पुत्र की दर्दनाक मौत को लेकर शुक्रवार को परिजनों में मातम का माहौल दिखा। दुर्घटना में उन्नींस वर्षीय छात्र की मौत के साथ उसके पिता के भी दम तोड़ देने को लेकर गांव में भी मातम का सन्नाटा पसरा दिखा।

वहीं पुलिस ने देर रात दुर्घटना में प्रयुक्त कार को नेशनल हाइवे से लगे जंगल के पास से बरामद कर लिया। पुलिस कार को कोतवाली ले आयी है। इधर शुक्रवार को पीएम के बाद एक साथ पिता पुत्र का शव घर पहुंचा तो परिजनों की चीख से हर आंखे भर आयी दिखीं।

बता दें लालगंज कोतवाली के हिरऊ का पुरवा बेलहा निवासी आशीष कुमार यादव (19) तथा उसका पिता कन्हैया लाल यादव (48) बाइक से गुरूवार की देर शाम मजदूरी कर घर वापस लौट रहे थे। मेढ़ावां के पास पीछे से आ रही तीव्र गति की कार ने बाइक को टक्कर मार दी। दुर्घटना में पिता पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गये। सबसे दर्दनाक यह रहा कि नगर के रामअंजोर मिश्र इण्टर कालेज में कक्षा बारह में अध्ययनरत छात्र आशीष ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। गंभीर दशा में उसके पिता कन्हैया लाल यादव को जिला अस्पताल रेफर किया गया। रास्ते में कन्हैया लाल की भी सांसें थम गयीं। दुर्घटना में एक साथ पिता पुत्र की मौत की सूचना परिजनों तक पहुंची तो कोहराम मच गया। मृतक आशीष दो भाईयों में छोटा था। घटना को लेकर उसके भाई सतीश तथा मां संजू देवी का रो रो कर बुराहाल दिखा।

पुलिस ने देर रात दोनों शवों को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया है। वहीं दुर्घटना में प्रयुक्त कार को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि अभी तहरीर नहीं मिली है, तहरीर मिलने पर केस दर्ज किया जाएगा। पुलिस दुर्घटना के पहलुओं पर जांच में जुटी हुई है। वहीं शुक्रवार को पीएम के बाद शव घर पहुंचा तो परिजनों की चीत्कार से मातमी सन्नाटा भी चीख उठा। एक साथ पिता और पुत्र की मौत को लेकर गांव के लोगों की भी आंखे भर आयीं। इधर दुर्घटना में तहसील के अधिवक्ता अमृत लाल यादव के भतीजे तथा भाई की मौत पर साथियों में भी शोक का माहौल दिखा। शव पहुंचने पर तहसील के अधिवक्ता गांव पहुंचे और साथी को ढ़ाढंस बंधाते दिखे।

जीजीआईसी में छात्राओं को दी गई जानकारी

अखंड भारत संदेश

छात्राओं को जानकारी देते मास्टर ट्रेनर।

प्रतापगढ़। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य गीता, उप प्रधानाचार्य डॉ मोहम्मद अनीस के कुशल नेतृत्व में भारतीय मानक ब्यूरो लखनऊ से आए हुए मास्टर ट्रेनर अभिषेक तिवारी द्वारा छात्राओं को महत्वपूर्ण मानकों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया जैसे आईएसआई, हालमार्क, एचयूआईडी नम्बर,, भारतीय मानक ब्यूरो लखनऊ, गुणवत्ता के आधार पर लाइसेंस देती है, जो वस्तुएं इस मानक पर खरी उतरती है, उन्हें ही लाइसेंस दिया जाता है।

भारतीय मानक ब्यूरो वस्तुओं को रेंडम के आधार पर चेक करती है और अपनी लैब में टेस्ट करने के बाद ही लाइसेंस प्रदान किया जाता है। अगर टेस्टिंग में कोई कमी प्राप्त होती है तो उस का लाइसेंस नहीं दिया जाता। छात्राओं के साथ प्रश्न उत्तर का सेशन चला। इस अवसर पर जनपदीय मास्टर ट्रेनर सरिता, गरिमा श्रीवास्तव पूर्व प्रधानाचार्य, सविता सिंह, डॉक्टर कल्पना, सीमा श्रीवास्तव, यादव मीरा, उमर जमील आदि उपस्थित रहे।

नाबालिग से दरिन्दगी करने वाला धराया

प्रतापगढ़। जिले के पुलिस अधीक्षक डॉ अनिल कुमार एवं अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी संजय राय एवं सीओ सदर अमरनाथ गुप्ता के निर्देशन में थाना बाघराय ने बड़ी कार्यवाही की है। पुलिस ने नाबालिक मासूम बच्ची के साथ घर में घुसकर दरिंदगी करने वाले अपराधी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किया गया अभियुक्त इमरान पुत्र स्व महमूद अली बताया जा रहा है।

लोकपाल की पहल पर खेल मैदान में चला स्वच्छता अभियान

अखंड भारत संदेश

खेल मैदान की साफ-सफाई करते कर्मचारी।

प्रतापगढ़। सदर ब्लाक के राजगढ़ ग्राम में अयोध्या प्रयाग राज मुख्य मार्ग पर मनरेगा योजना के तहत बने खेल के मैदान की दशा देखकर लोकपाल मनरेगा समाज शेखर ने गंभीरता से लेते हुए अतिरिक्त कार्यक्रम (ए पी ओ) सदर ज्योति शिवहरे को अबिलम्ब सफाई कराने का निर्देश दिया। लोकपाल समाज शेखर के निर्देश के बाद ए पी ओ ज्योति ने ग्राम पंचायत राजगढ़ को तत्काल स्वच्छता अभियान चला कर उपयोगी बनाने को कहा। शुक्रवार को ग्राम प्रधान के संयोजन मे ग्राम पंचायत ने खेल मैदान को साफ सुथरा करने हेतु स्वच्छता अभियान चलाकर की शुरुआत हुई। लोकपाल ने एपीओ सहित ग्राम पंचायत की सराहना करते हुए नियमित इस सार्वजनिक स्थल की साफ सफाई होने और बच्चो को खेलने कूदने का अवसर प्रदान करने की अपेक्षा की।

सोशल मीडिया पर प्रधान को दी गई गाली, शिकायत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। सोशल मीडिया पर ग्राम प्रधान को गाली देने की शिकायत पुलिस से की गई है। तहसील क्षेत्र के राजचंद्र पट्टी गांव की रहने वाली नीलम सिंह ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि वर्तमान समय में वह ग्राम सभा की ग्राम प्रधान भी हैं। गांव के एक व्यक्ति द्वारा उनके विरुद्ध सोशल मीडिया पर गाली देते हुए पोस्ट की गई है, जिसकी जानकारी जब उन्हें हुई तो उन्होंने आरोपी से मामले के बाबत बातचीत की तो उक्त आरोपी द्वारा गाली गलौज करते हुए आमद फौजदारी हो जाने के आरोपों की तहरीर पुलिस को देकर कार्रवाई की मांग की गई है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

सीताराम येचुरी के निधन पर भाकपा ने दी श्रद्धांजलि

पुष्प अर्पित कर शोक सभा का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

सीताराम येचुरी के चित्र पर माल्यार्पण करते पदाधिकारी।

प्रतापगढ़। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व सांसद, देश के प्रखर विद्वान वामपंथी नेता कामरेड सीताराम येचुरी के निधन पर आज पूरा देश दुखी है। वामपंथी दलों की ओर से करनपुर सिविल लाइन में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय पर लाल बहादुर तिवारी की अध्यक्षता में एक आकस्मिक शोक सभा का आयोजन किया गया।

शोक सभा में कॉमरेड सीताराम येचुरी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वक्ताओं ने कहा कि कॉमरेड सीताराम येचुरी छात्र जीवन से प्रखर विद्यार्थी थे और देश के मशहूर विश्वविद्यालय जवाहरलाल नेहरू के दो बार अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। देश की संसद के उच्च सदन में दो बार सदस्य रहे और उन्हें सर्वश्रेष्ठ सांसद होने का गौरव हासिल हुआ। वह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी के महासचिव के रूप में और वामपंथी दलों के निर्वाचित सर्वमान्य नेता के रूप में जाने जाते थे।

दक्षिण भारतीय होते हुए और तमिलवासी होते हुए भी हिंदी भाषा पर उनकी मजबूत पकड़ थी देश के छात्रों नौजवानों मजदूर किसानों बुद्धिजीवियों कलाकारों सब में उनकी गहरी स्वीकार्यता थी। उनके निधन से देश का बहुत भारी नुकसान हुआ है जिसकी भरपाई संभव नहीं है। शोक सभा में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य परिषद के सदस्य हेमंत नंदन ओझा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला मंत्री रामबरन सिंह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी के जिला मंत्री आशुतोष शुक्ल, किसान सभा के मंत्री और भाकपा के सहायक सचिव निर्भय प्रताप सिंह, किसान सभा के अध्यक्ष और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला मंत्री परिषद के सदस्य राजमणि पांडे, मनोज कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। सभा में अंत में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

युवक की मौत को लेकर आरोपी के खिलाफ हत्या का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। फांसी के फंदे पर लटके युवक की मौत को लेकर कोतवाली पुलिस ने एक आरोपी के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के रानीगंज कैथौला चैकी के बभनपुर गांव में बीती ग्यारह सितंबर को युवक का शव घर से समीप पीपल के पेड़ में फंदे पर लटका मिला था। मृतक का पिता दिल्ली से लौटा तो पुलिस को बेटे की हत्या को लेकर तहरीर दी। बभनपुर निवासी रामकिशुन पटेल पुत्र तादादीन ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि घटना के दिन गांव के ही आरोपी कुलदीप धुरिया उर्फ ललई पुत्र त्रिलोकी धुरिया उसके घर के पास आया और उसके मृतक बेटे अनिल को बाइक से बैठाकर ले गया। रात को गांव के लोग शौच क्रिया के लिए गये तो टार्च की रोशनी मे अनिल का शव पेड के सहारे रस्सी लगी खड़ा देखा। पीडित ने तहरीर में कहा है कि आरोपी कुलदीप धुरिया द्वारा उसके बेटे अनिल की हत्या कर शव को पेड़ के सहारे खड़ा कर दिया गया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी कुलदीप धुरिया के खिलाफ हत्या का अभियोग दर्ज किया है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि केस दर्ज किया गया है। आरोपी को शीघ्र हिरासत मे लिया जाएगा।

कुण्डा पुलिस को फिर मिला अवैध विस्फोटक का जखीरा

दीपावली के चलते जमा किया गया था बारूद

अखंड भारत संदेश

पुलिस की गिरफ्त में विस्फोटक पदार्थ के साथ अभियुक्तगण।

कुण्डा, प्रतापगढ़। शेखपुर में विस्फोटक बरामदगी के बाद चेकस हुई कुण्डा पुलिस ने बरई नहर के बगल एवं समापुर के पास से विस्फोटक सामान जब्त किया है। बारूद के सौदागरों में हड़कप मचा हुआ है। मुखबिर से मिली सूचना पर कुण्डा थाने के उप निरीक्षक अरुण कुमार सिंह द्वारा ग्राम बरई नहर के बगल अधिक मात्रा में विस्फोटक पदार्थ की सूचना मिली।

इस पर उपनिरीक्षक अरुण सिंह द्वारा मौके पर जाकर अभियुक्त मोहम्मद साजिद पुत्र स्वर्गीय अब्दुल गनी निवासी चिकवन टोला थाना कुंडा जनपद प्रतापगढ़ पकड़ा तथा संबंधित विस्फोटक पदार्थ जिसमें मौके पर मौजूद आतिशबाजी वस्तुओं का निरीक्षण किया गया तो मौके पर अवैध विस्फोटक का जखीरा मिला। वहीं उप निरीक्षक अंकित कुमार तिवारी को मुखबिर द्वारा सूचना मिली की समापुर स्थित महुआतर कॉलोनी के बगल एक व्यक्ति विस्फोटक पदार्थ के साथ मौजूद की। जिस पर तत्परता पूर्वक मौके से अभियुक्त मोहम्मद शाहिद अली पुत्र स्वर्गीय अब्दुल गनी निवासी चिकवन टोला थाना कुंडा जनपद प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया गया तथा मौके पर माल का निरीक्षण किया गया तो वहां भी अवैध विस्फोटक का जखीरा मिला। बता दें कि शेखपुर, समापुर और बरई नहर के बगल मे जब्त किये गये विस्फोटक इस बात को साबित करने के लिए काफी है कि इस काम मे लगे समूह दीपावली को देखते हुए एक हद तक सक्रिय हो उठे है।

बंद केंद्र की शिकायत पर झल्ला उठे सीडीपीओ

बोले-किसकी कर दें सेवा समाप्त

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सीडीपीओ आंगनबाडी के बंद केंद्रों की बार-बार शिकायत को बर्दास्त नही कर सके। झल्ला कर बोले जिसकी कहो उसकी सेवा समाप्त कर दें। यह सुनकर शिकायत करने वाला ही घबरा उठा। स्थानीय विकास खंड के कुछ केंद्रों की मनमानी पर विभाग अंकुश न लगाकर उसे बढ़ावा दे रहा है। यही नहीं मामले की शिकायत भी साहब को नही सुहाती है। दशा यह है की केंद्र को आप जब देखेंगे तब उसके दरवाजे पर ताला ही लटकता रहता है। ग्रामीण सच्चाई से अवगत कराने के लिए बार-बार सीडीपीओ से शिकायत करते है, आरोप है की न तो कोई कार्रवाई होती है और न ही कोई सुधार। जब लोगो ने देवापुर (अर्जुनपुर) बंद केंद्र की शिकायत की तो सीडीपीओ झल्लाकर बोले जिसकी कहो उसकी सेवा समाप्त कर दें। यह सुनकर शिकायतकर्ता ही घबरा गया और उसकी आवाज कांपने लगी। आंगनबाडी के कुछ केंद्रों पर आए दिन ताला ही लटकता रहता है। जब केंद्र ही कभी-कभार खुलते है तो बच्चे क्या आते होगे और पोषाहार का वितरण कैसे होता होगा यह तो जिम्मेदार ही जाने? वहीं मनमानी पर विभाग कार्रवाई तो करता नही है बल्कि साहब उल्टा शिकायत कर्ता पर ही झल्ला उठते है और अपने पॉवर से अधिक बोलकर नियमों को मजाक बना देते है। इस संबंध में सीडीपीओ ने बताया कि शिकायत पर सुपरवाइजर से जांच कराया जाता है। बंद केंद्रों के विरुद्ध जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

यातायात नियमों का पालन न करने वालों पर हुई कार्रवाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। यातायात नियमों का पालन न करने वालों पर पुलिस ने जुर्माने की कार्रवाई की है। अगस्त माह से अब तक एक करोड़ 44 लाख का जुर्माना सड़क सुरक्षा अभियान के तहत किया गया है इसमें ओवर स्पीड में चलने पर 96 गाड़ियों का चालान हुआ है। ड्रंक एंड ड्राइव पर 15 गाड़ियों पर चालान व सीज की कार्रवाई की गई है। यातायात प्रभारी संतोष शुक्ला ने नियम पालन करने की लोगों से अपील की है।

राजीव प्रताप सिंह फिर बने निर्विरोध जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

राजीव प्रताप सिंह का स्वागत करते समर्थक।

प्रतापगढ़। पूर्व मंत्री राजेन्द्र प्रताप सिंह मोती सिंह ने अपने पुत्र राजीव प्रताप सिंह नंदन भैया को निर्विरोध सहकारी बैंक का अध्यक्ष बनाकर एक बार फिर जिले में अपनी राजनीतिक अहमियत दिखाई है। बता दें कि पिछले कई बार से जिले के सहकारी बैंक पर पूर्व मंत्री के परिवार का कब्जा रहा है।

बता दें कि पूर्व सहकारी बैंक अध्यक्ष प्रदीप सिंह बाले के निधन के बाद पहली बार राजीव प्रताप सिंह उर्फ नंदन भैया अध्यक्ष बने थे। राजीव प्रताप सिंह नंदन भैया मंगरौरा विकास खण्ड के ब्लॉक प्रमुख भी हैं। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, पूर्व विधायक धीरज ओझा, भाजपा प्रवक्ता राघवेन्द्र नाथ शुक्ला ने राजीव प्रताप सिंह की जीत पर बधाई दी है। इस दौरान जीत की खुशी में लोगों का मुंह भी मीठा कराया गया।

उर्से अतीकी पर अमनों शांति को लेकर मांगी गई दुआ

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के खानापटटी गांव में शुक्रवार को अटठावनवां जश्न ए ईद मिलादुन्नबी धूमधाम से शुरू हुआ। अठारहवें उर्से अतीकी पर अकीदतमंदों ने मजार के सामने मुल्क के अमनों शांति को लेकर दुआ मांगी। मदरसा दारूल उलूम बाबुननवी के अहाते में उर्से अतीकी पर हिन्दू व मुसलमानों ने कौमी एकता पर जोर दिया। हजरत मौलाना रहमानी मियां ने उर्से अतीकी को लेकर तकरीर में लोगों से नेकी के रास्ते पर चलने पर जोर दिया। संचालन बेलाल रहमानी ने किया। इस मौके पर अब्दुल लतीफ खान, सैयद खालिद, दानिश खान, मतलूब खान, जियाउल, इजहार, इम्तियाज खॉ आदि रहे।

दो बाइकों की आमने सामने जोरदार टक्कर में तीन राहगीर हुए घायल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर इलाके में दो बाइकों की आमने सामने जोरदार टक्कर हो गयी। हादसे मे बाइक सवार तीन राहगीर घायल हो गये। घायलों को गंभीर हालत में उपचार के लिए लालगंज ट्रामा सेण्टर में भर्ती कराया गया है। लीलापुर थाना क्षेत्र के देवली निवासी बीस वर्षीय सुनील वर्मा अपने गांव के साथी इक्कीस वर्षीय सलमान के साथ बाइक से कही जा रहा था। दूसरी तरफ से कहारन का पुरवा निवासी बसंत लाल प्रजापति 22 बाइक से आ रहा था। लीलापुर में बाइकों की आमने सामने जोरदार भिडंत हो गयीं। इसमें तीनों घायल हो गये। आननफानन में तीनों घायलों को लालगंज ट्रामा सेण्टर लाया गया। यहां घायलों को उपचार के लिए भर्ती किया गया है। लीलापुर एसओ नरेन्द्र सिंह ने बताया कि तहरीर मिलने पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

करनपुर पंचायत ने जीती सदर की बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता

संविलियन विद्यालय जोगापुर के खिलाड़ियों का रहा दबदबा

अखंड भारत संदेश

जोगापुर के खिलाड़ियों के साथ खण्ड शिक्षा अधिकारी।

प्रतापगढ़। जिला स्टेडियम में सदर ब्लाक की बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता शुक्रवार को हुई। जिसमें करनपुर न्याय पंचायत के स्कूलों का दबदबा रहा। यूपीएस बालिका कबड्डी के फाइनल से लेकर सिग्नल इवेंट में कंपोजिट विद्यालय जोगापुर के खिलाड़ियों का ही दबदबा रहा। खण्ड शिक्षा अधिकारी ने टीम को बधाई देते हुए खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।यूपीएस कबड्डी बालिका वर्ग में कंपोजिट विद्यालय जोगापुर की टीम ने फाइनल मैच जीता। सौ मीटर दौड़ बालिका में शिखा प्रजापति ने प्रथम स्थान हासिल किया। दो सौ मीटर दौड़ बालक में नीरज प्रजापति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सौ मीटर बालक में उबैद (किशुन दास पुर) ने पहला स्थान प्राप्त किया। दो सौ मीटर बालिका में आरती ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कंपोजिट भुवालपुर की खुशी सरोज ने चार सौ मीटर दौड़ में पहला स्थान प्राप्त किया।इस तरह लॉन्ग जंप में उबैद और भुवालापुर किला की खुशी सरोज ने पहला स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल में जिला व्यायाम शिक्षक राजकुमार सिंह, सदर व्यायाम शिक्षक शैलेंद्र सिंह, रामजीत, जेपी पांडेय, राजेश कुमार, दिलीप, आशुतोष, मनोज समेत कई लोग मौजूद थे। खेल समापन के मुख्य अतिथि सदर ब्लाक के खंड शिक्षा अधिकारी संतोष श्रीवास्तव ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

किस्त के लिए लिया गया धन अभिकर्ता ने हड़पा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। एल आई सी की किस्त जमा करने के लिए लिया गया पैसा जमा नहीं किया गया। वापस मांगने पर धमकी देने के आरोपों की तहरीर पुलिस को दी गई है।

कोतवाली क्षेत्र के रामपुर बेला गांव निवासी माताफेर चौरसिया ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसने अपने बेटे कर्मराज की बेटी की एक एल आई सी कराई थी। किस्त का पैसा 24 हजार रुपए एजेंट जमा करने के लिए आनलाइन ले लिया, पर किस्त जमा नहीं की। आरोप है कि पैसा वापस मांगने पर उक्त अभिकर्ता तरह-तरह की धमकियां दी गई, जिससे डरा सहमा पीड़ित मामले की शिकायत लेकर कोतवाली पहुंचा और पुलिस को नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

राज्यपाल से गोल्ड मेडल पाकर नुजहत ने बढ़ाया बेल्हा का गौरव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ। पट्टी क्षेत्र के पंडित राजपति महाविद्यालय परमी पट्टी से बीएड संकाय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर पट्टी नगर निवासिनी छात्रा नुजहत नाज को राज्यपाल के हाथों गोल्ड मेडल मिला है। नुजहत वरिष्ठ पत्रकार डॉ. शकील अहमद की बेटी भी हैं। प्रयागराज में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल द्वारा मंगलवार को नैनी स्थित विश्वविद्यालय के सभागार में गोल्ड मेडल के साथ प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतिभाशाली बेटी की इस उपलब्ध से पूरा जनपद गौरवान्वित है। इस मौके पर इसरो के पूर्व अध्यक्ष एएन किरण के साथ उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी, कुलपति अखिलेश सिंह समेत विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, छात्र-छात्राओं के अभिभावक व अन्य लोग मौजूद रहे। छात्रा को मिले सम्मान की जानकारी को लेकर पटटी क्षेत्र के लोगों में खुशी का माहौल देखा गया।

प्राइवेट एम्बुलेंस सवार पांच लोग सड़क हादसे में घायल

दूसरी कार के लोगों को भी चोट आई है

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज स्थित भारत पेट्रोल पंप के पास प्राइवेट एम्बुलेंस सवार सड़क हादसे का शिकार हो गए हैं हादसे में पांच लोग घायल हो गए हैं जानकारी मिलते ही मौके पर भाग कर स्थानीय लोग पहुंचे मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी है घटना स्थल पर पहुंची पुलिस ने वाहन में फंसे लोगों को बाहर निकाला है घायलों को एंबुलेंस से इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है जानकारी परिवार के लोगों को दे दी गई है

जानकारी के मुताबिक स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल में नीलम का प्रसव हुआ था प्रसव के बाद नीलम के परिवार के लोग राम भवन उनकी पत्नी शीला देवी वा बृजेश कुमार उनकी पत्नी नीलम वा 25 दिन की नवजात पुत्री नविता निवासी रामपुर धमावा सिराथू कोतवाली सैनी स्वरूप रानी अस्पताल प्रयागराज से वापस अपने गांव प्राइवेट एंबुलेंस से जा रहे थे शुक्रवार की रात 10 बजे जैसे ही एम्बुलेंस सवार मूरतगंज पेट्रोल पम्प के पास पहुँचे सड़क हादसे का शिकार हो गए है दूसरी तेज गति कार ने प्राइवेट एंबुलेंस में जोरदार टक्कर मार दी जिससे अनियंत्रित होकर एंबुलेंस सड़क पर पलट गई है और एंबुलेंस में सवार सभी पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं मौके पर कोहराम मच गया रोने चीखने की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए दूसरी कार के लोगों को भी चोट आई है लेकिन उनकी स्थिति गंभीर नहीं है मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई प्राइवेट एंबुलेंस में सवार पांचो घायलों को वाहन से बाहर निकाल कर सरकारी एंबुलेंस से इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया जिनमें कुछ की हालत गंभीर बताई जाती है।

प्रत्येक विकास खण्डों में 17 सितम्बर से 25 सितम्बर तक होगा रोजगार मेले का आयोजन

कौशाम्बी। जनपद के शिक्षित बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सिक्योरिटी के क्षेत्र में रुचि रखने वाले इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए सेवायोजन कर्यालय के माध्यम से जी डी एक्स सिक्योरिटी, नोएडा द्वारा जनपद के समस्त विकास खण्डां में रोजगार मेले का आयोजन किया जायेंगा। यह जानकारी जिला सेवायोजन अधिकारी गौतम घोष ने देते हुए बताया कि विकास खण्ड-कड़ा में दिनांक 17 सितम्बर 2024 को पूर्वान्ह 10 बजे से अपरान्ह 03 बजे तक रोजगार मेले का आयोजन किया जायेंगा। इसी प्रकार विकास खण्ड-मंझनपुर में दिनांक 18 सितम्बर, विकास खण्ड-मूरतगंज में दिनांक 19 सितम्बर, विकास खण्ड-कौशाम्बी में दिनांक 20 सितम्बर, विकास खण्ड-नेवादा में दिनांक 21 सितम्बर, विकास खण्ड-चायल में दिनांक 23 सितम्बर, विकास खण्ड-सरसवां में दिनांक 24 सितम्बर एवं विकास खण्ड-सिराथू में दिनांक 25 सितम्बर 2024 को पूर्वान्ह 10 बजे से अपरान्ह 03 बजे तक रोजगार मेले का आयोजन कर शिक्षित बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार प्रदान किया जायेंगा। उन्होंने यह भी बताया कि जिन अभ्यर्थियों की शैक्षिक योग्यता-न्यूनतम हाईस्कूल, लंबाई 168 सेमी0, वजन 56 किलोग्राम एवं आयु 18 से 45 वर्ष है, प्रतिभाग कर सकतें हैं। कंपनी द्वारा चयनित अभ्यर्थियों से पंजीयन शुल्क रू0-250 तथा प्रशिक्षण शुल्क रू0-9000 (चयन के उपरान्त) (02 सेट यूनिफॉर्म, पी टी सूज, टाई, बेल्ट एवं टोपी आदि का लिया जायेंगा। इच्छुक अभ्यर्थी प्रतिभाग कर सकते हैं।

हिंदुस्तान के पहलवान ने पाकिस्तान के पहलवान को दी पटकनी

कौशांबी। कजाकिस्तान में चल रहे पांचवें वर्ल्ड नोमेड गेम्स सेमीफाइनल में 52 देश से पहलवानों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था लेकिन इस प्रतियोगिता में हिंदुस्तान के कौशांबी जिले के पहलवान अर्जुन तिवारी ने पाकिस्तान के पहलवान उल्फत बट को पटकनी देकर कुश्ती में पराजित कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के झंडा का डंका बजा दिया है। भारतीय पहलवान के पाकिस्तान में झंडा फहराने के बाद पूरे कौशांबी में जश्न का माहौल है और जैसे ही इस बात की जानकारी प्रदेश स्तर पर पहुंची प्रदेश के अन्य जिलों में भी पहलवान के पाकिस्तान में झंडा फहराने पर खुशी का माहौल दिखाई पड़ रहा है प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने भी बधाई दी है। बताते चलें कि कौशांबी जिले के बम्हरौली गांव के रहने वाले अर्जुन तिवारी उर्फ राम किशुन पहलवान 15 वर्षों से दंगल के मैदान में 1200 कुश्ती जीत चुके हैं और इस बार उन्होंने पाकिस्तान के पहलवान को कुश्ती में पराजित कर भारत का झंडा फहरा दिया है।

भवन्स मेहता महाविद्यालय के शिक्षको और विद्यार्थियों ने भारतीय विद्या भवन के अनुचित पत्र का किया विरोध

भरवारी कौशाम्बी। भवन्स मेहता महाविद्यालय भरवारी के शिक्षको और विद्यार्थियों ने भारतीय विद्या भवन के इलाहाबाद केन्द्र के अनुचित पत्र का जोरदार विरोध किया। सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने कॉलेज गेट से महाविद्यालय के संस्थापक गिरिधारी लाल मेहता की प्रतिमा तक विरोधी नारों के साथ मार्च किया तथा भारतीय विद्या भवन के इलाहाबाद केन्द्र से आये एक नितान्त अनुचित पत्र का जमकर विरोध किया आन्दोलनरत शिक्षकों ने कहा कि महाविद्यालय 1973 के एक्ट से संचालित होता है न कि किसी की अवैध मनमानी एवं तानाशाही से। ऐसे किसी भी पत्र का संज्ञान नहीं लिया जाना चाहिए। ज्ञातव्य है कि महाविद्यालय की वर्तमान प्रबंध समिति का कार्यकाल भारतीय विद्याभवन मुम्बई के पत्र के अनुसार 31 जुलाई 2024 तक ही था। अब जबकि महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति ही वैधानिक तौर पर अस्तित्व में ही नहीं है तो उसकी कोई बैठक भी अवैध होगी। महाविद्यालय के शिक्षकों ने ऐसी अवैध प्रबंध समिति द्वारा बुलाई गई अवैध बैठक के बहिष्कार का भी निर्णय लिया प्रदर्शन एवं विरोध में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक, शिक्षणेतर कर्मचारी एवं तमाम छात्र-छात्राएं शामिल रहे।

डीएम के निरीक्षण में उजागर हो रही अवस्थाएं

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कौशाम्बी, आकांक्षी विकास खण्ड कार्यालय कौशाम्बी एवं पंचायत भवन-सोधिया तथा मढ़ी का निरीक्षण कर दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान प्रभारी चिकित्साधिकारी के अनुपस्थित पाये जाने पर एक दिन का वेतन रोकने के दिये निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कौशाम्बी, आकांक्षी विकास खण्ड कार्यालय कौशाम्बी एवं पंचायत भवन-सोधिया तथा मढ़ी का निरीक्षण कर व्यवस्थाओ का जायजा लिया। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के निरीक्षण के दौरान प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ0 अमर सिंह अनुपस्थित पाये गये, जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए एक दिन का वेतन रोकने के निर्देश दियें। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि वहाँ पर लोग टीकाकरण के लिए डॉक्टर का इंतजार कर रहें थे एवं पर्चा बनाने वाला भी अपनी सीट पर मौजूद नहीं था, जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी प्रकट की। निरीक्षण के दौरान अस्पताल परिसर में साफ-सफाई सही ढंग से न पाये जाने पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। इसके साथ ही उन्होने दवाओं की उपलब्धता सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। विकास खण्ड कार्यालय के निरीक्षण के दौरान खण्ड विकास अधिकारी एवं ए0डी0ओ0 पंचायत अनुपस्थित पाये गये, जिस पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। पंचायत भवन-सोधिया एवं मढ़ी के निरीक्षण के दौरान पंचायत सहायक उपस्थित पाये गये एवं सेक्रेटरी अनुपस्थित पाये गयें। जिलाधिकारी ने ग्राम-सोंधिया में तालाब का भी निरीक्षण किया, जो कि सही स्थिति में नहीं पाया गया। इस सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दियें। उन्होंने निरीक्षण में अनुपस्थित पाये गये अधिकारियों/कर्मचारियों को कठोर चेतावनी देते हुए कहा कि सभी कार्यालय समय से आयें एवं अधिकारीगण सुबह 10 से 12 बजे तक अपने कार्यालय में अवश्य बैठकर जनता की समस्याओं को सुनकर उनकी समस्याओं का निराकरण करेंगे, वरना उनके विरूद्ध कठोर से कठोर कार्यवाही की जायेंगी।

न्यूज झरोखा

एम्बुलेंस कर्मियों के प्रशिक्षण में पहुचे अधीक्षक एवं ट्रैफिक इंचार्ज, किया उत्साहवर्धन

कौशाम्बी जनपद कौशाम्बी के चायल ब्लॉक में एम्बुलेंस कर्मियों के हो रहे प्रशिक्षण के दौरान शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चायल के अधीक्षक डॉ ललित कुमार, फार्मासिस्ट डॉ. राम मिलन एवं ट्रैफिक इंचार्ज कमलेश पाण्डेय ट्रेनिंग सेंटर पहुंचकर एम्बुलेंस कर्मियों का उत्साहवर्धन किया। ट्रैफिक इंचार्ज ने जहाँ एम्बुलेंस कर्मियों का रोड एक्सीडेंट को लेकर सजग रहने एवं समय पर एम्बुलेंस पहुंचने का महत्व बताया वहीं पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चायल के अधीक्षक ने गरीबों एवं जरूरतमंदो को निःशुल्क मिल रही सेवाओं का गुणगान किया। ट्रैफिक इंचार्ज ने कहा कि कई ऐसे भी एक्सीडेंट देखने को मिले जिसमें राहगीर रास्ते में जाते हुए एक्सीडेंट देखा तो तत्काल 108 एवं 112 को कॉल कर देते हैं जिससे 112 एवं 108 टीम तत्काल मौके पर पहुंचकर दुर्घटनाग्रस्त लोगों को तत्काल राहत देते हैं और समय पर अस्पताल पहुंचाते हैं जिससे बहुत लोगों की जान बच जाती है। ऐसे उत्कृष्ट कार्यों के लिए सभी एम्बुलेंस कर्मियों की सराहना की।

सरकारी विद्यालय में घटिया सामग्री से बनाया जा रहा शौचालय

कोखराज कौशाम्बी सिराथू तहसील के कशिया पश्चिम स्थित कम्पोजिट प्राथमिक विद्यालय में शौचालय निर्माण मानक के विपरीत व छोटा बनाया जा रहा था जिससे यह शौचालय उपयोग लायक नही हो सकता हैं बताया जाता है कि तीसरे दर्जे की पीली ईट से शौचालय का निर्माण कराया जा रहा है जो बेहद खराब है सीमेंट बालू का मिश्रण भी मानक के अनुसार नहीं लगाया जा रहा है लाखों रुपए की लागत से बनने वाले इस शौचालय में जमकर धांधली हो रही है लेकिन जिम्मेदार जानबूझकर अनजान बने हुए हैं और योजना से जुड़े लोग घटिया निर्माण कर लाखो रुपए की सरकारी रकम खजाने से निकाल लेना चाहते हैं गांव के लोगों ने अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करते हुए घटिया शौचालय निर्माण पर रोक लगाए जाने और घटिया निर्माण करने वाले जिम्मेदारों पर कार्यवाही किए जाने की मांग की है

बंद घर का ताला तोड़कर सोने चांदी के जेवर नगद उठा ले गए चोर

कौशांबी सैनी कोतवाली क्षेत्र के केसारी गांव में 12 सितम्बर को दिनदहाड़े बन्द घर का ताला तोड़कर घर के अंदर घुसे चोरों ने सोने चांदी के जेवर और नगद रुपए पर हाथ साफ कर दिया है घर का मालिक बगीचे पर गया हुआ था और बच्चे स्कूल गए थे जिससे घर में ताला बंद था मौके का फायदा चोरों ने उठाया है आशंका आसपास के लोगों पर है मामले की सूचना परिवार ने थाना पुलिस को दी केसारी गांव के राजेश कुमार मौर्य के मुताबिक चांदी की पेटी चांदी का छगल दो चैनपट्टी 8000 रुपए नगद और सोने का मंगलसूत्र आदि सामान दिनदहाड़े ताला तोड़कर चोर उठा ले गए हैं चोरी गए सामान की कीमत लगभग एक लाख रुपए बताई जाती है मामले की सूचना थाना पुलिस को दी गई है

एक हफ्ते से गए विकलांग का नहीं लगा सुराग

सैय्यद सरावा कौशाम्बी चायल तहसील क्षेत्र के ग्राम पहाड़पुर सुधवर गांव निवासी आकाश पाण्डेय उम्र 20 वर्ष पुत्र सत्यदेव पांडेय 5 9.2024 को अचानक घर से कही चले गए है आकाश जन्म से विकलांग है परिवार के लोगों उनकी काफी खोजबीन की है लेकिन 8 दिन बीत जाने के बाद आकाश का कहीं सुराग नहीं लगा है जिससे परिवार के लोग परेशान हैं

ट्रेन की पटरी पर लेटा युवक गंभीर रूप से घायल

महगांव कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र अंतर्गत दर्जी का पूरा गांव के सामने शुक्रवार की शाम साइकिल से आया एक युवक रेलवे लाइन के किनारे साईकिल खड़ी करके ट्रेन की पटरियों के बीच लेट गया कानपुर से प्रयागराज जा रही मालगाड़ी के लोको पायलट ने पटरियों के बीच इन्सान को देखा तो तुरन्त इमरजेंसी ब्रेक लगा दिया ब्रेक लगाते ट्रेन से युवक टकरा गया जिससे उसके शरीर में गम्भीर चोट आई है खून से लथपथ हालात में स्थानीय ग्रामीणों और रेल कर्मियों ने उसे पटरी से नीचे जमीन पर ले गए सूचना पर पहुंची संदीपन घाट पुलिस ने युवक को इलाज के अस्पताल पहुंचाया युवक की हालात गंभीर बनी है। घायल युवक की पहचान सोनू उम्र 35 वर्ष पुत्र राम निहोरे निवासी ग्राम मोहनापुर के रूप में हुई है।

बालिका विद्यालय में छेड़खानी को लेकर बवाल पहुंची पुलिस

कौशाम्बी जनपद मुख्यालय मंझनपुर के ओसा स्थित एक बालिका विद्यालय में शुक्रवार को छात्र-छात्राओं के बीच बवाल हो गया है बताया जाता है कि विद्यालय के कुछ छात्रों ने बालिकाओं से छेड़खानी कर दी है जिसके बाद विद्यालय प्रबंध तंत्र ने पुलिस बुला लिया है मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी छात्रों को अपने हिरासत में लेकर पुलिस चौकी ले गई है हालांकि बाद में दबाव पड़ने के बाद छात्रों को पुलिस चौकी से छोड़ दिया गया है बताया जाता है कि यह विद्यालय बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए पंजीकृत किया गया है लेकिन उसके बाद भी इस विद्यालय में बालकों का एडमिशन लिया जाता है जिससे बालिकाओं की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हैं विद्यालय में बवाल के बाद प्रबंध तंत्र के कारनामे पर भी बड़े सवाल खड़े हो गए हैं लेकिन उसके बाद भी जिला विद्यालय निरीक्षक ने विद्यालय प्रबंध तंत्र पर कार्यवाही नहीं की है हालांकि इस संबंध में जब विद्यालय के प्रबंधक से बात की गई तो उनका कहना है कि बालिकाओं के लिए मान्यता प्राप्त विद्यालयों में बालकों को भी शिक्षा दिए जाने का आदेश जारी किया जा चुका है इस संबंध में जिला विद्यालय निरीक्षक से बात की गई तो उन्होंने विद्यालय में किसी प्रकार के बवाल की जानकारी से अज्ञानता प्रकट की है।

सहज जनसेवा केन्द्र संचालकों के साथ डीएम ने की बैठक

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने आधार कार्ड अपडेशन, ड्राइविंग लाइसेन्स, आधार फीडिंग, नये आधार इनरोलमेन्ट के सम्बन्ध में दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने शुक्रवार को उदयन सभागार में आधार कार्ड अपडेशन, ड्राइविंग लाइसेन्स, आधार फीडिंग कार्य, नये आधार इनरोलमेन्ट के सम्बन्ध में जनपद के सहज जनसेवा केन्द्र संचालकों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दियें बैठक में जिलाधिकारी ने सम्बन्धित सहज जनसेवा केन्द्र संचालकों को निर्देशित करते हुए कहा कि आधार कार्ड अपडेशन, ड्राइविंग लाइसेन्स, आधार फीडिंग कार्य, नये आधार इनरोलमेन्ट, किसान सम्मान निधि, पेंशन एवं आयुष्मान कार्ड सहित अन्य योजनाओं से लोगों को लाभान्वित कराने के लिए आप लोगों की भी जिम्मेदारी है। बैठक में सहमति से निर्णय लिया गया कि सहज जनसेवा केन्द्र प्रातः 07 बजे से रात्रि 08 बजे तक खोले जायेंगे, इससे लोगों की भीड़ कम होगी। इसी प्रकार किसान भाइयों को किसान सम्मान निधि में आ रहीं समस्याओं के लिए मुख्यालय न आना पड़े, इसके लिए जिलाधिकारी ने उप निदेशक, कृषि को निर्देशित किया कि ब्लॉक स्तर पर कृषि विभाग से सम्बन्धित जो कर्मचारी बैठते हैं, उनके द्वारा यह कार्य किया जा सकता है, इसका कड़ाई से अनुपालन किया जाय, किसान भाई परेशान होकर इधर-उधर न भटकें। उन्होंने एआरटीओ को निर्देशित करते हुए कहा कि लोगों को ऑनलाइन ड्राइविंग लाइसेन्स बनवाने के सम्बन्ध में जागरूक किया जाय, जिससे लोगों को ड्राइविंग लाइसेन्स बनवाने में कोई परेशानी न हो, और न ही उन्हें परिवहन विभाग के बार-बार चक्कर लगाना पड़ें तथा किसी भी दलाल के झांसे में न आयें। जिलाधिकारी ने कहा कि लोगों की सुविधा के लिए सेन्टरों की सूची यथा-पंजाब नेशनल बैंक समदा रोड मंझनपुर, ब्लॉक परिसर सरसवॉ, बैंक ऑफ बड़ौदा पश्चिम शरीरा, आईसीसीआई बैंक सिराथू, बड़ौदा यूपी बैंक सैनी, इण्डियन बैंक सिराथू, बीआरसी सिराथू, ब्लॉक परिसर कड़ा, एसबीआई मंझनपुर, बीआरसी मंझनपुर, बीएसएनएल कार्यालय नया नगर प्रथम मंझनपुर, चक नगर मंझनपुर, बड़ौदा यूपी बैंक भरवारी, जिला पंचायत परिसर मंझनपुर, बैक आफ बड़ौदा ओसा, इण्डियन बैंक मंझनपुर, सीएससी आधार सेन्टर समदा, बीआरसी कौशाम्बी, बड़ौदा यूपी बैंक भरवारी, विसारा भरवारी, सराय अकिल बड़ौदा, बीआरसी नेवादा, ब्लॉक परिसर चायल एवं बड़ौदा यूपी बैंक तिल्हापुर मोड़ उपलब्ध करायी जा रहीं है। इसके साथ ही इस सूची को तहसील परिसर, विकास खण्ड परिसर, सभी सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी चस्पा किया जाय।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी रवीन्द्र कुमार जायसवाल, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी कमलेन्द्र कुमार कुशवाहा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण एवं सहज जनसेवा केन्द्र संचालक सर्वेश कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित रहें।

झूंसी प्रयागराज रेलवे ट्रैक के पास मिला अझुवा के युवक का शव

अझुवा कौशांबी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा वार्ड नंबर 11 टांडा रोड के एक युवक का झूंसी प्रयागराज रेलवे ट्रैक के पास संदिग्ध परिस्थितियों में सिर कटा शव मिला है जीआरपी प्रयागराज की सूचना पर मौके पर पहुंचे परिजनों में कोहराम मच गया। जानकारी के अनुसार सुनील कुमार पुत्र स्व. विनोद कुमार निवासी वार्ड नंबर 11 नेता नगर अपने भाई जितेंद्र के साथ सिराथू क्षेत्र स्थित महिंद्रा में काम करते थे बीती शाम दोनो भाई 7 बजे घर वापस लौटे थे परिजनों ने बताया सुनील लगभग 8 बजे परिजनों को जानकारी देते हुए बताया कि बाजार में कुछ काम है थोड़ी देर में वापस आता हूं ।ये कहकर चला गया और पूरी रात परिजन इंतजार करते रह गए आज शुक्रवार 11.30 बजे परिजनों के पास जीआरपी प्रयागराज का फोन आया कि एक युवक का सिर कटा शव प्रयागराज झूंसी स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक के पास मिला है जिसकी आधार कार्ड से शिनाख्त हुई है ये सुनकर परिजनों में कोहराम मच गया रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंच गए हैं।परिजनों के अनुसार शव को प्रयागराज में ही अंतिम संस्कार होगा हत्या हुई या कोई अनहोनी इस विषय में जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी है।

गंगा नहाकर वापस जा रहे दो युवक सड़क दुर्घटना में घायल

कौशाम्बी। कड़ा थाना अंतर्गत गिरधरपुर गढ़ी गाँव के पास बाइक सवार दो युवक एक ही बाइक पर बैठकर वापस अपने घर जा रहे थे, अचानक एक दोपहिया वाहन चारपाहिया को ओवरटेक किया। ओवरटेक कर रहे बाइक की हैंडल इनकी बाइक में छू गयी जिससे बाइक अनियंत्रित होकर चारपहिया से जा भिड़ी हादसे में फतेहपुर जिले के निवासी सोनू यादव उम्र 26 वर्ष पुत्र शत्रुघ्न एवं बाँदा जिले के निवासी अमन पटेल उम्र 27 वर्ष पुत्र सुरेश गंभीर रूप से घायल हो गए। आनन फानन में दोनों को 108 एम्बुलेंस द्वारा नजदीकी सरकारी अस्पताल कड़ा ले जाया गया जहाँ से डॉक्टर्स के ना रहने पर स्वास्थ्य कर्मियों ने प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दोनों को गंभीर चोटे आई हैं और दोनों का पैर टूट गया है। घर वालों को दुर्घटना की सूचना दे दी गयी है।

डीएम के निरीक्षण में उजागर हुई छात्र-छात्राओं के उपस्थित की खराब स्थिति

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने शुक्रवार को विकास खण्ड-कौशाम्बी के प्राथमिक विद्यालय-मढ़ी, उच्च प्राथमिक विद्यालय-चक सतारगंज, उच्च प्राथमिक विद्यालय-रसूलपुर बड़गांव एवं ऑगनबाड़ी केन्द्र-हकीमपुर का आकस्मिक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने विद्यालयों के निरीक्षण के दौरान डिजिटल उपस्थिति रजिस्टर, छात्र-छात्राओं की उपस्थिति, साफ-सफाई एवं भोजन की गुणवत्ता सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को देखा। निरीक्षण के दौरान छात्र-छात्राओं की उपस्थिति कम पायी गई, जिस पर जिलाधिकारी ने प्रधानाध्यापकों से कहा कि छात्र-छात्राओं की संख्या बढ़ाने के लिए स्वंय प्रयास करें व जो छात्र-छात्रायें विद्यालय नहीं आ रहें है, उनके अभिभावकों से मिलकर उन्हें विद्यालय भेजने के लिए जागरूक करें। उन्होंने सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को निर्देशित किया कि छात्र-छात्राओं की निपुणता पर विशेष ध्यान दिया जाय। उन्होंने छात्र-छात्राओं से संवाद कर प्रश्न पूँछा, जिसका बच्चों द्वारा सही जवाब दिया गया, जिस पर जिलाधिकारी ने बच्चां की तारीफ कर उनका उत्साहवर्धन किया। इसके साथ ही उन्होंने अध्यापकों की भी तारीफ की। उन्होंने प्रधानाध्यापकों को निर्देशित किया की बच्चों को मानक के अनुसार ही गुणवत्तापूर्ण मिड-डे मील प्रदान किया जाय। उन्होंने अध्यापकों से कहा कि डिजिटल क्लॉस पर विशेष ध्यान दिया जाय। ऑगनबाड़ी केन्द्र के निरीक्षण के दौरान वहाँ पर बच्चे उपस्थित नहीं पाये गये, जिस पर जिलाधिकरी ने नाराजगी व्यक्त की।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर नगर पालिका में होगा स्वच्छता अभियान का शुभारंभ

भरवारी कौशांबी। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर से स्वच्छता अभियान का शुभारंभ नगर पालिका परिषद भरवारी में पूर्व चेयरमैन कैलाश केसरवानी की गद्दी बस स्टॉप के पीछे प्राथमिक विद्यालय से किया जाएगा उक्त आशय की जानकारी अधिशासी अधिकारी राम सिंह ने दी है स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम गांधी जयंती 2 अक्टूबर तक प्रतिदिन नगर पालिका भरवारी में चलेगा और कार्यक्रम का समापन मिनी स्टेडियम में होगा स्वच्छता अभियान की सफलता को लेकर 12 सितंबर को नगर पालिका में चेयरमैन कविता पासी की अध्यक्षता में बैठक भी हो चुकी है जिसमें नगर पालिका के सभासद और कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्कूली छात्राओं से छेड़खानी के बाद पीड़ित परिजनों ने डीएम एसपी से की फरियाद

कौशांबी। बालिकाओं महिलाओं की सुरक्षा को लेकर थाना पुलिस से लेकर महिला थाना पुलिस तक प्रत्येक दिन जागरूकता अभियान चला रही है हेल्पलाइन नंबर बालिकाओं महिलाओं को उपलब्ध करा रही है लेकिन उसके बाद भी मनचलों पर ठोस कार्रवाई नहीं हो रही है जिससे मनचलों के हौसले बुलंद है और स्कूल में पढ़ने वाली बालिकाओं से छेड़खानी करने से मनचले बाज नहीं आते हैं हद तो तब हो गई जब मनचलों पर कार्यवाही करने की बजाए थाना पुलिस पीड़ित बालिकाओं के परिजनों को ही धमकाने पर उतावली है छेड़खानी के मामले में पीड़ित परिजनों से थाना पुलिस का कहना है कि बालिकाओं का मेडिकल टेस्ट कराया जाएगा क्यों लफड़े में पड़ते हो अब सवाल उठता है कि छेड़खानी के मामले में बालिकाओं का कौन सा मेडिकल टेस्ट होगा थानेदार को यह कौन बताएगा कि छेड़खानी में मेडिकल जांच नही होती है। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के एक स्कूल की छात्राओं के घर जाते वक्त रास्ते मे उन्हें मनचले रोक लेते हैं और उनसे उनका मोबाइल नंबर मांगा जा रहा है और अपना मोबाइल नंबर उन्हें दिया जा रहा है बालिकाएं इस बात का विरोध कर रही हैं लगातार तीन दिनों से बालिकाओं के साथ यह घटनाएं हो रही है आरोपी युवक एक प्रधान का भतीजा बताया जाता है मामले को लेकर शुक्रवार को स्कूल की दर्जनों छात्राएं परिजनों के साथ पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुँची है जहां आरोपी युवक के चाचा ग्राम प्रधान भी पहुंच गए और बालिका के परिजनों को जमकर हड़काया है अब सवाल उठता है कि आरोपी के चाचा कितने दबंग है कि थाने में दबंगई करने के बाद पुलिस अधीक्षक कार्यालय में भी पीड़ितों पर दबाव बनाने पहुंच गए हैं एसपी कार्यालय के बाद बालिकाएं जिलाधिकारी कार्यालय भी फरियाद लेकर पहुंची है मामले में बालिकाएं जब पुलिस थाना पहुँची तो थानेदार ने मुकदमा नहीं दर्ज किया आरोपी युवको की गिरफ्तारी नहीं की बल्कि बालिकाओं के परिजनों पर थाना पुलिस ने दबाव बनाना शुरू कर दिया है जिससे मनचलों के हौसले बुलंद है मनचले बालिकाओं को धमकी दे रहे है कि बर्बाद कर देंगे स्कूल से उठा लेगे घर से उठा ले जाएंगे जिससे स्कूल की बालिकाएं सहमी हुई है स्कूल की छात्राओं के साथ छेड़खानी किए जाने और उसके बाद थाना पुलिस द्वारा मुकदमा न दर्ज किए जाने के बाद बालिकाओं महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चलाए जाने वाले मिशन शक्ति अभियान पर एक बार फिर बड़े सवाल खड़े हो गए हैं।

सम्पादकीय

14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया

14 सितंबर को हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्यों कि इसी दिन यानी कि 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। वास्तव में सितंबर का महीना विशेष रूप से हिंदी को समर्पित है और इस महीने में हम सभी हिंदी में अधिकाधिक सरकारी कामकाज करने का संकल्प भी लेते हैं। हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा के दौरान देश के प्रत्येक केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी पर अनेक प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों, सेमिनारों का आयोजन किया जाता है और पुरस्कार भी बांटे जाते हैं। हम न केवल सरकारी कामकाज करने में बल्कि अपने दैनिक जीवन में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का संकल्प लेते हैं ,लेकिन यहां यह विचार करने की आवश्यकता है कि आखिर क्या कारण हैं कि एक हिंदी बाहुल्य वाले देश में हमें हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए दिवस मनाना पड़ रहा है और इसके अधिकाधिक प्रचार प्रसार के लिए पुरस्कार तक बांटने पड़ रहे हैं। वास्तव में यदि हमें हिंदी भाषा का विकास करना है तो हमें संविधान की आठवीं अनुसूची में निहित सभी भारतीय भाषाओं को एक साथ लेकर चलना होगा। हिंदी को सभी भारतीय भाषाओं से शब्द अपने में समाहित करने होंगे तभी इसका शब्दकोश और अधिक व्यापक बन सकेगा। विकीपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार अनुच्छेद 351 'भारत के संविधान का एक अनुच्छेद है। यह संविधान के भाग 17 में शामिल है और संघ की राजभाषा के विशेष निदेश का वर्णन करता है। यह अनुच्छेद हिंदी भाषा के प्रसार और विकास को सुनिश्चित करता है और साथ ही इस उद्देश्य हेतु संघ या राष्ट्रीय सरकार के कर्तव्यों को भी व्याख्यायित करता है। इस अनुच्छेद में यह कहा गया है कि संघ को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हिंदी भारत के विविध सांस्कृतिक तत्वों के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसमें हिंदी की विशिष्ट विशेषताओं हिंदुस्तानी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं और भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भाषाओं में उपयोग किए जाने वाले रूपों, शैली और अभिव्यक्तियों को बदले बिना आत्मसात करने का निर्देश दिया गया है। इस अनुच्छेद में यह भी वर्णित है कि संघ को संस्कृत पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ-साथ जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ अन्य भाषाओं की शब्दावली का उपयोग करके हिंदी को समृद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।' दरअसल, आज अंग्रेजी भाषा को ही हम अधिक महत्व दे रहे हैं, क्यों कि एक आम सोच यह विकसित हो चुकी है कि अंग्रेजी के बिना कोई भी काम नहीं चल सकता है, जबकि यह सोच बहुत ही तुच्छ और गलत है। भाषा कोई भी हो,कभी अच्छी व बुरी नहीं होती है। सभी भाषाएं अपने आप में अच्छी हैं और उनका अपना शब्दकोश व व्याकरण है। हिंदी का अपना एक व्यापक शब्दकोश है और एक-एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द हैं। हिन्दी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है।

हिन्दी है भारत के मस्तक का तिलक

- ललित गर्ग-

सम्पूर्ण भारत में 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई और आज इस दिवस की अधिक प्रासंगिकता क्यों उभर रही है? क्योंकि हमारे देश में दिन-प्रतिदिन हिंदी की उपेक्षा होती जा रही है। राजनीतिक कारणों से हिन्दी को विवादों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी की राह में यूं तो कई बाधाएं हैं, लेकिन सबसे बड़ी बाधा शासन में उसकी उपेक्षा और अंग्रेजीदां नौकरशाही का वर्चस्ववादी रवैया है। हिन्दी पर अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हिन्दी राष्ट्रीयता की प्रतीक भाषा है इसलिये हिन्दी को उचित सम्मान देते हुए, उसको राजभाषा बनाने एवं राष्ट्रीयता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठापित करना हिन्दी दिवस की प्राथमिकता होना ही चाहिए।

आजादी के अमृतकाल तक पहुंचने के बावजूद हिन्दी को उसका उचित स्थान न मिलना विडम्बना एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत से ठीक दो वर्ष पहले 17 अगस्त 1945 को इंडोनेशिया डच शासन से मुक्त हुआ और अपनी भाषा ह्यबहासा इंडोनेशियाह्ल को राष्ट्रभाषा के रूप में लागू कर दिया। कुछ इसी तरह 23 अक्टूबर 1923 को जब आधुनिक तुर्की गणराज्य की स्थापना हुई, तो तत्काल तुर्की भाषा को राजकाज की भाषा के रूप में लागू कर दिया। आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली तीसरी भाषा है, विश्व में हिन्दी की प्रतिष्ठा एवं प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन देश में उसकी उपेक्षा एक बड़ा प्रश्न है। सच्चाई तो यह है कि देश में हिंदी अपने उचित सम्मान को लेकर जूझ रही है। राजनीति की दूषित एवं संकीर्ण-स्वार्थी सोच का परिणाम है कि हिन्दी को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान राष्ट्र में अंग्रेजी को मिल रहा है। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा क्योंकि भारत और अन्य देशों में 120 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी भारत में प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों?

हिंदी की राह आजादी के बाद ज्यादा जटिल बनी है। आजादी से पहले ज्यादा बाधाएं नहीं थीं। इसी कारण भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सूत्रधार महात्मा गांधी स्वयं हिंदी के हिमायती थे। उनके पहले केशव चंद्र सेन, लोकमान्य तिलक जैसी हस्तियां भी देश के हृदयों को नजदीक लाने में हिंदी को ही सक्षम एवं प्रभावी मानते थे। स्वतंत्रता संग्राम के इन महानायकों ने भावी भारत की भाषायी जरूरतों के लिहाज से हिंदी को तैयार करने की कोशिश भी की। लेकिन आजाद भारत में हिन्दी की दशा एवं दिशा ज्यादा चिन्ताजनक बनी है। महात्मा गांधी ने अपनी अन्तर्वेदना प्रकट करते हुए कहा था कि भाषा संबंधी आवश्यक परिवर्तन अर्थात हिन्दी को लागू करने में एक दिन का विलम्ब भी सांस्कृतिक हानि है। मेरा तर्क है कि जिस प्रकार हमने अंग्रेज लुटेरों के राजनैतिक शासन को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया, उसी प्रकार सांस्कृतिक लुटेरे रूपी अंग्रेजी को भी तत्काल निर्वासित करें।ह्ल हिन्दी के लिये इस तरह का दर्द, संवेदना एवं अपनापन हर नागरिक में जागना जरूरी है।

वर्तमान में हिन्दी की दयनीय दशा देखकर मन में प्रश्न खड़ा होता है कि कौन महापुरुष हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न करेगा? हिन्दी राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र का प्रतीक है, उसकी उपेक्षा एक ऐसा प्रदूषण है, एक ऐसा अंधेरा है जिससे छांटने के लिये ईमानदार प्रयत्न करने होंगे। क्योंकि हिन्दी ही भारत को सामाजिक-राजनीतिक-भौगोलिक और भाषायिक दृष्टि से जोड़नेवाली भाषा है। हिंदी को दबाने की नहीं, ऊपर उठाने की आवश्यकता है। राष्ट्र भाषा सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक और भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रमुख साधन है। भारत का परिपक्व लोकतंत्र, प्राचीन सभ्यता, समृद्ध संस्कृति तथा अनूठा संविधान विश्व भर में एक उच्च स्थान रखता है, उसी तरह भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक राष्ट्र भाषा हिन्दी को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी ही चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन में हिन्दी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में स्कूलों, कॉलेजों, अदालतों, सरकारी कार्यालयों और सचिवालयों में कामकाज एवं लोकव्यवहार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

हालांकि इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल ने हिंदी भाषा के भविष्य के संबंध में नई राहें दिखाई है। गूगल के अनुसार भारत में अंग्रेजी भाषा में जहाँ विषयवस्तु निर्माण की रफ्तार 19 फीसदी है तो हिंदी के लिए ये आंकड़ा 94 फीसदी है। इसलिए हिंदी को नई सूचना-प्रौद्योगिकी की जरूरतों के मुताबिक ढाला जाए तो ये इस भाषा के विकास में बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के स्तर पर तो प्रयास किए ही जाने चाहिए, निजी स्तर पर भी लोगों को इसे खूब प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बात चाहे राष्ट्र भाषा की हो या राष्ट्र गान या राष्ट्र गीत- इन सबको समूचे राष्ट्र में सम्मान एवं स्वीकार्यता मिलनी चाहिए। कुछ राजनीतिज्ञ अपना उल्लू सीधा करने के लिये भाषायी विवाद खड़े करते रहे हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं। यह देश के साथ मजाक है। जब तक राष्ट्र के लिये निजी-स्वार्थ को विसर्जित करने की भावना पुष्ट नहीं होगी, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक उन्नयन एवं सशक्त भारत एवं विकसित भारत का नारा सार्थक नहीं होगा। हिन्दी को सम्मान एवं सुदृढ़ता दिलाने के लिये केन्द्र सरकार के साथ-साथ प्रांतों की सरकारों को संकल्पित होना ही होगा। नरेन्द्र मोदी ने विदेशों में हिन्दी की प्रतिष्ठा के अनेक प्रयास किये हैं, लेकिन उनके शासन में देश में यदि हिन्दी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित नहीं किया जा सका तो भविष्य में इसकी उपेक्षा के बादल घनघोर ही होंगे, यह एक दिवास्वप्न बनकर रह जायेगा। हाल में कर्नाटक एवं तमिलनाडू में हिन्दी विरोध की स्थितियां उग्र बनी। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी दक्षिण भारत में इसकी इतनी उपेक्षा क्यों? क्षेत्रीय भाषा के नाम पर हिन्दी की अवमानना एवं उपेक्षा के दृश्य उभरते रहे हैं, लेकिन प्रश्न है कि हिन्दी को इन जटिल स्थितियों में कैसे राष्ट्रीय गौरव प्राप्त होगा। भाषायी संकीर्णता न राष्ट्रीय एकता के हित में है और न ही प्रान्त के हित में। प्रान्तीय भाषा के प्रेम को इतना उभार देना, जिससे राष्ट्रीय भाषा के साथ टकराहट पैदा हो जाये, यह देश के लिये उचित कैसे हो सकता है? दरअसल बाजार और रोजगार की बड़ी संभावनाओं के बीच हिंदी विरोध की राजनीति को अब उतना महत्व नहीं मिलता, क्योंकि लोग हिंदी की ताकत को समझते हैं। पहले की तरह उन्हें हिंदी विरोध के नाम पर बरगलाया नहीं जा सकता। हिन्दी भाषा का मामला भावुकता का नहीं, ठोस यथार्थ का है, राष्ट्रीयता का है। हिन्दी विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है, यह हमारे अस्तित्व एवं अस्मिता की भी प्रतीक है, यह हमारी राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की भी प्रतीक है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से आक्सीजन लेने वाले दल एवं नेता भी अंग्रेजी में दहाड़ते देखे गये हैं। राजनेता बात हिन्दी की करते हैं, पर उनका दिमाग अंग्रेजीपरस्त है, क्या यह अन्तर्विरोध नहीं है? हिन्दी को वोट मांगने और अंग्रेजी को राज करने की भाषा बनाना हमारी राष्ट्रीयता का अपमान नहीं हैं? कुछ लोगों की संकीर्ण मानसिकता है कि केन्द्र में राजनीतिक सक्रियता के लिये अंग्रेजी जरूरी है। महात्मा गांधी ने सही कहा था कि राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।ह्ल यह कैसी विडम्बना है कि जिस भाषा को कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे भारत में समझा जाता हो, उसकी घोर उपेक्षा हो रही है, हिन्दी दिवस पर इन त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति को नरेन्द्र मोदी सरकार कुछ ठोस संकल्पों एवं अनूठे प्रयोगों से दूर करने के लिये प्रतिबद्ध हो, हिन्दी को मूल्यवान अधिमान दिया जाये। ऐसा होना हमारी सांस्कृतिक परतंत्रता से मुक्ति का एक नया इतिहास होना।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हिन्दी और देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में अनेक क्षेत्रों में प्रयास हुये

रमेश सर्राफ धमोरा

किसी भी देश की भाषा और संस्कृति उस देश में लोगों को लोगों से जोड़े रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हिन्दी और देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में अनेक क्षेत्रों में प्रयास हुये हैं। हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा भी हैं। अतः हम कह सकते है की हिन्दी एक समृद्ध भाषा हैं। भारत की राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने में हिन्दी भाषा का बहुत बड़ा योगदान हैं।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है। बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी का जनक कहा जाता है। जिन्होंने हिंदी, पंजाबी, बंगाली और मारवाड़ी सहित कई भाषाओं में अपना योगदान दिया था।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय के बाद 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाते लगा है जो हिंदी भाषा के महत्व को दशार्ता है। पिछले 71 सालों से हम प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाते आ रहे हैं। इस वर्ष भी मनायेगें।

यदि हम हिंदी भाषा के विकास की बात करें तो यह कहना गलत नहीं होगा कि पिछले सौ सालों में हिंदी का बहुत विकास हुआ है और दिन-प्रतिदिन इसमें और तेजी आ रही है। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे देवभाषा भी कहा जाता है। माना जाता है कि हिंदी का जन्म भी संस्कृत भाषा से हुआ है। भारत में धर्म, परंपराओं और भाषा में विविधता के बावजूद यहां के लोग एकता में विश्वास रखते हैं। भारत में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। लेकिन सबसे ज्यादा हिंदी भाषा बोली, लिखी व पढ़ी जाती है। इसीलिए हिंदी भारत की सबसे प्रमुख भाषा है।

अंग्रेजी व चीनी भाषा मंदारिन के बाद हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। नेपाल, पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी को हिंदी बोलना, लिखना, पढना आता है। बांग्लादेश, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश की सरकारे तो हिंदी भाषियों द्वारा ही चलायी जा रही हैं। पूरी दुनिया में हिंदी भाषियों की संख्या करीबन एक सौ करोड़ से अधिक है।

हिन्दी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, और दिल्ली राज्यों की राजभाषा भी है। राजभाषा बनने के बाद हिन्दी ने विभिन्न राज्यों के कामकाज में लोगों से सम्पर्क स्थापित करनें का अभिनव कार्य किया है। लेकिन विश्व भाषा बनने के लिए हिन्दी को अब भी संयुक्त राष्ट्र के कुल सदस्यों के दो तिहाई देशों के समर्थन की आवश्यकता है। भारत सरकार इस दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। हम संभावनाएं जता सकते हैं कि शीघ्र ही हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा में शामिल कर लिया जायेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी विदेश यात्रा के दौरान अधिकतर अपना सम्बोधन हिन्दी भाषा में ही देते हैं। जिससे हिन्दी भाषा का महत्व विदेशी धरती पर भी बढ़ने लगा है। हिन्दी के ज्यादातर शब्द संस्कृत, अरबी और फारसी भाषा से लिए गए हैं। यह मुख्य रूप से आर्यों और पारसियों की देन है। इस कारण हिन्दी अपने आप में एक समर्थ भाषा है। जहां अंग्रेजी में मात्र 10 हजार मूल शब्द हैं। वहीं हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या 2 लाख 50 हजार से भी अधिक है। हिन्दी विश्व की एक प्राचीन,समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ हमारी राजभाषा भी है। भारत की मातृ भाषा हिन्दी को सम्मान देने के लिये प्रति वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिन्दी ने भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के सभी माध्यमों में अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। हिन्दी की यह स्थिति हिन्दी भाषियों और हिन्दी समाज की देन है। लेकिन हिन्दी भाषा समाज का एक तबका हिन्दी की दुर्गति के लिए भी जिम्मेदार है। अंग्रेजी बोलने वाला ज्यादा ज्ञानी और बुद्धिजीवी होता है। यह धारणा हिन्दी भाषियों में हीन भावना लाती है। जिंदगी में सफलता पाने के लिये हर कोई अंग्रेजी भाषा को बोलना और सीखना चाहता है। हिन्दी भाषी लोगों को इस हीन भावना से उबरना होगा, क्योंकि मौलिक विचार मातृभाषा में ही आते हैं। शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होनी चाहिए। शिक्षा विचार करना सिखाती है और मौलिक विचार उसी भाषा में हो सकता है जिस भाषा में आदमी जीता है। हमें अहसास होना चाहिये कि हिन्दी दुनिया की किसी भी भाषा से कमजोर नहीं है।

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैंकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध के स्तर तक हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है। विदेशों से हिन्दी में दर्जनों पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। हिन्दी भाषा और इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर सुदृढ और समृद्ध है। इसके विकास की गति बहुत तेज है।

आदिकाल से अब तक हिन्दी के आचार्यों, सन्तों, कवियों, विद्वानों, लेखकों एवं हिन्दी-प्रेमियों ने अपने ग्रन्थों, रचनाओं से हिन्दी को समृध्द किया है। परन्तु हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने विचारों, भावों एवं मतों को विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी में अभिव्यक्त करें एवं इसकी समृध्दि में अपना योगदान दें। कोई भी भाषा तब और भी समृध्द मानी जाती है जब उसका साहित्य भी समृध्द हो।

हिंदी भाषा एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए बहुत आसान और सरल माध्यम प्रदान करती है। यह प्रेम, मिलन और सौहार्द की भाषा है। हिन्दी विविध भारत को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह कैसी विडम्बना है कि जिस भाषा को कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे भारत में समझा जाता हो। उस भाषा के प्रति आज भी इतनी उपेक्षा व अवज्ञा क्यों ? प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। इसलिए इसे सामान्य जनता की भाषा अर्थात जनभाषा कहा गया है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के एक साथ विकास के कारण हिन्दी ने कहीं ना कहीं अपना महत्ता खो दी है। आज हिन्दी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन तेजी से बढ़ने लगा है। बहुत से बड़े समाचार पत्रों में भी अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी का उपयोग किया जाने लगा है। जो हिन्दी भाषा के लिये शुभ संकेत नहीं हैं। रही सही कसर सोशल मीडिया ने पूरी कर दी है। जहां सॉफ्टवेयर की मदद से रूपांतर कर अंग्रेजी से हिन्दी भाषा बनायी जाती है। जिसमें ना मात्रा का ख्याल रहता है और ना ही शुद्ध वर्तनी का। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के समाचार पत्र व पत्रिकायें धड़ाधड़ बंद हो रहें हैं। हिन्दी दिवस के अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिये की हम पूरे मनोयोग से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना निस्वार्थ सहयोग प्रदान कर हिन्दी भाषा के बल पर भारत को फिर से विश्व गुरु बनवाने का सकारात्मक प्रयास करेंगें। अब तो कम्प्यूटर पर भी हिन्दी भाषा में सब काम होने लगे हैं। कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा के अनेको सॉफ्टवेयर मौजूद हैं जिनकी सहायता से हम आसानी से कार्य कर सकते हैं।

क्षमा है युद्ध एवं शत्रुता का समाधान

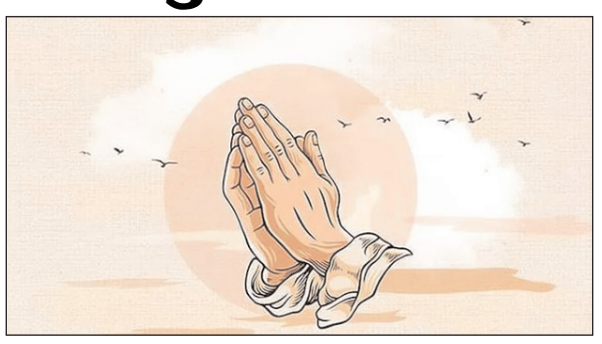

-देवेन्द्र ब्रह्मचारी -

दिगम्बर जैन समाज का सबसे अहम आत्म शुद्धि का महापर्व दशलक्षण पर्व इस वर्ष भादो सुदी पंचमी 8 सितम्बर से प्रारंभ होकर अनंत चतुर्दशी 17 सितम्बर तक मनाया जा रहा है। उत्तम क्षमा से प्रारम्भ होकर क्षमावाणी पर्व पर यह संपन्न होगा, दस दिनों तक क्रमशः दस धर्मों की आराधना की जाती है। पूरे विश्व के दिगम्बर जैन धर्म के अनुयायी इस पर्व को बड़े ही उत्साह व आत्मीयता से मनाते है। दशलक्षण पर्व के दिनों में क्रमशः उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन तथा उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की आराधना की जाती है। ये सभी आत्मा के धर्म हैं, क्योंकि इनका सीधा सम्बन्ध आत्मा के कोमल परिणामों से हैं। इस पर्व का एक वैशिष्ट्य है कि इसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर आत्मा के गुणों से है। इस प्रकार यह गुणों की आराधना का पर्व है। इन गुणों से एक भी गुण की परिपूर्ण हो जाये तो मोक्ष तत्व की उपलब्धि होने में किंचित भी संदेह नहीं रह जाता है। मानव इन दस धर्म को अपने जीवन मे अपनाकर अपने जीवन का धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत रूप से उन्नयन कर सकता है, इन दिनों मे सभी दिगम्बर जैन मंदिरों मे प्रातः से ही भक्तों का अम्बार लग जाता है।

उत्तम क्षमा से प्रारम्भ होने वाला यह पर्व अश्विन कृष्ण एकम को क्षमावाणी पर्व पर सम्पन्न होता है, क्षमावाणी दिवस पर सबसे अपने भूलों की क्षमा याचना की जाती है। इस दिन श्रावक (गृहस्थ) और साधु दोनों ही वार्षिक प्रतिक्रमण करते हैं। पूरे वर्ष में उन्होंने जाने या अनजाने यदि संपूर्ण ब्रह्मांड के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति यदि कोई भी अपराध किया हो, तो उसके लिए वह उनसे क्षमा याचना करता है। अपने दोषों की निंदा करता है और कहता है- मेरे सभी दुष्कृत्य मिथ्या हो जाएं। क्षमावाणी पर्व पर हर मंदिरों मे क्षमावाणी अभिषेक के पश्चात क्षमावाणी पर्व मनाया जाता है, इसके माध्यम से एक दूसरे के हृदय की मलीनता दूर की जाती है। क्षमा आत्मा का स्वभाव है। क्षमा पृथ्वी का नाम है। जिस प्रकार पृथ्वी तरह-तरह के बोझ को सहन करती है, इसी प्रकार चाहे कैसी भी विषम परिस्थिति आए, उसमें भी अपने मन को स्थिर रखना, अपने भीतर क्रोध रूप परिणत न करना क्षमा है। उत्तम क्षमा के धारक पुरूष को मात्र अपने आत्मा की शुद्धि ही साध्य है। क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा तप है, क्षमा पवित्रता है, क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत को धारण कर रखा है।

क्षमा को धारण करने वाले इंसान ऋजु होते हैं, उनके कर्म संस्कार क्षय होते हैं जबकि जो कुटिल होते हैं, उनके कर्म संस्कार संचित रहते हैं। हंस और बगुला लगभग एक से लगते हैं, किंतु उन दोनों के स्वभाव में बडा अंतर होता है। यही कारण है कि हंस से लोग प्रेम करते हैं और बगुले से द्वेष करते हैं। जिस प्रकार बीज बोने के लिए जमीन पर हल, चलाकर उसे अच्छी तरह जोतकर तथा कूड़ा-करकट से रहित कर साफ किया जाता है उसी प्रकार क्षमा रूपी बीज का वपन करके मन रूपी भूमि को मांजा जाता है एवं आत्मा की निर्मलता के द्वारा उत्तम चरित्र रूपी फल की उपलब्धि सुनिश्चित की जाती है। दुनिया में आज जितने भी अनर्थ और पापकर्म होते हैं, चाहे हिंसा के रूप में हो, आतंक के रूप में हो, शोषण के रूप में हो वे सब क्षमा के अभाव में ही होते हैं। जो परस्त्री और परपदार्थों के प्रति निःस्पृह है, समस्त प्राणियों के प्रति जिसका चित्त अहिंसक है और जिसने दुर्भेद्य अंतरंग मन को धो लिया है ऐसा पवित्र हृदय ही क्षमा धर्म की पात्रता को धारण कर सकता है। यदि कोई व्यक्ति इस पवित्र एवं पावन दिवस पर भी दिल में उलझी गांठ को नहीं खोलता है, तो वह अपने सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में प्रश्न चिन्ह खड़ा कर लेता है। क्षमायाचना करना, मात्र वाचिक जाल बिछाना नहीं है। परंतु क्षमायाचना करना अपने अंतर को प्रसन्नता से भरना है। बिछुड़े हुए दिलों को मिलाना है, मैत्री एवं करुणा की स्रोतस्विनी बहाना है। गलती करना मानवोचित्त है, लेकिन क्षमा करना देवतोचित्त है।

मैत्री पर्व का दर्शन बहुत गहरा है। मैत्री तक पहुंचने के लिए क्षमायाचना की तैयारी जरूरी है। क्षमा लेना और क्षमा देना मन परिष्कार की स्वस्थ परम्परा है। क्षमा मांगने वाला अपनी कृत भूलों को स्वीकृति देता है और भविष्य में पुनः न दुहराने का संकल्प लेता है जबकि क्षमा देने वाला आग्रह मुक्त होकर अपने ऊपर हुए आघात या हमलों को बिना किसी पूर्वाग्रह या निमित्तों को सह लेता है। क्षमा ऐसा विलक्षण आधार है जो किसी को मिटाता नहीं, सुधरने का मौका देता है। भगवान महावीर ने कहा-ह्यअहो ते खंति उत्तमाह्ल-क्षांति उत्तम धर्म है। ह्यतितिक्खं परमं नच्चाह्ल-तितिक्षा ही जीवन का परम तत्व है, यह जानकर क्षमाशील बनो। तथागत बुद्ध ने कहा-क्षमा ही परमशक्ति है। क्षमा ही परम तप है। क्षमा धर्म का मूल है। क्षमा के समकक्ष दूसरा कोई भी तत्व हितकर नहीं है। क्योंकि प्रेम, करुणा और मैत्री के फूल सहिष्णुता और क्षमा की धरती पर ही खिलते हैं। ह्यसबके साथ मैत्री करोह्ल यह कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है किंतु हम वर्तमान संबंधों को बहुत सीमित बना लेते हैं।

भारत की संस्कृति में ह्यवसुधैव कुटुम्बकम्ह्ल समूची वसुधा कुटुम्ब है, सारा विश्व एक परिवार है, का उद्घोष हुआ। यह महावीर की अहिंसा एवं बुद्ध की करुणा से प्रेरित उद्घोष है, जो विश्व मैत्री को बल देता है। ह्यमित्ती में सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणईह्ल- यह सार्वभौम अहिंसा एवं सौहार्द का ऐसा संकल्प है जहां वैर की परम्परा का अंत होता है। क्षमा वाणी के दिन सभी से शत्रुता, नफरत एवं द्वेष को मिटा कर गले लगाने का दिन है। यह दिलों को जोड़ने का पर्व है, यह आत्मा को निर्मल बनाने का पर्व है। दस दिनों की कठोर साधना एवं क्षमावाणी का घोष मानवीय संवेदनाओं को जागृत करने की एक विलक्षण साधना है। क्षमा देने एवं क्षमा लेने की यह विलक्षण साधना तनावमुक्ति का विशिष्ट प्रयोग है ।

कलवलिया गांव में गांव की समस्या गांव में समाधान कार्यक्रम सम्पन्न

डीएम ने समस्याओं के निदान को दिया भरोसा

अखंड भारत संदेश

चौपाल में समस्यायें सुनते डीएम-सीडीओ।

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने पहाड़ी ब्लाक के कलवलिया गांव में गांव की समस्या गांव में समाधान कार्यक्रम के तहत पंचायत भवन प्रांगण में जन चौपाल का आयोजन किया।

शुक्रवार को जिलाधिकारी ने ग्रामीणों से कहा कि गांव में जन चौपाल लगाकर समस्याओं का निस्तारण गांव में ही कराया जा रहा है। गांव में अधिकारी अच्छी मंशा से आये हैं। जल जीवन मिशन की सड़क जो गांव की कटी है, उसका निरीक्षण कर निर्माण कराया जाएगा। प्रभारी चिकित्साधिकारी से कहा कि गांव में कैंप लगाकर शत-प्रतिशत टीकाकरण करया जाये। बाल विकास परियोजना अधिकारी पहाड़ी महेन्द्र कुमार से कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से जो योजना संचालित हैं, उसका लाभ दिलायें। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी से शत-प्रतिशत गौवंशों का संरक्षण कराने को कहा। किसानों की फसलों की क्षति न हो सके। प्रधानमंत्री आवास योजना में पैसा लेने की शिकायत पर परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में टीम बनाकर जांच कराई जाएगी। पात्र लोगों को प्रधानमंत्री आवास मुहैया कराया जाएगा। जिला समाज कल्याण अधिकारी से कहा कि पेंशन योजना को गांव में शिविर लगाकर पात्र लोगों को लाभान्वित किया जायेगा। ग्रामीणों से कहा कि जो भी शासन की जनकल्याणकारी योजनाये हैं, उनका आप लोग लाभ ले।

सीडीओ अमृतपाल कौर ने कहा कि जन चैपाल में गांव की समस्याओं को सुनकर यहीं पर संबंधित विभागों से निस्तारण कराया जायेगा। जो समस्यायें मिली हैं, संबंधित विभाग निस्तारित करेगा। डीसी एनआरएलएम से कहा कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जानकारी दें। संबंधित अधिकारियों ने विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। जन चौपाल में ब्लॉक प्रमुख पहाड़ी सुशील द्विवेदी, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, जिला पंचायत राज अधिकारी इंद्र नारायण सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ सुभाष चंद्र, जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बीके शर्मा, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक अनुराग शर्मा, जिला पूर्ति अधिकारी आनंद कुमार सिंह, खंड विकास अधिकारी पहाड़ी संजय कुमार पांडेय, सहायक विकास अधिकारी पंचायत कमल सिंह, ग्राम प्रधान श्रीमती सावित्री देवी, सचिव अलकनंदा आदि ग्रामीण मौजूद रहे। संचालन डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह ने किया।

रोजगार की कमी से खिचरी गांव के लोग पलायन को मजबूर

अधिकांश घरों में ताले लटके

अखंड भारत संदेश

घरों में लटके ताले का दृश्य।

चित्रकूट। जिले के आदिवासी बहुल्य गांव खिचरी में रोजगार की कमी ने विकराल रूप ले लिया है। गांव के अधिकांश घरों में ताले लटकते हुए देखे जा सकते हैं, क्योंकि यहां के लोग रोजी-रोटी की तलाश में मजबूरी में अन्य प्रदेशों की ओर पलायन कर चुके हैं।

शुक्रवार को बताया गया कि पाठा क्षेत्र के खिचरी गांव में रोजगार के संसाधनों की भारी कमी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यहां न तो कोई बड़ी फैक्ट्री है और न ही कोई उद्योग। मजदूरी से भी घर का खर्चा चलाना मुश्किल हो रहा है, जिससे गांव के अधिकांश लोग अपने परिवार की भरण-पोषण के लिए अन्य राज्यों में काम की तलाश में चले गए हैं। पलायन के इस संकट का असर बच्चों की शिक्षा व भविष्य पर पड़ रहा है। गांव के ग्रामीण ने बताया कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा नहीं ले पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें बार-बार नए स्थानों पर जाना पड़ता है। इससे उनकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है और वे भी अशिक्षित रह जाते हैं। स्थानीय निवासियों ने यूपी सरकार से इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान देने की अपील की है। यहां रोजगार के अवसर बढ़ाये जायें व स्थानीय मजदूरों को उनके ही गांव में काम मिले, तो पलायन की समस्या को कम किया जा सकता है।

पिकअप की टक्कर से मासूम की मौत

अखंड भारत संदेश

मर्चरी में बैठक मृतक के परिजन।

चित्रकूट। कर्वी कोतवाली क्षेत्र के छपरामाफी गांव में गुरुवार की शाम एक दर्दनाक हादसा हुआ। चार वर्षीय मासूम राजू की जान चली गई। राजू के पिता राज किशोर उसे घर के पास स्थित मुख्य सड़क के किनारे शौच कराने के बाद वापस घर लौट रहे थे। तभी अचानक एक तेज रफ्तार पिकअप गाड़ी ने राजू को जोरदार टक्कर मार दी।

परिजन उसे सोनेपुर जिला अस्पताल ले गये। जहां इलाज दौरान गंभीर चोट के चलते राजू ने दम तोड़ दिया। ग्रामीणों ने बताया कि पिकअप चालक दूध की डेरी से दूध लेने आया था। उसकी लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ है। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। शुक्रवार को पोस्टमार्टम किया गया। परिजनों ने इस घटना को लेकर गहरा शोक व्यक्त किया है।

नाबालिग से दुष्कर्म आरोपी को दस साल की जेल, सात हजार का जुर्माना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देशों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा आशुतोष तिवारी व पैरोकार अशोक यादव तथा मॉनिटरिंग सेल प्रभारी प्रकाश यादव की टीम की पैरवी व अपर जिला शासकीय अधिवक्ता विशेष पॉक्सो एक्ट तेज प्रताप सिंह की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश विशेष पॉक्सो एक्ट श्रीमती रेनू मिश्रा ने नाबालिग से दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट के आरोपी विकास यादव पुत्र हरिप्रसाद बरद्वारा थाना सरधुवा को दस साल का कारावास व सात हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया है।

ज्ञात है कि एक मार्च 2023 को वादी ने सरधुवा थाने में सूचना दी कि नाबालिग पुत्री के साथ विकास यादव ने दुष्कर्म किया। सूचना पर थाना सरधुवा में मामला दर्जकर विवेचना तत्कालीन थानाध्यक्ष प्रवीण सिंह को सौंपी। आठ अप्रैल 2023 को आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दायर किया था।

अज्ञात कारणों से घर में लगी आग, प्रशासन ने मदद का दिया भरोसा

अखंड भारत संदेश

आग से तबाह सामान का दृश्य।

मऊ/चित्रकूट। वार्ड नंबर 14 एकलव्यनगर गेरुहा मऊ में पप्पू निषाद के घर में आग लग गई। आग के कारणों का अभी तक पता नहीं चला। अग्निकांड से घर में रखा सारा सामान जलकर स्वाहा हो गया है।

पप्पू निषाद ने बताया कि अग्निकांड से घर का सारा गृहस्थी, खाने-पीने व नकद पैसे जल गये हैं। घर में आग लगने से परिवार के सभी सदस्य बेहद परेशान हैं। उनके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं है। घटना की जानकारी पर मऊ उपजिलाधिकारी राकेश कुमार पाठक ने मामले को गंभीरता से लिया। तहसील परिसर से लेखपाल संगम लाल को मौके पर भेजा। लेखपाल ने मौके पर पहुंचकर पीड़ित परिवार के क्षति का आंकलन किया। लेखपाल संगम लाल ने पीड़ित परिवार को हर संभव मदद देने का भरोसा दिया। जल्द ही सरकार से मुआवजा दिया जाएगा। आग से प्रभावित परिवार की मदद को प्रशासनिक अधिकारियों ने अपनी ओर से कार्रवाई शुरू कर दी है। लेखपाल संगम लाल ने कहा कि परिवार को जल्द से जल्द राहत सामग्री और मुआवजा दिलाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

पूर्व सांसद ने शिक्षामित्रों के मानदेय बढाने की मांग

अखंड भारत संदेश

पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र।

चित्रकूट। पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र में बेसिक शिक्षा विभाग में वर्षों से सेवायें दे रहे शिक्षामित्रों के मानदेय को दस हजार से बढ़ाकर 15 हजार हजार करने का अनुरोध किया है।

शुक्रवार को पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने बताया कि प्रदेश में शिक्षकों की कमी के मद्देनजर मुख्यमंत्री ने शिक्षामित्र योजना शुरू कर शिक्षकों की नियुक्ति की थी। शिक्षामित्रों का मानदेय निर्धारित हुआ था। वर्तमान समय में शिक्षामित्रों का मानदेय बहुत कम है। शिक्षामित्रों की नियुक्ति से लेकर अभी तक 20 से 25 वर्ष की सेवायें औसत में हर एक शिक्षामित्र की हो चुकी हैं। हजारों शिक्षामित्रों ने पात्रता परीक्षा पास कर ली है। शिक्षामित्रों की सेवायें अधिकतम आयु मानक के अनुसार अब केवल 10-15 वर्ष बची है। कई हजार शिक्षामित्र प्रतिवर्ष रिटायर हो रहे हैं। सम्पूर्ण जीवन का सक्रिय कार्यकाल बेसिक विभाग के छात्रों को शिक्षा देने में लगाया है। पारिवारिक जिम्मेदारी के मद्देनजर मानदेय बढाने की मांग की है।

विक्षिप्त बालक व महिला को परिजनों के किया सुपुर्द

अखंड भारत संदेश

बालक को परिजनों के सुपुर्द करती पुलिस।

मानिकपुर/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपहृत/गुमशुदा की बरामदगी को जारी ऑपरेशन मुस्कान के तहत प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर दुर्गविजय सिंह की अगुवाई में पुलिस ने मानसिक रुप से विक्षिप्त बालक को सकुशल परिजनों के सुपुर्द किया।

शुक्रवार को इवेंट से पीआरबी 2044 को सूचना मिली कि कस्बा मानिकपुर में एक नौ वर्षीय बालक मारकुंडी रोड मानिकपुर कस्बे में घूम रहा है। जिसे पीआरबी ने थाने लाया। थाने में बालक से काफी बात करने का प्रयास किया गया, बच्चा बोल नहीं पा रहा था। मानसिक रुप से विक्षिप्त प्रतीत हो रहा था। इस बाबत बाल कल्याण समिति से वार्ता की गई। बालक को बाल गृह पहाड़ी में मेडिकल कराकर दाखिल कराया गया। पुलिस टीम ने परिजनो की जानकारी कर बालक को सकुशल परिजनों के सुपुर्द किया।इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार की अगुवाई में पुलिस ने घर से नाराज होकर मानसिक रुप से विक्षिप्त महिला नीरज देवी पत्नी जोखु प्रजापति सोनाली थाना पश्चिम शरीरा कौशाम्बी राजापुर आ गयी थी। राजापुर पुलिस ने महिला के परिजनों की जानकारी कर सकुशल सुपुर्द किया।

कमांड कंट्रोल रुम का शुभारम्भ करते अनिल प्रधान।

सदर विधायक का गुबार, प्रोटोकॉल का सवाल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। धनुष चौराहे पर कमांड कंट्रोल रूम के उद्घाटन कार्यक्रम में सपा सदर विधायक अनिल प्रधान ने पुलिस के आलाधिकारियों व भाजपा के बड़े नेताओं के साथ मंच साझाकर अपने दिल की बात रखी। शुक्रवार को पुलिस के कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे सपा सदर विधायक अनिल प्रधान ने भरे मंच से पुलिस की व्यवस्था पर सवाल खड़े करते हुए डीआईजी व एसपी से पुलिस के रवैये में सुधार लाने की बात कही। विधायक ने कहा पुलिस के बड़े अधिकारी तो ठीक हैं, थानेदार से लेकर हल्का प्रभारी विधायक से टेलीफोन में बात करने के दौरान सम्मानजनक ढंग से बात नहीं करते। विधायक ने डीआईजी अजय कुमार सिंह व एसपी अरुण कुमार सिंह से अधीनस्थ स्टॉफ को जनप्रतिनिधियों से संजीदगी से पेश आने की गुजारिश की है। धनुष चैराहे पर कमांड कंट्रोल रूम के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान डीआईजी अजय कुमार सिंह, एसपी अरुण कुमार सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, मऊ मानिकपुर विधायक अवनीश द्विवेदी, भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी आदि मौजूद रहे।

उद्यान विभाग की नर्सरी प्रभारी का अजीबो गरीब कारनामा

भ्रष्टाचार की सारी हदें पार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। 19 वर्षों से कार्यरत कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखाने वाले प्रभारी उद्यान विभाग इंद्रमणि यादव है। उन्होंने कर्मचारियों व मालियों को नर्सरी से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। गरीब मजदूर अपने हक की लड़ाई को मजबूर हैं। शुक्रवार को निकाले गये कर्मचारियों ने बताया कि वित्तीय अनिमित्ता नर्सरी के अंदर भरी पड़ी है। किसानों को मिलने वाले लाभ से किसान वंचित हैं। विभाग लापरवाह इंचार्ज के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहा। कर्मचारियों ने मांग किया कि उनकी वेतन दैनिक श्रमिक भत्ते के रूप में दी जाती है। पांच-पांच महीने से वेतन नहीं मिला है। सवाल उठाया कि नगद भुगतान इंचार्ज कहां से करते हैं। मजदूरों को न्याय दिलाने की मांग की है। विभाग के राजस्व को चूना लगाने वाले प्रभारी इंद्र कुमार यादव के खिलाफ पुख्ता सबूत हैं। जांच हो तो उद्यान विभाग की नर्सरी प्रभारी वित्तीय अनियमितताओं में लिप्त हैं।

प्रशासन बाढ़ से निपटने को पूरी तरह से मुस्तैदः प्रमोद झा

तलहटी में बोई सब्जियां पूरी तरह जलमग्न

अखंड भारत संदेश

बाढ का दृश्य।

राजापुर/चित्रकूट। यमुना नदी का जलस्तर बराबर 15 सेमी प्रति घण्टे की रफ्तार से बढ़ रहा है। यमुना की तलहटी पर बसे गांवों की बेचैनी बढ़ती जा रही है। अभी किसी गांव को कोई खतरा नहीं है। तलहटी गांवों में लेखपाल-प्रधान को सतर्क किया गया है।

शुक्रवार को यमुना नदी का जलस्तर बराबर बढ़ता जा रहा है।

शराब कारोबारी को एक हजार का जुर्माना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देशों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर दुर्गविजय सिंह व पैरोकार अजय कुमार की पैरवी से अभियोजन अधिकारी श्रीमती संगीता द्वारा की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय सिविल जज श्रीमती ईला चैधरी ने आबकारी अधिनियम के आरोपी देशराज कोल पुत्र रामखिलावन कोल गढ़वा थाना मानिकपुर को एक हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया।

राजापुर तहसील क्षेत्र के नजदीकी गांव रीठी, भंभेट, बरुआ, केवटरहा, चिल्लीराकस, कनकोटा, भदेहदू, चांदी, धुमाई, कुसेली, सरधुवा, अर्की, चिल्लीमल, बेलास आदि गांवों की बेचैनी बढ़ती जा रही है। लोगों की रातों की नींद हराम हो रही है। तलहटी पर बोई हुई सब्जियां पूरी तरह जलमग्न हो गई हैं।

बरुवा गांव के अरविंद सिंह, मुंशीलाल गुप्ता, अशोक सिंह ने बताया कि गुंता नदी में बाढ़ आने से शिवलहा पुरवा, टिकरा, सिरावल आदि गांव का संपर्क टूट गया है। यात्री नाव से आवागमन कर रहे हैं। चिल्लीमल गांव के पूर्व प्रधान करुणेश मिश्रा, सुशील मिश्रा, रामविलास यादव, रोहित सिंह आदि लोगो ने बताया कि कड़ी मेहनत से गरीब लोग यमुना की तलहटी पर कौल व बटाई पर फसले बोई थीं। जो बाढ़ के चलते पूरी तरह जलमग्न हो गई हैं। इसी से घर का गुजारा चलता था और अब भोजन के लाले पड़े हुए हैं। उप जिलाधिकारी प्रमोद झा ने बताया कि यमुना का जलस्तर बराबर बढ़ रहा है। यमुना नदी में बनाई गई आठ राहत चैकियों में खोपा, भदेहदु, सरधुवा, अर्की, बिहरवा, राजापुर, चिल्लीमल, भंभेट सक्रिय कर दी गई हैं। बरुआ गांव को अस्थाई बाढ़ चैकी बनाई गई है। लेखपालो को निर्देश दिये हैं कि बाढ़-चैकियों में पोस्टर-बैनर लगायें। हर चैकी में लेखपाल ग्राम विकास व चकबंदी के कर्मचारियों की तैनाती की गई है। तहसील राजापुर बाढ़ नियंत्रण कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। तहसील प्रशासन बाढ़ से निपटने को पूरी तरह से मुस्तैद है। केंद्रीय जल आयोग शाखा राजापुर रिपोर्ट के अनुसार 87.74 है। यमुना का जलस्तर जब 92 मीटर पर आ जाएगा, तब खतरे के निशान को पार करेगा।

नाविकों की टीम बनाकर मंदाकिनी नदी की करायें सफाईः डीएम

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने जिला गंगा समिति व जिला पर्यावरण समिति तथा जिला वृक्षारोपण समिति की बैठक में नदी में गिरने वाले टैप्ड व अनटैप्ड नालों की स्थिति के बारे में जानकारी ली। निर्देश दिये कि इसकी साफ-सफाई करायें। रामघाट किनारे बनी दुकानों में प्लास्टिक थैला न बिकने पाये। अभियान चलाकर जांचकर जुर्माना लगायें। मंदाकिनी नदी की सफाई को नाविकों की टीम बनाकर सफाई करायें।

शुक्रवार को जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने कलेक्टेड्रट सभागार में बैठक में प्रभागीय वनाधिकारी को निर्देश दिये कि मंदाकिनी नदी किनारे स्थित गांव में जन चैपाल लगाकर जागरुक करें। कहा कि जो श्रद्धालु बाहर से आते हैं, उनको गंगा सफाई के बारे में बतायें। मंदाकिनी नदी किनारे वृक्षारोपण करायें। डीएम ने वृक्षारोपण बाबत उसका जिओ ट्रैकिंग समय से कराने को कहा। बैरिकेडिंग ट्रीगार्ड व बाड बनाकर सुरक्षा करें। पौधों की निराई-गुड़ाई समय से करें। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिये कि गौशाला व चरागाह में पौधरोपण करायें। पर्यावरण बाबत मिशन लाइफ के तहत प्लास्टिक मुक्त अभियान, पार्कों की साफ-सफाई व कूड़ा कचरा के निस्तारण से संबंधित जागरूकता अभियान चलाया जाये। अपील किया कि सभी का जन सहयोग चाहिए। सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध होना चाहिए। जिले की स्थिति निजी स्वास्थ्य केंद्र से उत्पन्न जैविक चिकित्सा अपशिष्ट के प्रबंधन की मानिटरिंग हो। बैठक में सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर, एसडीएम सुश्री पूजा साहू, उपनिदेशक रानीपुर वन्य जीव विहार/प्रभागीय वनाधिकारी नरेंद्र कुमार सिंह, मुख्य चिकित्सा अधिकारी भूपेश द्विवेदी, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी सुभाष चंद्र, अधिशासी अभियंता विद्युत दीपक सिंह, उप प्रभागीय वनाधिकारी राजीव रंजन सिंह, क्षेत्रीय वनाधिकारी हरिशंकर सिंह, जिला विद्यालय निरीक्षक संतोष कुमार मिश्रा, जिला खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह, पीटीओ दीप्ति त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

सर्पदंश से युवक की मौत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर कस्बे में एक युवक की सर्पदंश से मौत हो गई। ये घटना गुरुवार रात आठ बजे हुई। बताया गया कि लवलेश (25) पुत्र बाबू राजापुर अपने खेत में धान की निराई कर रहा था। अचानक सर्प ने उसे डस लिया। लवलेश की हालत बिगड़ने पर उसे पास के खेत में मौजूद ग्रामीण ने बाइक से मंझनपुर अस्पताल पहुंचाया। अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी मौत हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। शव को कब्जे में लेकर शुक्रवार को पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। परिजनों ने बताया कि लवलेश परिवार का इकलौता बेटा था। उसकी मौत से घर में मातम पसरा हुआ है। स्थानीय पुलिस मामले की जांच कर रही है। इलाके में सर्पदंश की घटनाओं को लेकर लोगों में भय का माहौल है।

सड़क हादसे के दो आरोपियों को दो-दो हजार का जुर्माना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देशों के अनुपालन में कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह व पैरोकार प्रदीप कुमार की पैरवी व सहायक अभियोजन अधिकारी हरिओम की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम सुश्री अंजलिका प्रियदर्शिनी ने सडक हादसे के आरोपी रामप्रिय शुक्ला पुत्र देशराज शुक्ला गाहुर थाना बरगढ़ को दो हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया है। इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक रैपुरा श्याम प्रताप पटेल व पैरोकार रविप्रकाश की पैरवी व सहायक अभियोजन अधिकारी हरिओम की प्रभावी बहस व न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम सुश्री अंजलिका प्रियदर्शिनी ने सडक हादसे के आरोपी लवलेश कुमार पुत्र मेवालाल प्रजापति पुरा लालता रोड थाना मऊ को दो हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया है।

रूस और जापान में 5 साल बाद तनातनी, 2019 के बाद पहली बार विवादित क्षेत्र में पहुंचे पुतिन के जेट

टोक्योः जापान और रूस के बीच आसमान में तनातनी देखने को मिली है। ये तब हुआ जब रूसी जेट ने जापान के हवाई क्षेत्र के पास उड़ान भरी, इसके बाद टोक्यो ने भी अपने लड़ाकू विमानों को तैनात कर दिया। जापान के रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया है कि गुरुवार सुबह से दोपहर तक रूसी टीयू-142 विमान ने उनके देश और दक्षिण कोरिया के बीच समुद्र से दक्षिणी ओकिनावा क्षेत्र में उड़ान भरी। रूसी जेट अपनी उड़ान के बाद होक्काइडो के उत्तरी द्वीप की तरफ चले गए। ये बीते पांच साल में पहली बार है, जब रूसी जेट द्वीपसमूह के आसपास उड़ान भरते देखे गए। ऐसे में जापान भी इससे तुरंत ही हरकत में आ गया।

फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, जापान के रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी ने अपने बयान में कहा कि रूसी विमानों ने जापानी हवाई क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया। इन विमानों ने जापान और रूस के बीच विवाद वाले क्षेत्र के ऊपर से उड़ान भरी। जवाब में हमने इमरजेंसी बेसिस पर एयर सेल्फ-डिफेंस फोर्स के लड़ाकू जेट तैनात कर दिए। अधिकारी ने कहा कि आखिरी बार रूसी सैन्य विमानों ने 2019 में जापान का चक्कर लगाया था लेकिन उस घटना में बमवर्षक शामिल थे जो देश के हवाई क्षेत्र में प्रवेश कर गए थे। इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ।

रूस और चीन कर रहे हैं युद्धाभ्यास

रूस और चीन इस समय युद्धाभ्यास कर रहे हैं। इस सप्ताह की शुरूआत में रूसी और चीनी युद्धपोतों ने जापान सागर में संयुक्त अभ्यास शुरू किया है। यह अभ्यास एक प्रमुख नौसैनिक अभ्यास का हिस्सा है जिसे रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने तीन दशकों में अपनी तरह का सबसे बड़ा अभ्यास बताया है। रूस और चीन ने हाल के वर्षों में सैन्य सहयोग बढ़ाया है। दोनों ही देश वैश्विक मामलों में अमेरिका के प्रभुत्व के खिलाफ हैं, जो दोनों देशों को करीब लाता है।

जापानी रक्षा मंत्रालय के अनुसार, बीते महीने अगस्त के अंत में जापान ने भी लड़ाकू विमानों को तैनात किया था, जब एक चीनी सैन्य विमान ने उसके हवाई क्षेत्र का उल्लंघन किया था। उस समय -9 सर्विलांस एयरक्राफ्ट ने जापानी हवाई क्षेत्र में प्रवेश किया था। हालांकि ये सिर्फ दो मिनट के लिए था लेकिन ये पहली बार था जब कोई चीनी सैन्य विमान जापानी हवाई क्षेत्र में घुसा था।

यूक्रेन में युद्ध शुरू होने के बाद जापान और रूस के संबंध और ज्यादा खराब हुए हैं।

चीन के 'वुल्फ वॉरियर' से कैसे निपट रहा भारत, ड्रैगन ने दिया धोखा तो विदेश में बढ़ी हिंदुस्तान की धाक

बीजिंग/नई दिल्लीः शी जिनपिंग के राज में चीन ने दुनिया में अपना दबदबा बढ़ाने के लिए वुल्फ वॉरियर डिप्लोमेसी को बढ़ावा दिया। इन वुल्फ वॉरियर ने बहुत ही आक्रामक तरीके से दुनिया में चीन का पक्ष रखना और विभिन्न देशों को धमकाना शुरू कर दिया। चीन के सबसे कुख्यात वुल्फ वॉरियर झाओ लिजनि ने मार्च 2020 में तो इस दावे को हवा दे दी कि कोरोना वायरस को वुहान में अमेरिकी सेना चीन में मिलिट्री वर्ल्ड गेम्स के दौरान अक्टूबर 2019 में लेकर आई थी। चीन के इस वुल्फ वॉरियर कूटनीति की दुनियाभर में कड़ी आलोचना हुई। विशेषज्ञों के मुताबिक कोरोना काल में चीन की भारी किरकिरी के बीच भारत को बड़ा मौका मिल गया और उसने अपनी विदेश नीति में बड़ा बदलाव किया। भारत ने इसे वैश्विक मंचों पर अहम भूमिका निभाने के मौके के रूप में इस्तेमाल किया। इससे भारत की आर्थिक ताकत में बड़ा इजाफा हुआ। अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ और गोरखपुर विश्वविद्यालय में सहायक प्रफेसर महेंद्र सिंह का कहना है कि विदेश नीति का इस्तेमाल किसी भी देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है जिसका प्रभावी इस्तेमाल आर्थिक विकास के लिए किया जाता है। डॉक्टर महेंद्र

सिंह ने कहा, 'नीति नमिार्ता तेजी से विदेश नीति का इस्तेमाल आर्थिक विकास को बढ़ाने, मजबूत कार्यबल, सैन्य क्षमताओं और परमाणु ताकत के दर्जे को बढ़ाने के एक टूल के रूप में कर रहे हैं। भारत में इस नीति को वसुधैव कुटुंबकम की नीति के आधार पर बनाया गया है लेकिन यह पूरी तरह से देश के राष्ट्रीय हित को आगे बढ़ाने से जुड़ी हुई है।'

भारतीय विश नीति में क्या आए बदलाव

डॉक्टर महेंद्र सिंह ने कहा, 'भारत की विदेश नीति में जो बड़ा बदलाव आया है, उसमें यह है कि अब वह वैश्विक मंच पर ज्यादा सक्रिय हो गई है। भारतीय नीति निमार्ता अब निष्क्रिय विदेश नीति पर भरोसा नहीं कर रहे हैं। वे सक्रिय रूप से क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर शामिल हो रहे हैं और भारत के राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत की पड़ोस पहले की नीति में यह बदलाव दिखाई दे रहा है जिसमें पश्चिमी देशों के साथ अच्छे रिश्ते रखते हुए क्षेत्रीय सहयोग पर जोर दिया जा रहा है। साथ ही आपसी रिश्तों को मजबूत किया जा रहा है।'

महेंद्र सिंह ने कहा कि चीन की वैश्विक प्रतिष्ठा में गिरावट खासकर कोरोना काल और आक्रामक नीतियों के कारण, के बाद भारत को मौका मिल गया कि वह वैश्विक मंच पर ज्यादा अहम भूमिका निभाए। भारत आर्थिक क्षेत्र में व्यवहारिक नीतियां अपना रहा है और फ्री ट्रेड समझौते कर रहा है। यह भारत की पहले की नीतियों में बहुत बड़ा बदलाव है।

आर्थिक विकास पर फोकस करने से भारत खुद को विश्व के सबसे बड़े और तेजी से बढ़ते बाजार के रूप में पेश कर सका है। भारत ने अपनी विदेश नीति में कई देशों के साथ गठजोड़ पर फोकस किया है। पश्चिमी देशों के साथ रिश्ते मजबूत करने के बाद भी भारत ने रणनीतिक स्वायत्तता को बरकरार रखा है।

किसी भी पावर ब्लॉक से खुद को दूर रखा है। इससे भारत अमेरिका और रूस के बीच आसानी से संतुलन बना पा रहा है।

दुनियाभर के शातिर अपराधियों से कर रहा संपर्क...

तेहरानः ईरान की इजरायल और अमेरिका से तनातनी जगजाहिर है। हालिया महीनों में तो कई दफा ईरान और इजरायल के सीधे युद्ध में जाने का अंदेशा पैदा होता रहा है। इस सबके बीच दावा किया गया है कि ईरान विरोधियों को निपटाने के लिए छद्म युद्ध का तरीका अपना रहा है। ईरानी सरकार अपने विरोधियों खासतौर से पश्चिम के देशों के लिए एक खतरनाक प्लान पर काम कर रहा है। इन देशों में अपने दुश्मनों को निपटाने के लिए वह गुप्त रूप से आपराधिक गिरोहों और गुंडों का गैंग बनाया है। द सन ने अपनी रिपोर्ट में ये दावा किया है। रिपोर्ट कहती है कि अंडरवर्ल्ड से जुड़े कुख्यात समूहों के

हत्यारों को ईरानी सरकार यूरोप और अमेरिका के अंदर हमले और अपहरण करने के कॉन्ट्रैक्ट दे रही है। ईरान के इस सीक्रेट वॉर में हेल्स एंजल्स बाइकर गिरोह, रूसी गिरोह 'चर इन लॉ' और दुनिया के दूसरे आपराधिक गिरोहों के हत्यारे शामिल हैं। वॉशिंगटन पोस्ट ने अपनी एक रिपोर्ट में पाया कि एक पूर्व ईरानी सैन्य अधिकारी ब्रुकलिन में एक ईरानी अमेरिकी पत्रकार, स्विट्जरलैंड में एक महिला अधिकार कार्यकर्ता, जर्मनी में एलजीबीटी कार्यकर्ता और लंदन में ईरान इंटरनेशनल के पत्रकारों के खिलाफ साजिश रच रहा है। इतना ही नहीं ईरानी शासन की आलोचना करने वाली राजनीतिक हस्तियों को भी निशाना बनाया जा रहा है।

अपराधियों के साथ संबंध मजबूत कर रहा ईरान!

रिपोर्ट कहती है कि हाल के वर्षों में ईरान ने पश्चिमी धरती पर अपनी साजिशों को अंजाम देने के लिए अपराधियों के साथ अपने संबंधों को गहरा किया है। यूरोपीय संसद के पूर्व उपाध्यक्ष डॉक्टर एलेजो विडाल-क्वाड्रास को पिछले नवंबर में स्पेन के मैड्रिड में मोटरसाइकिल सवार ने गोली मार दी थी। उन्होंने तेहरान पर उनकी हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया था। पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन ने भी दावा किया है।

भारत, जापान और जर्मनी को मिले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता

न्यूयॉर्कः संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की भारत की ओर से लगातार की जा रही मांग पर अब अमेरिका का बयान आया है। अमेरिका ने सुरक्षा परिषद में सुधार के संबंध में नए प्रस्ताव पेश किए और भारत, जापान तथा जर्मनी को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता देने के दीर्घकालीन समर्थन को दोहराया। ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र महासभा के उच्च-स्तरीय कार्यक्रमों के लिए वैश्विक नेताओं के न्यूयॉर्क में इकट्ठा होने से कुछ ही दिन पहले, संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने गुरुवार को कहा कि अमेरिका अफ्रीकी देशों को सुरक्षा परिषद में अस्थायी सदस्यता देने के अलावा दो अफ्रीकी देशों को स्थायी सदस्य बनाने का भी समर्थन करता है। लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने विदेश संबंध परिषद के कार्यक्रम में 'बहुपक्षवाद और संयुक्त राष्ट्र सुधार का भविष्य' विषय पर चर्चा के दौरान यह भी घोषणा की कि अमेरिका छोटे द्वीपीय विकासशील देशों के लिए सुरक्षा परिषद में एक नयी सीट बनाने का समर्थन करता है।

ट्रंप का ऐलान, हैरिस के साथ अब और प्रेसिडेंशियल डिबेट नहीं

वाशिंगटन। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की है कि वह उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के साथ अब किसी अन्य प्रेसिडेंशियल डिबेट में हिस्सा नहीं लेंगे।

एक सोशल मीडिया पोस्ट में ट्रंप ने गुरुवार को दावा किया कि उन्होंने मंगलवार रात को फिलाडेल्फिया में एबीसी न्यूज द्वारा आयोजित बहस जीती है।

रिपब्लिकन उम्मीदवार ट्रंप ने हैरिस पर आरोप लगाया कि उन्होंने फॉक्स न्यूज, एनबीसी न्यूज और सीबीएस न्यूज की तरफ से बहस के निमंत्रण को

स्वीकार नहीं किया।

वहीं डेमोक्रेटिक उम्मीदवार हैरिस ने गुरुवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि "मतदाताओं के प्रति हमारा यह दायित्व है कि हम एक और बहस करें।"

हैरिस की प्रचार टीम ने भी पहली बहस में जीत का दावा किया है। टीम की ओर से पहले जारी एक बयान के अनुसार, "उपराष्ट्रपति हैरिस ने अमेरिकी लोगों के लिए महत्वपूर्ण हर मुद्दे को लेकर मंच पर अपनी पकड़ बनाए रखी।"

शिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, बहस देखने वालों के सीएनएन सर्वे से पता चला है कि 63 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत थे कि हैरिस ने फिलाडेल्फिया बहस में बेहतर प्रदर्शन किया।

फॉक्स न्यूज के मुताबिक, पैनल में शामिल 12 मतदाताओं ने सोचा कि हैरिस ने बहस जीती, जबकि पांच का मानना था कि ट्रंप जीते। कई लोगों ने कहा कि ट्रंप को नहीं पता कि राष्ट्रपति पद की दौड़ में अपने नए प्रतिद्वंद्वी पर कैसे हमला किया जाए।

न्यूयॉर्क टाइम्स के एक लेख में कहा गया कि बहस के बाद, कई डेमोक्रेटिक रणनीतिकारों और अधिकारियों ने हैरिस के प्रदर्शन की तारीफ की, जबकि रिपब्लिकन ने मॉडरेटरों के "प्रश्नों के लहजे" के बारे में शिकायत की और ट्रम्प द्वारा 'हमले के अवसर' खोने को स्वीकार किया।

प्रमुख क्षेत्रों में सुधार के लिए बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने पेश की योजना

ढाका। बांग्लादेशी अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने पदभार संभालने के बाद से देश में कानून की रक्षा और संकटग्रस्त अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए कार्रवाई की है।

सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश में सुधार के अपने प्रयासों के तहत, यूनुस ने बुधवार को घोषणा की कि सरकार ने न्यायपालिका, चुनाव प्रणाली, प्रशासन, पुलिस, भ्रष्टाचार विरोधी आयोग और संविधान में सुधार के लिए छह आयोग बनाने का फैसला किया है।

यूनुस ने बुधवार रात को राष्ट्र के नाम संबोधन पर एक टेलीविजन भाषण में यह घोषणा की, जो आठ अगस्त से अंतरिम सरकार के गठन के पहले महीने को चिह्नित करता है, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना पांच अगस्त को भारत भाग गईं। इन आयोगों के द्वारा एक अक्टूबर को अपना काम शुरू करने और अगले तीन महीनों के भीतर समाप्त होने की उम्मीद है।

यूनुस ने कहा कि चुनाव आयोग के साथ-साथ पुलिस प्रशासन, लोक प्रशासन, न्यायपालिका और भ्रष्टाचार विरोधी आयोग में सुधार करना अगले चुनाव को स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से कराने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा, "मेरा मानना है कि ये सुधार लोगों के स्वामित्व वाली, जवाबदेह और कल्याण-उन्मुख राज्य प्रणाली की स्थापना में भी योगदान देंगे।"

सभी क्षेत्रों के लोगों से अपने-अपने क्षेत्रों में सुधार लाने का आह्वान करते हुए मुख्य सलाहकार ने कहा, "यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि अपनी दुनिया में सुधार लाएं। किसी देश का सुधार केवल सरकार का सुधार नहीं हो सकता।"

यूनुस ने कहा कि आयोगों की रिपोर्ट के आधार पर अंतरिम सरकार अगले चरण में प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ चर्चा आयोजित करेगी। अंतिम चरण में तीन से सात दिनों तक छात्र संगठनों, नागरिक समाज, राजनीतिक दलों और सरकार के प्रतिनिधियों के साथ व्यापक परामर्श किया जाएगा।

उन्होंने आगे कहा कि सरकार देश के लिए एक लोकतांत्रिक ढांचा बनाने के लिए दृढ़ संकल्प है। उनकी सरकार पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध चाहती है और संबंध निष्पक्षता और समानता पर आधारित होने चाहिए।

इससे पहले बुधवार को बांग्लादेश के केंद्रीय बैंक, बांग्लादेश बैंक ने बैंकिंग क्षेत्र की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए छह सदस्यीय टास्क फोर्स के गठन के संबंध में एक अधिसूचना जारी की।

जिन्ना हमारे भी राष्ट्रपिता...

ढाकाः बांग्लादेश में अगस्त में हुए सत्ता परिवर्तन के बाद लगातार कई बदलाव देखे रहे हैं। शेख हसीना के पीएम पद से हटने और मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनने के बाद भारत विरोध और पाकिस्तान प्रेम दिखाने वाले कार्यक्रम अचानक बढ़ गए हैं। इसी कड़ी में अब बांग्लादेश में पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम हुआ है। साल 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्र देश बनने के बाद ये पहली बार है, जब बांग्लादेश में जिन्ना को याद करते हुए इस तरह का बड़ा आयोजन हुआ है। ढाका के नेशनल प्रेस क्लब में 11 सितंबर को जिन्ना की 76वीं पुण्यतिथि के कार्यक्रम में जमकर उनकी प्रशंसा की गई।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में बाढ़ के कारण 230,000 बच्चे प्रभावित, नहीं जा पा रहे स्कूल : यूनिसेफ

कराची। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने पाकिस्तान में छात्रों पर बाढ़ के विनाशकारी प्रभाव पर गहरी चिंता व्यक्त की है और कहा है कि अकेले सि?ंध प्रांत में स्कूल बंद होने से 230,000 से अधिक बच्चे प्रभावित हुए हैं।

बाढ़ के कारण 1,300 से अधिक स्कूल क्षतिग्रस्त हो गए हैं, तथा 228 पूरी तरह नष्ट हो गए हैं। इससे लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित हो गए हैं।

सिंध के शिक्षा विभाग के ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि बाढ़ के पानी के कारण 450 से

अधिक स्कूल बंद हैं। इससे बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव पड़ रहा है।

बाढ़ के कारण 10 आपदा प्रभावित जिलों में 140,000 बच्चे और परिवार विस्थापित हो गए हैं। इससे संकट और बढ़ गया है।

पाकिस्तान में यूनिसेफ के प्रतिनिधि अब्दुल्ला फादिल ने बाढ़ के कारण बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा, "गर्मी से लेकर बाढ़ तक, जलवायु परिवर्तन के कारण बच्चे बार-बार पढ़ाई से वंचित हो रहे हैं। पाकिस्तान में पहले से ही 26.2 मिलियन बच्चे शि?क्षा से वंचि?त हैं और अब यह ताजा संकट असहनशील है।"

बाढ़ ने पूरे प्रांत में 76 लोगों की जान ले ली है, इनमें से आधे बच्चे हैं।

सुनीता विलियम्स को स्टारलाइनर से वापस न लाना था सही फैसला

वॉशिंगटनः अंतरिक्ष में फंसे बोइंग स्टारलाइनर कैप्सूल ने पिछले सप्ताह पृथ्वी पर वापसी की है। तकनीकी खराबियों के कारण इसमें देरी हुई है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से अलग होने के छह घंटे बाद अंतरिक्ष यान न्यू मैक्सिको के व्हाइट सैंड्स मिसाइल रेंज में पैराशूट के जरिए उतरा। जब यह उतर रहा था तब अंधेरा था और रेगिस्तान में यह ऑटोपायलट मोड पर उतरा। जून में यह स्पेस में गया था, लेकिन थ्रस्टर में खराबी के कारण वहीं फंस गया। वापसी से पहले कई महीनों तक ड्रामा चलता रहा। बोइंग स्टारलाइनर के जरिए अंतरिक्ष यात्री बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर ले जाया गया था। यह स्टारलाइनर का पहला मानव मिशन था। हालांकि दोनों अंतरिक्ष यात्री इसके जरिए वापस नहीं लौटे हैं। स्टारलाइनर में खराबी के कारण इसके जरिए अंतरिक्ष यात्रियों की वापसी जोखिम भरी थी। नासा के वैज्ञानिकों ने इसकी जगह उन्हें स्पेसएक्स के क्रू ड्रैगन के जरिए वापस पृथ्वी पर लाने का विकल्प चुना है। इस निर्णय का मतलब है कि स्पेस स्टेशन पर अंतरिक्ष यात्री फरवरी तक रहेंगे। तकनीकी खराबियों के कारण नासा के कॉमर्शियल क्रू प्रोग्राम के मैनेजर स्टीव स्टिच ने बिना चालक दल के कैप्सूल के वापसी की प्रशंसा की।

पाकिस्तान : पुलिसकर्मी ड्यूटी के दौरान नहीं कर पाएंगे सोशल मीडिया का इस्तेमाल, मरियम सरकार का फैसला

इस्लामाबाद। पंजाब प्रांत की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने ड्यूटी के दौरान पुलिस अधिकारियों और कर्मचारि?यों द्वारा सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है। इस कदम का उद्देश्य पुलिस की पेशेवर छवि को बनाए रखना और पुलिस कर्मियों द्वारा सोशल मीडिया के गलत इस्तेमाल को रोकना है।

एआरवाई न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, यह फैसला पंजाब पुलिस के अधिकारियों और महिला कर्मियों के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद लिया गया। पंजाब पुलिस के महानिरीक्षक (आईजी) ने अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए सोशल मीडिया उपयोग नीति जारी की है।

नई नीति में पुलिस कर्मियों को वर्दी में रहते हुए सोशल मीडिया पर वीडियो अपलोड करने, व्यक्तिगत, राजनीतिक या धार्मिक विचार शेयर करने पर रोक लगाई गई है।

जिला पुलिस अधिकारी (डीपीओ) या यूनिट प्रमुख की अनुमति के बिना किसी को भी सोशल मीडिया के इस्तेमाल की अनुमति नहीं दी जाएगी। पुलिस से संबंधित आधिकारिक गतिविधियों को केवल डीपीओ या यूनिट प्रमुख द्वारा मैनेज किए जा रहे आधिकारिक चैनलों के माध्यम से ही शेयर किया जाएगा। निजी व्यक्तियों को भी सोशल मीडिया गतिविधियों के लिए पुलिस वाहनों या दफ्तरों का उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी।

राज्य सरकार के फैसले के तहत पंजाब के क्षेत्रीय पुलिस अधिकारियों (आरपीओ) और यूनिट प्रमुखों को सोशल मीडिया नीति को लागू करने के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार बनाया गया है।

पंजाब सरकार ने आईजी को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि नई नीति का सख्ती से पालन हो और किसी भी तरह का उल्लंघन होने पर विभागीय कार्रवाई की जाए।